हिंदी

बालभारती

आठवीं कक्षा

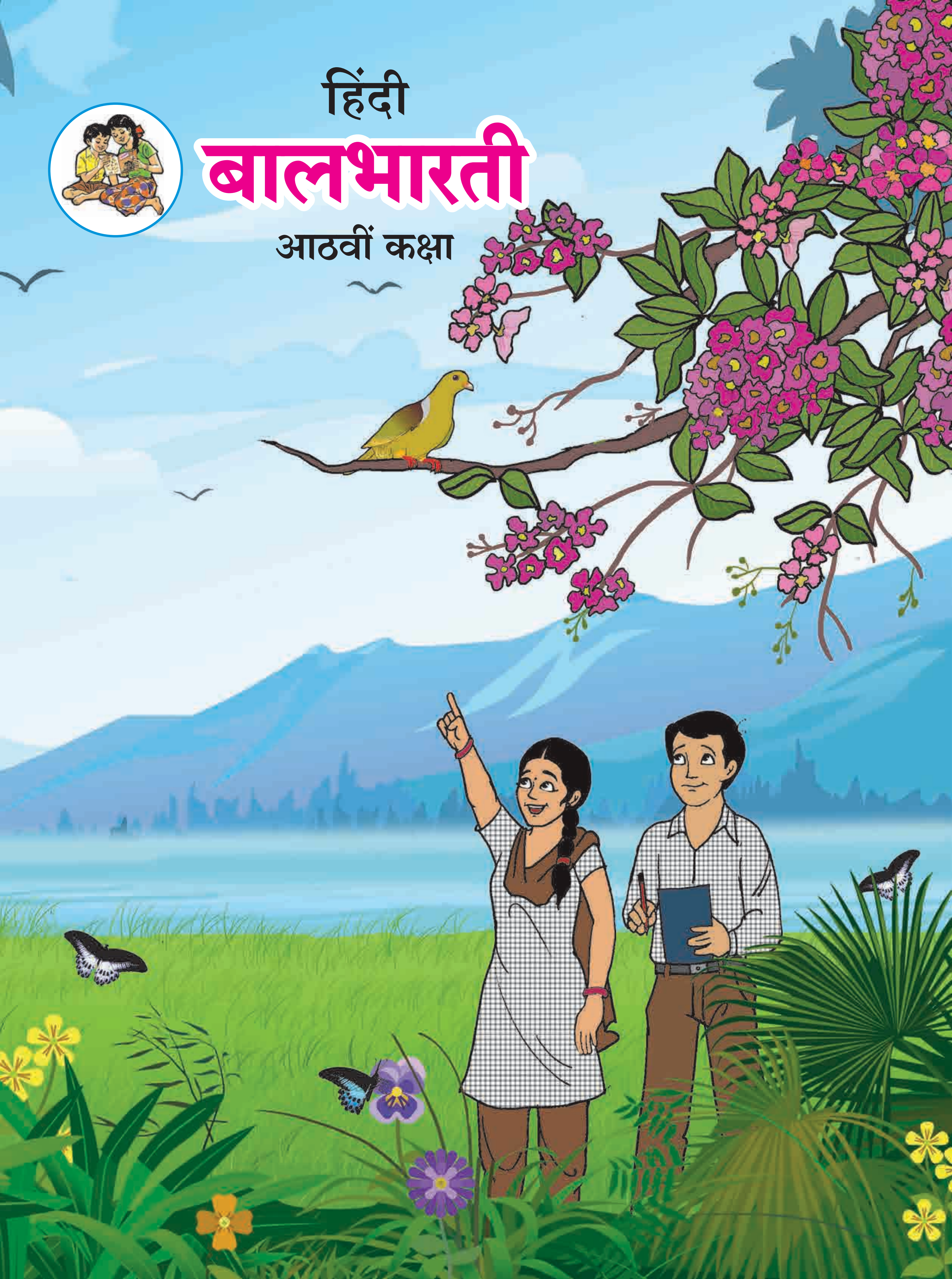

शासन निर्णय क्रमांक : अभ्यास-२११६/(प्र.क्र.४३/१६) एसडी-४ दिनांक २५.४.२०१६ के अनुसार समन्वय समिति का गठन किया गया। दि. २९.१२.२०१७ को हुई इस समिति की बैठक में यह पाठ्यपुस्तक निर्धारित करने हेतु मान्यता प्रदान की गई।

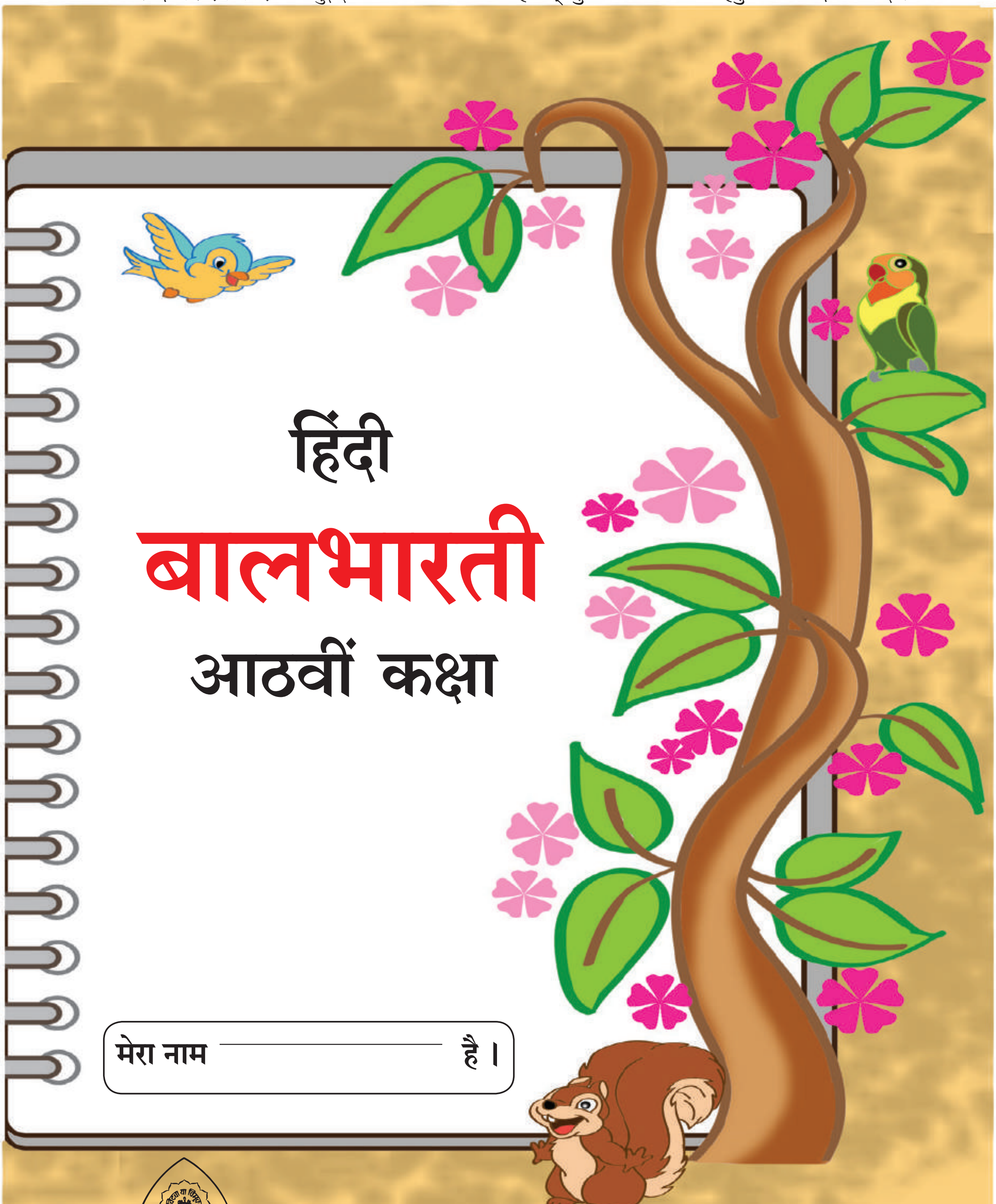

हिंदी
बालभारती
आठवीं कक्षा

मेरा नाम ______________ है।

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे

HDDRHD

आपके स्मार्टफोन में 'DIKSHA App' द्वारा, पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर Q.R.Code के माध्यम से डिजिटल पाठ्यपुस्तक एवं प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित Q.R.Code में अध्ययन-अध्यापन के लिए पाठ से संबंधित उपयुक्त दृक्-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी।

प्रथमावृत्ति : २०१८ © महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे - ४११००४
इस पुस्तक का सर्वाधिकार महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के अधीन सुरक्षित है। इस पुस्तक का कोई भी भाग महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ के संचालक की लिखित अनुमति के बिना प्रकाशित नहीं किया जा सकता।

हिंदी भाषा समिति

डॉ.हेमचंद्र वैद्य - अध्यक्ष
डॉ.छाया पाटील - सदस्य
प्रा.मैनोद्दीन मुल्ला - सदस्य
डॉ.दयानंद तिवारी - सदस्य
श्री रामहित यादव - सदस्य
श्री संतोष धोत्रे - सदस्य
डॉ.सुनिल कुलकर्णी - सदस्य
श्रीमती सीमा कांबळे - सदस्य
डॉ.अलका पोतदार - सदस्य - सचिव

हिंदी भाषा अभ्यासगट

श्री संजय भारद्वाज
डॉ. वर्षा पुनवटकर
सौ. वृंदा कुलकर्णी
सौ. रंजना पिंगळे
डॉ. प्रमोद शुक्ल
श्रीमती पूर्णिमा पांडेय
डॉ. शुभदा मोघे
श्री धन्यकुमार बिराजदार
श्रीमती माया कोथळीकर
श्रीमती शारदा बियानी
डॉ. रत्ना चौधरी
श्री सुमंत दळवी
श्रीमती रजनी म्हैसाळकर
डॉ. आशा वी. मिश्रा
श्रीमती मीना एस. अग्रवाल
श्रीमती भारती श्रीवास्तव
डॉ. शैला ललवाणी
डॉ. शोभा बेलखोडे
डॉ. बंडोपंत पाटील
श्री रामदास काटे
श्री सुधाकर गावंडे
श्रीमती गीता जोशी
श्रीमती अर्चना भुस्कुटे
डॉ. रीता सिंह
सौ. शशिकला सरगर
श्री एन. आर. जेवे
श्रीमती निशा बाहेकर

प्रकाशक :
श्री विवेक उत्तम गोसावी
नियंत्रक
पाठ्यपुस्तक निर्मिती मंडळ
प्रभादेवी, मुंबई-२५

निमंत्रित सदस्य

श्री ता.का सूर्यवंशी
श्रीमती मंजुला त्रिपाठी मिश्रा

संयोजन :
डॉ.अलका पोतदार, विशेषाधिकारी हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
सौ. संध्या विनय उपासनी, विषय सहायक हिंदी भाषा, पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे

मुखपृष्ठ : श्री विवेकानंद पाटील
चित्रांकन : मयूरा डफळ, श्री राजेश लवळेकर

निर्मिति :
श्री सच्चितानंद आफळे, मुख्य निर्मिति अधिकारी
श्री सचिन मेहता, निर्मिति अधिकारी
श्री नितीन वाणी, सहायक निर्मिति अधिकारी

अक्षरांकन : भाषा विभाग,पाठ्यपुस्तक मंडळ, पुणे
कागज : ७० जीएसएम, क्रीमवोव
मुद्रणादेश : N/PB/2018-19/25,000
मुद्रक : HITECH GRAPHICS, PANVEL

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक **संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य** बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**
विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की **स्वतंत्रता,**
प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,
तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) **को एतद् द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं ।**

राष्ट्रगीत

जनगणमन - अधिनायक जय हे
भारत - भाग्यविधाता ।
पंजाब, सिंधु, गुजरात, मराठा,
द्राविड, उत्कल, बंग,
विंध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा,
उच्छल जलधितरंग,
तव शुभ नामे जागे, तव शुभ आशिस मागे,
गाहे तव जयगाथा,
जनगण मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्यविधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे ।।

प्रतिज्ञा

भारत मेरा देश है । सभी भारतीय मेरे भाई-बहन हैं ।

मुझे अपने देश से प्यार है । अपने देश की समृद्ध तथा विविधताओं से विभूषित परंपराओं पर मुझे गर्व है ।

मैं हमेशा प्रयत्न करूँगा/करूँगी कि उन परंपराओं का सफल अनुयायी बनने की क्षमता मुझे प्राप्त हो ।

मैं अपने माता-पिता, गुरुजनों और बड़ों का सम्मान करूँगा/करूँगी और हर एक से सौजन्यपूर्ण व्यवहार करूँगा/करूँगी ।

मैं प्रतिज्ञा करता/करती हूँ कि मैं अपने देश और अपने देशवासियों के प्रति निष्ठा रखूँगा/रखूँगी । उनकी भलाई और समृद्धि में ही मेरा सुख निहित है ।

प्रस्तावना

प्रिय विद्‍यार्थियो,

तुम सब पहली से सातवीं कक्षा तक की हिंदी बालभारती पाठ्‌यपुस्तक से अच्छी तरह से परिचित ही हो और अब आठवीं हिंदी बालभारती पढ़ने के लिए उत्सुक होंगे । रंग-बिरंगी, अति आकर्षक यह पुस्तक तुम्हारे हाथों में सौपते हुए हमें अत्यंत खुशी हो रही है ।

हमें ज्ञात है कि तुम्हें कविता, गीत, गजल सुनना-पढ़ना अति प्रिय है । मनोरंजक कहानियों के संसार में विचरण करना अच्छा लगता है । तुम्हारी इन भावनाओं का पाठ्‌यपुस्तक में सजगता से ध्यान रखा गया है । इसीलिए बालभारती की इस पुस्तक में कविता, गीत, नवगीत, गजल, पद, दोहे, नई कविता, वैविध्यपूर्ण कहानियाँ, निबंध, हास्य-व्यंग्य एकांकी, संस्मरण, यात्रावर्णन, साक्षात्कार, आलेख, भाषण आदि साहित्यिक विधाओं का समावेश किया गया है । ये सभी विधाएँ मनोरंजक होने के साथ-साथ ज्ञानार्जन, भाषाई कौशलों-क्षमताओं के विकास, राष्ट्रीय भावना को सुदृढ़ करने एवं चरित्र निर्माण में भी सहायक होंगी । इन रचनाओं के चयन के समय आयु, रुचि, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक स्तर का सजगता से ध्यान रखा गया है ।

अंतरजाल एवं डिजिटल दुनिया के प्रभाव, नई शैक्षिक सोच, वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समक्ष रखकर 'श्रवणीय', 'संभाषणीय' 'पठनीय', 'लेखनीय', 'मैंने समझा', 'कृतियाँ पूर्ण करो', 'भाषा बिंदु' आदि के माध्यम से पाठ्‌यक्रम को पाठ्‌यपुस्तक में प्रस्तुत किया गया है । तुम्हारी कल्पनाशक्ति, सृजनशीलता को ध्यान में रखते हुए 'स्वयं अध्ययन', 'उपयोजित लेखन', 'मौलिक सृजन', 'कल्पना पल्लवन'आदि कृतियों को अधिक व्यापक एवं रोचक बनाया गया है । इनका सतत प्रयोग-उपयोग एवं अभ्यास अपेक्षित है । मार्गदर्शक का सहयोग लक्ष्य तक पहुँचने के मार्ग को सहज और सुगम बना देता है । अतः अध्ययन अनुभव की पूर्ति हेतु अभिभावकों, शिक्षकों का सहयोग और मार्गदर्शन तुम्हारे लिए निश्चित ही सहायक सिद्‌ध होंगे । तुम्हारी हिंदी भाषा और ज्ञान में अभिवृद्‌धि के लिए 'ऐप' एवं 'क्यू.आर.कोड,' के माध्यम से अतिरिक्त दृक-श्राव्य सामग्री उपलब्ध कराई जाएगी । अध्ययन अनुभव हेतु इनका निश्चित ही उपयोग हो सकेगा ।

आशा एवं पूर्ण विश्वास है कि तुम सब पाठ्‌यपुस्तक का समुचित उपयोग करते हुए हिंदी विषय के प्रति विशेष रुचि दिखाते हुए आत्मीयता के साथ इसका स्वागत करोगे ।

(डॉ. सुनिल मगर)
संचालक
महाराष्ट्र राज्य पाठ्‌यपुस्तक निर्मिती व
अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे-०४

पुणे
दिनांक : १८ अप्रैल २०१८, अक्षयतृतीया
भारतीय सौर : २९ चैत्र १९४०

शिक्षकों के लिए मार्गदर्शक बातें ....

अध्ययन अनुभव प्रक्रिया प्रारंभ करने से पहले पाठ्‍यपुस्तक में दी गई सूचनाओं, दिशा निर्देशों को भली–भाँति आत्मसात कर लें । भाषाई कौशल के विकास के लिए पाठ्‍यवस्तु 'श्रवणीय', 'संभाषणीय', 'पठनीय', एवं 'लेखनीय' में दी गई है । पाठों पर आधारित कृतियाँ 'सूचना के अनुसार कृतियाँ करो' में आई हैं । पद्‍य में 'कल्पना पल्लवन', गद्‍य में 'मौलिक सृजन' के अतिरिक्त 'स्वयं अध्ययन' एवं 'उपयोजित लेखन' विद्‍यार्थियों के भाव/विचार विश्व, कल्पना लोक एवं रचनात्मकता के विकास तथा स्वयंस्फूर्त लेखन हेतु दिए गए हैं । 'मैंने समझा' में विद्‍यार्थी ने पाठ पढ़ने के बाद क्या आकलन किया है, इसे लिखने के लिए विद्‍यार्थियों को प्रोत्साहित करना है ।

'भाषा बिंदु' व्याकरणिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है । उपरोक्त सभी कृतियों का सतत अभ्यास कराना अपेक्षित है । व्याकरण पारंपरिक रूप से नहीं पढ़ाना है । सीधे परिभाषा न बताकर कृतियों और उदाहरणों द्‍वारा पाठ्‍यवस्तु की संकल्पना तक विद्‍यार्थियों को पहुँचाने का उत्तरदायित्व आपके सबल कंधों पर है । 'पूरक पठन' सामग्री कहीं न कहीं पाठ को ही पोषित करते हुए विद्‍यार्थियों की रुचि एवं पठन संस्कृति को बढ़ावा देती है । अतः पूरक पठन का वाचन आवश्यक रूप से करवाएँ ।

आवश्यकतानुसार पाठ्‍येतर कृतियों, भाषिक खेलों, संदर्भों, प्रसंगों का समावेश भी अपेक्षित है । पाठों के माध्यम से नैतिक, सामाजिक, संवैधानिक मूल्यों, जीवन कौशलों, केंद्रीय तत्त्वों के विकास के अवसर भी विद्‍यार्थियों को प्रदान करें । क्षमता विधान एवं पाठ्‍यपुस्तक में अंतर्निहित सभी क्षमताओं/कौशलों, संदर्भों एवं स्वाध्यायों का सतत मूल्यमापन अपेक्षित है ।

पूर्ण विश्वास है कि आप सभी इस पुस्तक का सहर्ष स्वागत करेंगे ।

हिंदी अध्ययन निष्पत्ति आठवीं कक्षा

यह अपेक्षा है कि आठवीं कक्षा के अंत तक विद्यार्थियों में भाषा विषयक निम्नलिखित अध्ययन निष्पत्ति विकसित हों ।

विद्यार्थी –

- विविध विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं का, पाठ्यसामग्री और साहित्य की दृष्टि से विचार पढ़कर चर्चा करते हुए दृत वाचन करते हैं तथा आशय को समझते हुए स्वच्छ, शुद्ध एवं मानक लेखन तथा केंद्रीय भाव को लिखते हैं ।
- हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री को पढ़कर तथा विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं, सर्वेक्षण, टिप्पणी आदि को प्रस्तुत कर उपलब्ध जानकारी/विवरण का ज्यों का त्यों उपयोग न करते हुए उसका योग्य संकलन, संपादन करते हुए लेखन करते हैं ।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए समझ के लिए तथा किसी नये विचार, कल्पना का आकलन करने के लिए सावधानी से वाचन करते हुए समानता, असमानता को समझकर एवं विविध स्रोतों, माध्यमों से प्राप्त सूचनाओं का सत्यापन करने के लिए प्रश्न पूछते हैं ।
- अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में सजगता से सुनते हैं, सुनाते हैं तथा उनकी बारीकियों को समझते हुए शुद्ध उच्चारण के साथ मुखर-मौन वाचन करते हैं ।
- पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हुए गुट चर्चा में सहभागी होकर उसमें आए विशेष उद्धरणों, वाक्यों का अपने बोलचाल तथा संभाषण में प्रयोग करते हैं तथा परिचर्चा-भाषण आदि में अपने विचारों को मौखिक/लिखित रूप में व्यक्त करते हैं ।
- विविध संवेदनशील मुद्दों / विषयों जैसे- जाति, धर्म, रंग, लिंग, रीति-रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं तथा संबंधित विषयों पर उचित शब्दों का प्रयोग करते हुए धाराप्रवाह संवाद स्थापित कर लेखन करते हैं ।
- किसी सुनी हुई कहानी, विचार, तर्क, घटना आदि के भावी प्रसंगों का अर्थ समझकर अनुमान लगाते हैं, विशेष बिंदुओं को खोजकर उसका संकलन करते हैं ।
- पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं तथा किसी परिचित/अपरिचित के साक्षात्कार हेतु प्रश्न निर्मिति करते हैं तथा किसी अनुच्छेद का अनुवाद एवं लिप्यंतरण करते हैं ।
- विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त उपयोगी/आलंकारिक शब्द, महान विभूतियों के कथन, मुहावरों/लोकोक्तियों-कहावतों, परिभाषाओं, सूत्रों आदि को समझते हुए सूची बनाते हैं तथा विविध तकनीकों का प्रयोग करके अपने लेखन को अधिक प्रभावी बनाने का प्रयास करते हैं ।
- किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर आलेख, अन्य संदर्भ साहित्य का द्विभाषिक शब्द संग्रह, ग्राफिक्स, वर्डआर्ट, पिक्टोग्राफ आदि की सहायता से शब्दकोश तैयार करते हैं और प्रसार माध्यमों में प्रकाशित जानकारी की आलंकारिक शब्दावली का प्रभावपूर्ण तथा सहज वाचन करते हैं ।
- अपने पाठक के विचार और लेखन के, लिखित सामग्री के उद्देश्य का आलकन कर और अन्य दृष्टिकोण के मुद्दों को समझकर उसे प्रभावी तरीके से लिखते हैं ।
- सुने हुए कार्यक्रम के तथ्यों, मुख्य बिंदुओं, विवरणों एवं पठनीय सामग्री में वर्णित आशय के वाक्यों एवं मुद्दों का तार्किक एवं सुसंगति से पुन:स्मरण कर वाचन करते हैं तथा उनपर अपने मन में बनने वाली छबियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल लिपि में अभिव्यक्ति करते हैं ।
- भाषा की बारीकियों/व्यवस्था का वर्णन, उचित विराम, बलाघात, तान-अनुतान के साथ शुद्ध उच्चारण आरोह-अवरोह, को एकाग्रता से सुनते एवं सुनाते हैं तथा पठन सामग्री में अंतर्निहित आशय, केंद्रित भाव अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं ।
- विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को, सुने हुए संवाद, वक्तव्य, भाषण के प्रमुख मुद्दों को पुन: प्रस्तुत करते हैं तथा उनका उचित प्रारूप में वृत्तांत लेखन करते हैं ।
- रूपरेखा तथा शब्द संकेतों के आधार पर आलंकारिक लेखन तथा पोस्टर-विज्ञापन में विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते हैं ।
- दैनिक जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति पर विभिन्न तरीके से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं तथा प्रसार माध्यम से राष्ट्रीय प्रसंग/घटना संबंधी वर्णन सुनते और सुनाते हैं एवं भाषा की भिन्नता का समादर करते हैं ।

✻ अनुक्रमणिका ✻

पहली इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	डुबा दो अहंकार	गीत	रवींद्रनाथ टैगोर	१-२
२.	गीत	कहानी	सलाम बिन रजाक	३-९
३.	सेल्फी के शौक	वैचारिक निबंध	अनिल कुमार जैन	१०-१४
४.	क्या करेगा तू बता	कविता	डॉ. सुधाकर मिश्रा	१५-१६
५.	मन का रोगी	एकांकी	राम निरंजन शर्मा 'ठिमाऊ'	१७-२४
६.	महाप्राण निराला	संस्मरण	पुष्पा भारती	२५-२८
७.	धूप की उष्मित छुवन	गजल	रामदरश मिश्र	२९-३०
८.	नरई	यात्रा वर्णन	डॉ. श्रीकांत उपाध्याय	३१-३३
९.	रज्जब चाचा	कहानी	व्यथित हृदय	३४-३९
१०.	बातें प्रेमचंद की	चरित्रात्मक वार्तालाप	अवधनारायण मुद्‌गल	४०-४५
११.	मयूर पंख	पद	जगन्नाथदास रत्नाकर	४६-४८

दूसरी इकाई

क्र.	पाठ का नाम	विधा	रचनाकार	पृष्ठ
१.	इनसान	नवगीत	रमानाथ अवस्थी	४९-५०
२.	चप्पल	मनोवैज्ञानिक कहानी	कमलेश्वर	५१-५७
३.	मान न मान; मैं तेरा मेहमान	हास्य-व्यंग्य निबंध	संजीव निगम	५८-६२
४.	प्रभात	नई कविता	भारतभूषण अग्रवाल	६३-६५
५.	हारना भी हिम्मत का काम है	आलेख	शरबानी बैनर्जी	६६-६९
६.	बंटी	उपन्यास का अंश	मन्नू भंडारी	७०-७४
७.	अनमोल वचन	साखी	दादू दयाल	७५-७६
८.	साहित्य की सच्चाई	भाषण	जैनेंद्र	७७-८२
९.	शब्दकोश	बातचीत	डॉ. सरोज प्रकाश	८३-८७
१०.	मेरे जेबकतरे के नाम	पत्र	हरिशंकर परसाई	८८ -९२
११.	परिवर्तन	गीतिनाट्‌य का अंश	दुष्यंत कुमार	९३-९६
	व्याकरण एवं रचना विभाग तथा भावार्थ			९७-१०४

१. डुबा दो अहंकार

– रवींद्रनाथ टैगोर

मेरा शीश नवा दो अपनी
चरण धूल के तल में ।
देव ! डुबा दो अहंकार सब
मेरे आँसू जल में ।
अपने को गौरव देने हित
अपमानित करता अपने को,
घेर स्वयं को घूम-घूमकर
मरता हूँ पल-पल में ।
देव ! डुबा दो अहंकार सब
मेरे आँसू जल में ।

अपने कामों में न करूँ मैं
आत्मप्रचार प्रभो ;
अपनी ही इच्छा मेरे
जीवन में पूर्ण करो ।
मुझको अपनी चरम शांति दो
प्राणों में वह परम कांति हो
आप खड़े हो मुझे ओट दें
हृदयकमल के दल में ।
देव ! डुबा दो अहंकार सब
मेरे आँसू जल में ।

—— ० ——

परिचय

जन्म : १८६१, कोलकाता (प.बं.)
मृत्यु : १९४१
परिचय : विश्व के महान साहित्यकार गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर जी को 'नोबल पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है । आप केवल कवि ही नहीं बल्कि कथाकार, उपन्यासकार, नाटककार, निबंधकार तथा चित्रकार भी हैं । आप हमारे राष्ट्रगीत के रचयिता हैं । आपको १९१३ में 'गीतांजलि' के लिए 'नोबल पुरस्कार' भी प्राप्त हुआ है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'बनफूल', 'कवि-कहानी', 'संध्यासंगीत', 'प्रभातसंगीत', 'छवि ओगान', 'गीतांजलि', 'वलाका', 'पलातका', 'वनवाणी' और 'शेषलेखा' आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत गीत में कवींद्र रवींद्रनाथ टैगोर जी ईश्वर से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हे देव ! ऐसी शक्ति दो कि हमें किसी बात का अहंकार न हो । इस गीत में कवि हमें अहंकार, अत्याचार से बचने के लिए प्रेरित करते हैं ।

कल्पना पल्लवन

'खड़े रहो तुम अविचल होकर सब संकट-तूफानों में', इसपर अपने विचार लिखो ।

शब्द वाटिका

आत्मप्रचार = आत्मस्तुति
चरम = सर्वोच्च, पराकाष्ठा
दल = पंखुड़ी

मुहावरा

शीश नवाना = नतमस्तक होना, विनम्र होना
ओट देना = सहारा देना, आड़ देना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

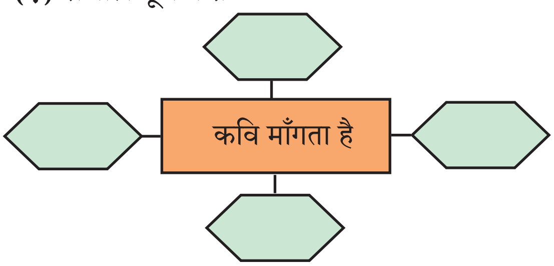

(२) ऐसे प्रश्न तैयार करो जिनके उत्तरों में निम्न शब्द हों :

१. -----------------------
उत्तर - हृदय कमल
२. -----------------------
उत्तर - परम कांति
३. -----------------------
उत्तर - पल-पल
४. -----------------------
उत्तर - जीवन

(३) जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	ब
चरम	-------	जल
हृदयकमल	-------	शांति
परम	-------	दल
आँसू	-------	कांति

(४) प्रस्तुत गीत की किन्हीं चार पंक्तियों का सरल अर्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो विनम्रता मानव का श्रेष्ठ आभूषण है ।

MDHMY1

भाषा बिंदु कविता में आए किन्हीं दस शब्दों के पर्यायवाची तथा विलोमार्थी शब्द लिखो ।

उपयोजित लेखन निम्नलिखित शब्दों के आधार पर कहानी लिखो और उचित शीर्षक दो :
बोतल, किनारा, कंगन, कागज

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन अपने विद्यालय के दैनिक प्रार्थना गीत, प्रतिज्ञा, संविधान की उद्देशिका को चार्ट पेपर पर लिखकर कक्षा में लगाओ ।

२. गीत

– सलाम बिन रजाक

मेरे बेटे ने हमेशा की तरह उस रात भी कहानी सुनाने का अनुरोध किया ।

मैं काफी थका हुआ था इसपर दूरदर्शन से टेलिकास्ट होने वाली खबरों ने मन और मस्तिष्क और भी बोझिल कर दिया । लगता था पूरी दुनिया बारूद के ढेर पर बैठी है । एक जरा माचिस दिखाने की देर है बस । क्या इनसान पुनः आदिकाल की ओर लौट रहा है ?

मन बेचैन और मस्तिष्क परागंदा था । मैंने बेटे को पुचकारते हुए कहा,

''आज नहीं बेटा ! आज पापा बहुत थक गए हैं । हम तुम्हें कल सुनाएँगे एक अच्छी-सी कहानी ।''

बेटे की जिद के आगे मैंने थक-हारकर कहा, ''ठीक है, हम कहानी सुनाएँगे मगर तुम बीच में कोई प्रश्न नहीं पूछोगे ।''

''नहीं पूछूँगा ।'' उसने हामी भरी ।

''पुराने जमाने की बात है...'' मैंने कहानी शुरू की ।

''कितनी पुरानी ?'' वह बीच में बोल पड़ा ।

''ऊँ... हूँ... । मैंने कहा था ना, तुम कोई सवाल नहीं पूछोगे ।''

''ओ हो... सॉरी पापा !'' उसने कसमसाते हुए क्षमा माँगी ।

''वैसे बात बहुत पुरानी भी नहीं है ।'' मैंने कहानी जारी रखते हुए कहा । यही कोई पचास बरस हुए होंगे ।... या हो सकता है सौ-दो सौ बरस पुरानी हो ।... अधिक से अधिक हजार-बारह सौ बरस पुरानी भी हो सकती है या फिर इससे भी ज्यादा...।

कहते हैं उस ऊँची पहाड़ी के पीछे एक बस्ती थी । बस्ती, सचमुच बहुत पुरानी थी । बस्ती में ऊँचे-ऊँचे मकान थे । मकानों के आँगनों में फूलों की क्यारियाँ लगी थीं, जिनमें रंग-बिरंगे फूल खिलते थे और हवाओं में हर पल भीनी-भीनी खुशबू रची रहती थी । बस्ती के बाहर बागों का सिलसिला था, जिन में तरह-तरह के फलदार पेड़ थे । पेड़ों पर परिंदे सुबह-शाम चहचहाते रहते । बस्ती के पास से एक नदी गुजरती थी जिससे आस-पास की धरती जल संपन्न होती रहती । मनुष्य तो मनुष्य ढोर-डंगर तक को दाने-चारे की कमी नहीं थी । गायें बहुत-सारा दूध देतीं । बस्ती के लोग प्रसन्नचित्त, मिलनसार और

परिचय

जन्म : १९४१, पनवेल (महाराष्ट्र)
परिचय : सलाम साहब का अध्यापन और लेखन कार्य साथ-साथ चलता रहा है । आपके लेख, कहानियाँ विविध पत्र-पत्रिकाओं की शोभा बढ़ाते रहे हैं । आपको दिल्ली, उ.प्र., बिहार, महाराष्ट्र की साहित्य अकादमियों द्वारा विविध सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'माहिम की खाड़ी', 'बादल की आपबीती', 'नन्हा खिलाड़ी', 'जिंदगी अफसाना नहीं', 'नंगी दोपहर का सच' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत भावपूर्ण प्रतीकात्मक कहानी में लेखक सलाम बिन रजाक जी इशारा करते हैं कि जब लोगों की नीयत में खोट नहीं थी तो समाज में चारों तरफ सुख-शांति, समरसता, संपन्नता फैली हुई थी । आज लोगों में लालच, स्वार्थ असंतोष का विष घुल गया है । परिणामस्वरूप समाज में मनभेद, अशांति फैल गई है । मेल-मिलाप, सुख, जीवन के संगीत अदृश्य हो गए हैं ।

शांति एवं प्रेम के संदेश देने वालों के तन-मन लहू-लुहान हो रहे हैं । रजाक जी को भावी पीढ़ी से बहुत उम्मीदें हैं । आपका मानना है कि भावी पीढ़ी ऐसा संगीत रच सकेगी जिससे समाज में सुख-शांति, सौहार्द का वातावरण बन सकेगा ।

मौलिक सृजन

''क्षमा एक महान गुण है''- इसपर अपने विचार लिखो ।

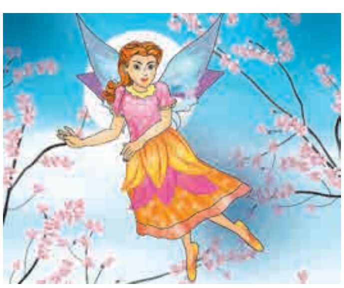

शांतिप्रेमी थे । पुरुष दिन भर खेत-खलिहानों और बागों में काम करते। पशु चराते, लकड़ियाँ काटते और औरतें चूल्हा-चक्की सँभालतीं । उनमें जो शक्तिवान थे कुश्तियाँ लड़ते, लाठी-बल्लम खेलते । चित्रकार चित्र बनाते और कवि गीत गाते थे । खुशियाँ रोज उस बस्ती की परिक्रमा करतीं और दुख भूले से भी कभी उधर का रुख न करते ।

कहते हैं बस्ती के पास ही एक घने पेड़ पर एक परी रहती थी । नन्ही-मुन्नी, मोहनी मूरत और मासूम सूरतवाली । बड़ी-बड़ी आँखों, सुनहरे बालों और सुर्ख गालोंवाली । परी गाँववालों पर बहुत मेहरबान थी । वह अकसर अपने चमकदार परों के साथ उड़ती हुई आती और उनके रोते हुए बच्चों को गुदगुदाकर हँसा देती । लड़कियों के साथ सावन के झूले झूलती, आँखमिचौली खेलती । लड़कों के साथ पेड़ों पर चढ़ती, नदी-नालों में तैरती । कभी किसी के खलिहान को अनाजों से भर देती, कभी किसी के आँगन में रंग-बिरंगे फूल खिला देती ।

दिन गुजरते रहे । समय का पंछी काले-सफेद परों के साथ उड़ता रहा और मौसम का बहुरूपिया नये रूप बदलता रहा । फिर पता नहीं क्या हुआ, कैसे हुआ कि एक दिन किसी ने उनके खेतों में शरारत का हल चला दिया । बस, उस दिन से उनके खेत तो फैलते गए, मगर मन सिकुड़ने लगे। गोदाम अनाजों से भर गए मगर नीयतों में खोट पैदा हो गई । अब वे अपनी निजी जमीनों के अतिरिक्त दूसरों की जमीनों पर भी नजर रखने लगे । नतीजे के तौर पर खेतों में मक्कारी की फसल उगने लगी और पेड़ छल-कपट के फल देने लगे । लालच ने उनमें स्वार्थ का विष घोल दिया । पहले वह मिल-बाँटकर खाते थे, मिल-जुलकर रहते थे मगर अब उनकी हर चीज विभाजित होने लगी। खेत-खलिहान, बाग-बगीचे, घर-आँगन यहाँ तक कि उन्होंने अपने पूजा घरों तक को आपस में बाँट लिया और अपने-अपने खुदाओं को उनमें कैद कर दिया। उनकी आँखों की कोमलता और दिलों की उदारता हथेली पर जमी सरसों की तरह उड़ गई । दावतों का सिलसिला बिखर गया और महफिलें उजड़ गईं । तस्वीरों के रंग अंधे और गीतों के बोल बहरे हो गए। अब न कोई तस्वीर बनाता था; न कोई गीत गाता था । हर घड़ी, हर कोई एक-दूसरे को हानि पहुँचाने की फिक्र में रहता ।

बस्तीवालों के ये बदले हुए रंग-ढंग देखकर वह नन्ही परी बहुत दुखी हुई । वह सोचने लगी, आखिर बस्तीवालों को क्या हो गया है? ये क्यों एक-दूसरे के बैरी हो गए हैं ? मगर उसकी समझ में कुछ नहीं आया । वह अब भी बस्ती में जाती, बच्चों को गुदगुदाती और औरतों

के साथ गीत गाती, उनके खेत-खलिहानों के चक्कर लगाती, आँगनों में घूमती-फिरती । मगर अब, वह सब उसकी तरफ बहुत कम ध्यान देते। बस्तीवालों की उपेक्षा के कारण नन्ही परी उदास रहने लगी । आखिर उसने बस्ती में आना-जाना कम कर दिया ।

फिर एक दिन ऐसा आया कि उसने बस्ती में आना-जाना बिलकुल बंद कर दिया ।

बस्तीवाले आपस में झगड़े-टंटों में इतने उलझे हुए थे कि शुरू में उन्हें उसकी अनुपस्थिति का आभास ही नहीं हुआ। मगर जब सुहागनों के गीत बेसुरे हो गए और कुँआरियों ने पेड़ों की टहनियों से झूले उतार लिए और बच्चे खिलखिलाकर हँसना भूल गए तब उन्हें एहसास हुआ कि उन्होंने अपनी कोई अनमोल वस्तु खो दी है । बस्तीवाले चिंतित हो गए। उसे कहाँ ढूँढ़ें, कहाँ तलाश करें?

पहले तो उन्होंने उसे अपने घरों के आँगनों में तलाश किया । मैदानों में भटके, पेड़ों पर और गुफाओं में देखा, मगर वह कहीं नहीं थी । अब उनकी चिंता बढ़ने लगी । मगर बजाय इसके कि वे मिल-बैठकर, सर जोड़कर उसके बारे में सोचते । वे एक-दूसरे पर आरोप लगाने लगे कि परी उनके कारण रूठ गई है । अब तो उनके दिलों की नफरत और भी गहरी हो गई ।

उन्होंने एक-दूसरे के खेत-खलिहानों को नष्ट करना और पशुओं को चुराना शुरू कर दिया। धोखा, फरेब, लूटमार, हत्या, विनाश रोज का नियम बन गया ।

जब पानी सर से ऊँचा हो गया और बचाव का कोई उपाय न रहा तब बस्तीवालों ने तय किया कि इस प्रतिदिन के उपद्रव से अच्छा है इस किस्से को हमेशा के लिए खत्म कर दिया जाए ।

इस निर्णय के बाद वे दो गुटों में बँट गए । सारे युवक हाथों में बल्लम और तलवारें लिए मैदान में एक दूसरे के सम्मुख आकर खड़े हो गए। उनकी आँखों से क्रोध और नफरत की चिंगारियाँ निकल रही थीं और उनकी मुट्ठियाँ बल्लम और तलवारों की मूठों पर मजबूती से कसी हुई थीं। एक-दूसरे पर झपट पड़ने को तैयार खड़े थे ।

तभी एक अनहोनी हो गई । फिजा में एक महीन-सा सुर बुलंद हुआ। जैसे किसी परिंदे का कोमल पर हवा में काँप रहा हो । कोई गा रहा था ।

उन्होंने आवाज की ओर देखा। पहले तो उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया मगर जब उन्होंने बहुत ध्यान से देखा तो उन्हें नन्ही परी एक पेड़ की डाल पर बैठी दिखाई दी । उसके बाल बिखरे हुए और गाल

लेखनीय

दैनिक जीवन से अलग किसी-घटना/स्थिति पर संवाद, भाषण लिखो ।

संभाषणीय

परिवहन के नियमों का पालन करने से होने वाले लाभ बताओ ।

आँसुओं से भीगे हुए थे । पर नुचे हुए और कपड़े फटे हुए थे, जैसे वह घनी काँटेदार झाड़ियों के बीच से गुजरकर आ रही हो । उसके पाँव नंगे और तलवे जख्मी थे । वह पेड़ से उतरकर मैदान के बीच में आकर खड़ी हो गई । उसने दोनों हाथ फिजा में बुलंद कर रखे थे जैसे उन्हें एक दूसरे पर हमला करने से रोकना चाहती हो ।

तलवारों की मूठों और बल्लमों पर कसी हुई मुट्‌ठियाँ तनिक ढीली हुईं ।

वह गा रही थी । उसकी आवाज में ऐसा दर्द था कि उनके सीनों में दिल तड़प उठे । आवाज धीरे-धीरे बुलंद होती गई, इतनी बुलंद जैसे सितारों को छूने लगी हो । उसकी आवाज चारों दिशाओं में फैलने लगी । फैलती गई । इतनी फैली कि चारों दिशाएँ उसकी आवाज की प्रतिध्वनि से गूँजने लगीं । लोग अचरज से आँखें फाड़े, मुँह खोले उसका गीत सुनते रहे, सुनते रहे ।

यहाँ तक कि उनके हाथों में दबी तलवारें फूलों की छड़ियों में परिवर्तित हो गईं और बल्लम मोरछल बन गए ।

गीत के बोल उनके कानों में रस घोलते रहे और धीरे-धीरे वह सब एक-दूसरे से एक अनदेखी-अनजान डोर से बँधते चले गए । जैसे वह सब एक ही माला के मोती हों, जैसे वह एक ही माँ के जाये हों ।

उधर गीत समाप्त हुआ और वह अपनी मैली आस्तीनों से आँसू पोंछते हुए एक-दूसरे के गले लग गए ।

जब आँसुओं का गुबार कम हुआ तो उन्होंने अपनी प्यारी परी को तलाश करना चाहा मगर वह उनकी नजरों से ओझल हो चुकी थी । बस्तीवालों ने उसे बहुत ढूँढ़ा, वादी-वादी, जंगल-जंगल आवाजें दीं, मिन्नतें कीं, मगर वह दोबारा जाहिर नहीं हुई । तब बस्तीवालों ने उसकी याद में एक मूर्ति बनाई, उसे बस्ती के बीचोंबीच मैदान में स्थापित कर दिया ।

कहते हैं; आज भी बस्ती के लोगों में जब कोई विवाद होता है, सब मैदान में उस मूर्ति के गिर्द इकट्‌ठे हो जाते हैं और उस गीत को दोहराने लगते हैं । इस तरह बस्तीवाले आज भी उस गीत के कारण शांति और चैन से जिंदगी बिता रहे हैं ।

जैसे उनके दिन फिरे; खुदा हम सब के भी दिन फेरे।''

मैंने कहानी खत्म करके अपने बेटे की तरफ देखा । चेहरा बिलकुल सपाट था । मैंने जम्हाई लेते हुए कहा, ''चलो, अब सो जाओ, कहानी खत्म हो गई ।''

उसने कहा, ''पापा, आपने कहा था, कहानी सुनाते समय कोई

पठनीय

अंतरजाल पर बाबा आमटे जी के समाजोपयोगी प्रकल्पों की जानकारी पढ़ो ।

प्रश्न नहीं पूछना ।''

''हाँ... मैंने कहा था और तुमने कोई प्रश्न नहीं पूछा । तुम बड़े अच्छे बच्चे हो । अब सो जाओ ।''

''मगर पापा कहानी तो खत्म हो गई । मैं अब तो प्रश्न पूछ सकता हूँ ना ?''

मैं थोड़ी देर चुप रहा । फिर बोला, ''चलो पूछो, क्या पूछना चाहते हो ।'' ''पापा! वह कौन-सा गीत था जिसे सुनकर गाँववाले दोबारा गले मिलने पर मजबूर हो गए ।''

मैंने चौंककर उसकी ओर देखा । थोड़ी देर चुप रहा, फिर बोला ।

''मुझे वह गीत याद नहीं है बेटा !''

''नहीं पापा'' उसने मचलते हुए कहा, ''मुझे वह गीत सुनाइए, वरना मैं समझूँगा कि आपकी कहानी एकदम झूठी थी ।''

मैं थोड़ी देर चुप रहा, फिर दबे स्वर में बोला, ''हाँ, बेटा यह कहानी झूठी है । कहानियाँ अकसर काल्पनिक होती हैं ।''

वह मुझे उसी तरह अपलक देख रहा था। मैंने उसकी आँखों में झाँकते हुए कहा, ''मगर तुम इस झूठी कहानी को सच्ची बना सकते हो ।'' ''वह कैसे ?'' उसने हैरानी से पूछा ।

''बड़े होकर तुम वैसा गीत लिख सकते हो जैसा उस परी ने गाया था ।'' बेटे की आँखों में चमक पैदा हुई, ''सच पापा !''

''एकदम सच ।''

उसने मेरे गले में बाँहें डाल दीं । ''यू आर सो स्वीट पापा ।''

उसने आँखें बंद कर लीं । वह जल्द ही सो गया । मगर मैं रात में बहुत देर तक जागता रहा । बार-बार मेरे मन में एक ही विचार कुलबुला रहा था कि क्या मेरा बेटा वैसा गीत लिख सकेगा ?

—— ० ——

श्रवणीय

''कर भला तो हो भला'' इस कथन से संबंधित कहानी सुनो और कक्षा में सुनाओ ।

शब्द वाटिका

परागंदा = अस्तव्यस्त
मोरछल = मोरपंख का बना चँवर
अनुरोध = विनती
बोझिल = भारी, वजनदार
अभ्यस्त = जिसने अभ्यास किया हो, निपुण
अपलक = एकटक

मुहावरे

दिल तड़पना = बेचैन होना
आँखें फाड़कर देखना = आश्चर्य से देखना
नजरों से ओझल होना = गायब होना
गले लगाना = प्यार से मिलना

✲ **सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

बस्ती की विशेषताएँ

(२) उत्तर लिखो :

१. पाठ में प्रयुक्त दो हथियार

२. बस्तीवालों की उपेक्षा के बाद परी के मन के भाव

(३) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

परी ऐसी थी

(४) कारण लिखो :

१. बस्ती के आस–पास की जमीन उपजाऊ थी ....

२. नन्ही परी दुखी हो गई ....

३. बस्तीवाले चिंतित हो गए ....

४. लेखक ने चौंककर अपने बेटे की ओर देखा ....

(५) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
शक्तिवान		बहुरूपिया
सावन		सिलसिला
मौसम		झूले
दावत		कुश्तियाँ

(६) कहानी में उल्लिखित परी का वर्णन करो ।

सदैव ध्यान में रखो

लोककथा एवं लोकगीत हमारी साहित्यिक पूँजी हैं ।

MDHIZN

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन दया, क्षमा, निःस्वार्थ वृत्ति से संबंधित सुवचनों का चार्ट बनाकर कक्षा में लगाओ ।

भाषा बिंदु

चौखट में दिए गए मुहावरे–कहावतों का वाक्यों में प्रयोग करो और विकारी शब्द लिखो :

बहती गंगा में हाथ धोना	तू डाल–डाल, मैं पात–पात
खोदा पहाड़ निकली चूहिया	वह पानी मुलतान गया
घमंडी का सिर नीचा	छूछा कोई न पूछा
चोरों की बारात में अपनी–अपनी होशियारी	जाके पाँव न फटी बिवाई वह क्या जाने पीर पराई
दाल में काला होना	जिसकी लाठी उसकी भैंस
कभी तोला कभी मासा	अपने मुँह मियाँ मिट्ठू होना
एक अनार सौ बीमार	घाव पर नमक छिड़कना
इस कान से सुनना उस कान से निकालना	नाक पर मक्खी न बैठने देना

विकारी शब्दों के भेद :

संज्ञा	सर्वनाम	विशेषण	क्रिया
______	______	______	______
______	______	______	______
______	______	______	______
______	______	______	______

उपयोजित लेखन

कोई साप्ताहिक पत्रिका अनियमित रूप में प्राप्त होने के कारण पत्रिका के संपादक को शिकायती पत्र निम्न प्रारूप में लिखो :

पत्र का प्रारूप
(औपचारिक पत्र)

दिनांक :
प्रति,
....
....
विषय :..............
संदर्भ : ....
महोदय,
विषय विवेचन

भवदीय/भवदीया,
....
नाम : ....
पता : ....
....
ई–मेल आईडी : ....

३. सेल्फी का शौक

– अनिल कुमार जैन

परिचय

परिचय : आपके लेख, कविताएँ, रिपोर्ट आदि स्थानीय व राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। आप संप्रति केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर में अनुभाग अधिकारी हैं ।

गद्‍य संबंधी

प्रस्तुत निबंध में लेखक अनिल कुमार जैन जी ने मोबाइल फोटोग्राफी और सेल्फी के चलन पर अपनी लेखनी चलाई है । सेल्फी की दीवानगी में अनगिनत लोगों को अपनी जान भी गँवानी पड़ी है । आपका मानना है कि हमें सावधानी से वैज्ञानिक साधनों का उपयोग करना चाहिए ।

मौलिक सृजन

'स्वच्छता अभियान में हमारा योगदान' पर अपने विचार लिखो ।

पहले मोबाइल आया । फिर स्मार्ट और एंड्रायड फोन आए और अब उसी से जुड़ा एक और फीचर चला है-सेल्फी । धीरे-धीरे इन चीजों ने पूरे तंत्र को जकड़ लिया है । आज ये चीजें लोगों की जरूरत बन गई हैं । मोबाइल फोटोग्राफी का क्रेज इतना है कि चार-पाँच दोस्त एकत्र हुए नहीं कि फोटोग्राफी शुरू हो जाती है । यह शौक फोटोग्राफी तक ही सीमित नहीं रहता बल्कि उसके बाद सोशल मीडिया पर इन फोटोज को शेयर करना भी एक आदत हो गई है । इतना ही नहीं, यदि कहीं कोई घटना घटती है तो मीडिया बाद में पहुँचता है । तथाकथित मोबाइल फोटोग्राफर उसे कवर कर सोशल साइट्स-फेसबुक, ट्विटर, वॉट्सअप आदि पर तुरंत अपलोड कर देते हैं । सामाजिक चेतना का यह एक नया स्वरूप है । मोबाइल आज पत्रकारिता का हिस्सा बन गया है । इसके बढ़ते उपयोग का सबसे बड़ा कारण सभी के पास मोबाइल सहज उपलब्ध होना है । इसके अलावा इसका उपयोग भी आसान है । कह सकते हैं कि मोबाइल फोटोग्राफी ने कम समय में कई गुना तरक्की की है ।

आज मोबाइल फोटोग्राफी क्षेत्र में 'मोबाइल फोटोग्राफी अवार्ड' भी दिए जा रहे हैं । इन पुरस्कारों की शुरुआत डेनियल बर्मन ने सन २०११ में की । इस प्रतियोगिता का विश्व की सबसे बड़ी प्रतियोगिताओं में शुमार है । मोबाइल कंपनियाँ भी इस शौक को आगे बढ़ाने में पीछे नहीं हैं । रोज नये-नये मोबाइल लॉन्च कर रही हैं । नये फीचर जोड़ रही हैं । मेगा पिक्सल बढ़ा रही हैं । विभिन्न प्रकार के एप्स निकाल रही हैं ।

सेल्फी शब्द की शुरुआत २००२ से हुई । मोबाइल फोन के फ्रंट कैमरे से अपनी खुद की या अपने समूह की फोटो लेना ही सेल्फी है । बीते दिनों में इसका क्रेज दीवानगी की हद तक आ गया है ।

वर्ष २०१३ में तो इसने अपने कीर्तिमान के झंडे गाड़ दिए । इसे 'ऑक्सफोर्ड वर्ड ऑफ द ईयर' के खिताब से नवाजा गया । इसे 'ऑनलाइन ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी' में भी शामिल कर लिया गया है । इसे फ्रेंच डिक्शनरी 'ले पेटिट लराउसे' में भी शामिल किया गया है । इसके अलावा अगस्त २०१४ में इसे स्क्रेबल खेल के लिए भी स्वीकार कर लिया गया । एक फिल्म में 'सेल्फी ले ले' शब्दों से एक गाना भी

बन गया है। ये सब निश्चय ही शब्द की महत्ता और लोकप्रियता को जाहिर करते हैं ।

सेल्फी के साथ ही एक और शब्द चलन में आया है, वह है-ग्रुपी। जी हाँ, सेल्फी की तरह ही जब समूह की फोटो ली जाती है तो उसे 'ग्रुपी' पुकारा गया । इसका भी क्रेज हदों के पार है ।

सेल्फी की दीवानगी दुनिया भर में है । नेता हो या अभिनेता या फिर कोई अन्य, हर किसी को सेल्फी का चस्का लग गया है । युवक-युवतियों में तो यह दीवानगी की हदों के पार है। अलग-अलग स्टाइल में अपनी सेल्फी लेने के चक्कर में युवक-युवतियाँ न जाने क्या-क्या कर रहे हैं ।

सेल्फी के इस जुनून में कई बार ऐसी घटनाएँ भी हुई हैं कि लोगों को अपनी जान तक गँवानी पड़ी । लंदन में रोमानियाई किशोरी अन्ना उर्सु ट्रेन के ऊपर से जा रही २७ हजार वॉल्ट की टेंशन लाइन टच करते ही वहीं ढेर हो गई । एक लड़के ने तो अपने मृत चाचा जी के साथ सेल्फी ली ।

बीते दिनों सेल्फी पर एक चुटकी पढ़ने को मिली-'यमदूत तुम मुझे अपने साथ ले जाओ, इससे पहले एक सेल्फी प्लीज...!', है न कितना अजीब शौक ! ब्रिटिश वेबसाइट फीलिंग यूनिक डॉट कॉम के एक सर्वे की बात करें तो लड़कियाँ एक सप्ताह में करीब पाँच घंटे सेल्फी पूरी कर रही हैं और हर १० में से एक लड़की के पास कार या अपने ऑफिस की करीब १५० सेल्फी रहती है। मैंने जब एक लड़की से पूछा कि 'मर्जी आए वहीं सेल्फी क्यों ?' तो जवाब मिला, "कहीं पर भी जाओ, एक सेल्फी तो बनती है।"

इन बातों से अंदाजा लगा सकते हैं कि सेल्फी का कितना क्रेज है। लोगों के इस शौक को यदि सेल्फी का कीड़ा कहें तो भी कोई अतिशयोक्ति नहीं है ।

सेल्फी एक शौक तो है ही किंतु लोग इसे कूटनीति का एक माध्यम मान रहे हैं। सेल्फी के माध्यम से रिश्ते को प्रगाढ़ता दी जा रही है । एक-दूसरे से घनिष्ठता दिखाई जा रही है । हरियाणा के जींद की बीबीपुर ग्राम पंचायत ने एक अनूठी पहल की है । उन्होंने बेटियों के साथ 'सेल्फी लो और इनाम पाओ' प्रतियोगिता आरंभ की है। बेटियों की कमी से जूझ रहे समाज में बेटियों के महत्त्व को जताते हुए सेल्फी का एक अभिनव प्रयोग किया है ।

यह चस्का हर सेलिब्रेटी, नेता, वी.आई.पी आदि सभी को है । लोग स्वयं अपनी गतिविधियों और आस-पास की घटनाओं का

संभाषणीय

'भारत में सघन वन किन स्थानों पर बचे हैं', इसपर आपस में चर्चा करो ।

श्रवणीय

प्रसार माध्यमों से किसी प्रसंग/घटना संबंधी राष्ट्रीय समाचार सुनो और उसमें प्रयुक्त भाषा की विशेषताएँ समझने का प्रयास करो ।

पठनीय

महादेवी वर्मा जी लिखित 'मेरा परिवार' से कोई एक रेखाचित्र पढ़ो ।

कवरेज कर सोशल साइट्स पर अपलोड कर रहे हैं अर्थात जाने-अनजाने मोबाइल फोटोग्राफी से मीडिया का काम बरबस हो ही रहा है ।

मोबाइल फोटोग्राफी न सिर्फ फोटो पत्रकारिता का काम कर रही है अपितु घटनाओं का कवरेज कर न्यूज भी प्रसारित कर रही है । इससे खबरें शीघ्र आने लगी हैं । लाइव कवरेज जैसा प्रसारण हो गया है । कह सकते हैं कि यह मीडिया का एक सशक्त माध्यम है । मोबाइल ने हर आदमी को पत्रकार बना दिया है । उसकी सामाजिक चेतना को जगा दिया है । घटना-घटते ही हर कोई फोटोग्राफी और वीडियोग्राफी कर देश भर में खबर को फैला देता है ।

सेल्फी का सबसे बड़ा फायदा इसकी बड़ी बहन 'ग्रुपी' से है । पहले एक आदमी को ग्रुप से बाहर रहकर फोटो खींचनी पड़ती थी । अब सेल्फी की बड़ी बहन यानी ग्रुपी के आने से अब पूरे समूह की फोटो लेना आसान हो गया है । किसी पर निर्भर नहीं रहना पड़ता । इसमें बैकग्राउंड को कवर करना भी आसान हो गया है । एक-दूजे के साथ सेल्फी लेकर लोग एक-दूजे के करीब आ रहे हैं । घनिष्ठता जाहिर करने का यह तरीका बन गया है । डिजिटल एस.एल.आर कैमरों से भी मुक्ति मिली है । सेल्फी आने से किशोर-किशोरियों में सजने-सँवरने का शौक बढ़ा है । आईने से भी इन्हें मुक्ति मिली है क्योंकि अब वे सेल्फी में ही अपने-आपको निहार लेते हैं । इसके अलावा भी छोटे-बड़े कई फायदे हैं ।

स्मार्ट फोन का आज एक पूरा बाजार है । नये-नये फीचर से जुड़ी पूरी एक रेंज है । एप्स, टूल्स व एक्सेसरीज की भी भरमार है । फोन में कैमरों की गुणवत्ता में सुधार हुआ है । फ्रंट और बैक कैमरों में अच्छे मेगा पिक्सल के कैमरे आने लगे हैं । सेल्फी के लिए छड़ी आने लगी है जो कि बड़े समूह को कवर करने के लिए एक अच्छा साधन है । अमेरिका में तो सेल्फी यानी सेल्फ पोट्रेट के लिए पाठ्यक्रम भी चला दिया है । इसमें अलग-अलग कोणों से ली हुई तसवीरों व उनके हाव-भाव, बैकग्राउंड आदि का विश्लेषण व तुलनात्मक अध्ययन आदि शामिल है ।

मोबाइल फोटोग्राफी के कुछ फायदे हैं तो कुछ नुकसान भी हैं । कुछ फोटोग्राफ्स जो प्रसारित नहीं होने चाहिए, वे भी प्रसारित हो जाते हैं । कुछ संपादन या काट-छाँट के पश्चात प्रसारित होने चाहिए, वे भी बिना संपादन के प्रसारित हो जाते हैं । अतः ऐसे तथाकथित मोबाइल फोटो पत्रकारों को संवेदनशील मामलों के फोटो प्रसारित करने में

सावधानी बरतनी चाहिए ।

इसके अलावा मोबाइल फोटोग्राफी करते समय ध्यान रखें कि किसी की निजता भंग न हो । किसी का दिल न दुखे । संकट में आए व्यक्ति की फोटोग्राफी करने से पहले उसकी मदद के लिए हाथ बढ़ाएँ । फोटोग्राफी और सेल्फी के चक्कर में ज्यादा रिस्क न लें अन्यथा यह जान को भारी पड़ सकती है । एप्स का उपयोग सकारात्मक करें । किसी की फोटो से छेड़छाड़ करने से बचें । फोटो का उपयोग अच्छे कार्य के लिए करें । इन बातों में यदि जरा भी लापरवाही की तो परिणाम घातक ही होंगे । अतः इन सावधानियों का कड़ाई से पालन करना चाहिए ।

मोबाइल फोटोग्राफी की इस चर्चा से जाहिर है कि यह दशक मोबाइल फोटोग्राफी और सेल्फी का है । मीडिया का यह सशक्त माध्यम है । इससे सामाजिक चेतना में एक नया संचार हुआ है । शौक से शुरू हुआ यह सफर आज पत्रकारिता और डिप्लोमेसी का हिस्सा बन गया है । यह चस्का बड़े शहरों से छोटे शहरों और छोटे शहरों से गाँव-ढाणी तक पहुँच गया है, जो फिलहाल रुकने वाला नहीं है ।

—— ० ——

लेखनीय

'मोबाइल से लाभ-हानि' विषय पर अपने विचार लिखो ।

शब्द वाटिका

सीमित = मर्यादित, नियंत्रित
शुमार = शामिल
नवाजना = कृपा करना, सम्मानित करना
दीवानगी = पागलपन, नशा
कूटनीति = पारस्परिक व्यवहार में दाँव-पेंच की नीति या छिपी हुई चाल ।
अतिशयोक्ति = बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कही हुई बात
बरबस = सहज
प्रगाढ़ = बहुत गहरा
अनूठी = अनोखी, अद्‌भुत

मुहावरा

ढेर हो जाना = मृत्यु हो जाना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) तालिका पूर्ण करो :

मोबाइल पर फोटोग्राफी करते समय बरतनी आवश्यक सावधानियाँ :
____
____
____
____

(२) कृति पूर्ण करो :

१. सेल्फी के चक्कर में हुई दुर्घटनाएँ
- -------
- -------

२. सेल्फी से फायदे
- -------
- -------

(३) एक वाक्य में उत्तर लिखो :

१. मोबाइल का उपयोग क्यों बढ़ रहा है ? ----------------

२. 'सेल्फी' को किस खिताब से नवाजा गया है ? ----------------

३. सेल्फ पोट्रेट के पाठ्यक्रम में क्या किया जाता है ? ----------------

४. लेखक ने कौन-सा अजीब शौक बताया है ? ----------------

(४) पाठ में आए अंग्रेजी शब्दों के अर्थ हिंदी में लिखो :

HE6F2B

सदैव ध्यान में रखो

'विज्ञान मानव की सहायता के लिए है ।'

भाषा बिंदु

पाठ में प्रयुक्त सहायक क्रिया के वाक्य ढूँढ़कर लिखो । मुख्य और सहायक क्रियाएँ अलग करके लिखो ।

उपयोजित लेखन

निम्नलिखित परिच्छेद पढ़कर उसपर आधारित ऐसे पाँच प्रश्न तैयार करके लिखो जिनके उत्तर एक-एक वाक्य में हों :

एकता का सबसे सुंदर उदाहरण पेश करने वाले पक्षी हैं कौए । एक कौआ अगर किसी कारणवश मर जाए तो अनेक कौए इकट्‌ठे होकर काँव-काँव करने लगते हैं, मानो मृत्यु के कारणों पर विचार-विनिमय कर रहे हैं । इसी प्रकार यदि कोई कौआ अन्य कौओं की दृष्टि से कोई अनुचित काम करता है, तो कौओं की सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया जाता है और दोषी कौए को समुचित दंड दिया जाता है । कौआ चालाक और चतुर तो है किंतु कोयल से ज्यादा नहीं । कौआ जब आहार की तलाश में बाहर निकल जाता है तो कोयल चुपके से कौए के घोंसले में अपने अंडे रखकर उड़ जाती है । यदि उस समय कोयल को कौआ देख ले तो फिर कोयल की खैर नहीं । कौआ चोंच मार-मारकर कोयल को घायल कर देता है । ऐसे में कोयल की चतुराई काम नहीं आती और उसे प्राणों से हाथ धोना पड़ता है । वैसे तो कौआ पालने की हमारे यहाँ कोई प्रथा नहीं है किंतु इस पक्षी की उपयोगिता है । फसलों को नष्ट करने वाले कीड़े-मकोड़ों को खाकर ये किसानों की सेवा करते हैं । इतना ही नहीं, पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में भी इन कीटभक्षी पक्षियों की अहम भूमिका होती है ।

(सीताराम सिंह 'पंकज')

१. ________________

२. ________________

३. ________________

४. ________________

५. ________________

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

शालेय पर्यटन के लिए आवश्यक सूचनापत्र बनाओ ।

४. क्या करेगा तू बता

– डॉ. सुधाकर मिश्र

क्या करेगा तू बता, सबसे बड़ा धनवान बन,
है अगर बनना तुझे कुछ आदमी, इनसान बन ।
चल कि चलता देखकर तुझको, सहम जाए अचल,
सिर झुकाना ही पड़े, ऐसी न कोई चाल चल ।।

कर्म का अपने, ढिंढोरा पीटना बेकार है
हाथ में लेकर तुला, इतिहास जब तैयार है ।
हैं बुलाते मुक्त मन, संसार के सारे चमन,
शूल बनकर क्या करेगा, तू अमन का फूल बन ।।

सारहीनों को गगन छूना, बहुत आसान है,
सारवानों से धरा की गोद का सम्मान है ।
रत्न का अभिमान, सागर में कभी पलता नहीं,
आँधियों में जो उड़े, उनका पता चलता नहीं ।।

बन अगर बनना तुझे है, प्यार का हिमगिरि विरल,
या खुशी की गंध बन या बन दया-दरिया तरल ।
हाथ बन वह, गर्व से जिसको निहारें राखियाँ,
या कि बन कमजोर के संघर्ष की बैसाखियाँ ।।

सीख मत, बनना बड़ा तू खोखले आधार से,
भाग्य से उपलब्ध वैभव या किसी अधिकार से ।
प्यार से जो जीत ले, सबका हृदय, विश्वास, मन,
मूर्ति वह सत्कर्म की, सद्धर्म की साकार बन ।।

— ० —

परिचय

जन्म : १९३९, भदोही (उ.प्र.)
परिचय : कवित्व का गुण आपको विरासत में प्राप्त हुआ । सुधाकर मिश्र जी का कवि मन गहरे तक पैठ बना चुकी सामाजिक समस्याओं को लेकर सदा आंदोलित होता रहा है । ये समस्याएँ आपकी रचनाओं में स्थान पाती रहीं हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'शांति का सूरज', 'हिमाद्रि गर्जन', 'किरणिका', 'काव्यत्रयी' आदि।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत कविता में डॉ. सुधाकर मिश्र जी ने खोखले जीवन जीने, भाग्य पर निर्भर रहने, छीनकर सुख प्राप्त करने से हमें सचेत किया है । आपने हमें इनसान बनने, शांति फैलाने, प्यार बाँटने आदि के लिए प्रेरित किया है । आपका मानना है कि कमजोर का सहारा बनने, प्रेम से सबका हृदय जीतने में ही जीवन की सार्थकता है ।

शब्द वाटिका

अचल = स्थिर, अटल
ढिंढोरा = डुग्गी बजाकर की गई घोषणा, सूचना देना
शूल = काँटा, विकट पीड़ा
सारवान = अर्थपूर्ण, तात्त्विक
विरल = जो घना न हो, अल्प
खोखला = व्यर्थ, थोथा, खाली
सत्कर्म = अच्छा काम, पुण्य का काम

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

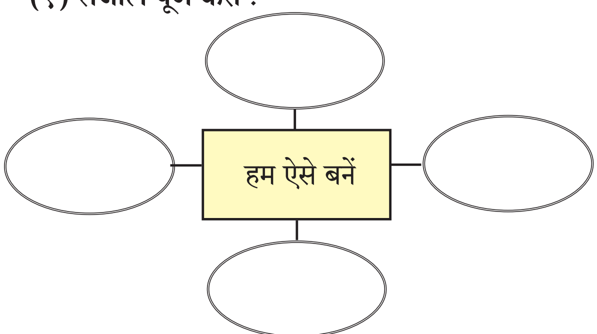

(२) शब्द लिखकर उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

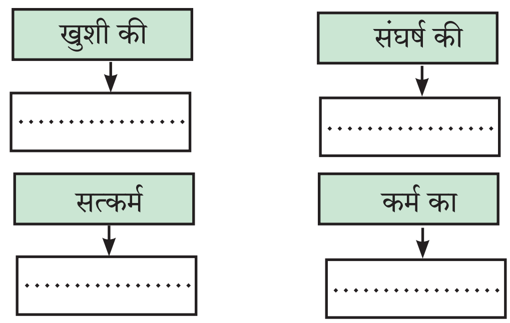

(३) पंक्तियाँ पूरी करो :

सारहीनों, ---------------

-------------- चलता नहीं ।।

(४) संक्षेप में उत्तर लिखो :

१. इनसान बनकर हमें इन बातों को अपनाना है –
२. हमें प्यार से इन्हें जीतना है –

HEFB3Y

सदैव ध्यान में रखो हमें सदैव मानवता की राह पर चलना है ।

कल्पना पल्लवन 'मैं तो इनसान बनूँगा/बनूँगी' इसपर अपने विचार स्पष्ट करो ।

भाषा बिंदु पाठों में प्रयुक्त अव्यय शब्द ढूँढ़कर उनके भेद लिखो तथा उनका स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन 'मैं गणित की पुस्तक बोल रही हूँ,' इस विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन रहीम के किन्हीं चार नीतिपरक दोहों का भावार्थ लिखो ।

५. मन का रोगी

– राम निरंजन शर्मा 'ठिमाऊ'

पहला दृश्य

[मध्यमवर्गीय परिवार का घर । रामेश्वर चिंतामग्न दिखाई देते हैं । सलिल का प्रवेश । वह रामकिशोर के सामने से गुजर जाता है ।]

रामकिशोर : सलिल ! **[सलिल नीची गरदन किए खड़ा हो जाता है ।]**

राम किशोर : कहाँ गए थे ?

सलिल : जी यहीं, राकेश के पास गया था ।

रामकिशोर : तुम्हें हजार बार कह दिया कि इधर-उधर मत घूमा करो । **[माँ का प्रवेश।]**

रामेश्वरी : क्यों रे, तू घर पर नहीं टिकता ! इससे हजार बार कह दिया कि कमरे में बैठकर पढ़ा कर ।

रामकिशोर : तुम्हारा लाड़ला पास होता है प्रमोशन से ! यानी कि दो विषयों में फेल । क्यों रे, शर्म नहीं आती तुझे ?

सलिल : जी !

रामेश्वरी : कहानी सुनने का तो बड़ा चाव है । रात भर कहानी सुनाते रहो ! खेलने के लिए खुला छोड़ दो और नाटक-सिनेमा देखने के लिए तो पाँच कोस चला जाएगा ।

रामकिशोर : जा, अपने कमरे में जाकर चुपचाप पढ़ । **[सलिल नीची गरदन किए चला जाता है ।]**

रामेश्वरी : आप इतना क्यों धमकाते हैं ?

रामकिशोर : तुम्हारे प्यार ने ही तो इसे बिगाड़ दिया है ।

रामेश्वरी : आप भूल जाते हैं कि मैं माँ हूँ और फिर भगवान ने हमें एक ही तो संतान दी है ।

राम किशोर : यह तुम्हारा लाड़-प्यार इसे बरबाद कर देगा । **[सलिल का प्रवेश, कॉपी-पेंसिल हाथ में हैं ।]**

सलिल : पिता जी, यह सवाल कैसे होगा ?

रामकिशोर : अपने मास्टर जी से पूछना । मुझे अब कार्यालय जाने को देर हो रही है ।

सलिल : मास्टर जी ने घर पर काम करने को दिया है ।

रामकिशोर : तो तुमने क्लास में क्यों नहीं पूछा ? अब मेरा दिमाग मत खा, भाग यहाँ से । **[सलिल जाता है ।]**

परिचय

जन्म : १९२८, पिलानी (राज.)
परिचय : आप हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ लेखक हैं । आपकी रचनाएँ प्रेरक, उद्बोधक तथा बाल मनोविज्ञान से भी जुड़ी हैं । आपने हिंदी साहित्य में अमूल्य योगदान दिया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'बालोत्सव', 'बाल कवितावली' आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत एकांकी के माध्यम से 'ठिमाऊ' जी ने स्पष्ट किया है कि कम अंक पाने या परीक्षा में असफल रहने पर बच्चों को डाँटना-फटकारना उचित नहीं है । ऐसी अवस्था में अध्यापकों एवं अभिभावकों को चाहिए कि वे बच्चों का मनोबल ऊँचा करें । प्रताड़ना की जगह उन्हें प्रेरणा दें । ऐसा करने से ही बच्चे प्रगति कर सकेंगे ।

मौलिक सृजन

'मनुष्य को आजीवन विद्‌यार्थी बने रहना चाहिए' पर अपने विचार लिखो ।

संभाषणीय

अपने विद्‌यालय में दसवीं की परीक्षा में सर्वप्रथम आए हुए विद्‌यार्थी का साक्षात्कार लो ।

दूसरा दृश्य

रामकिशोर : (कागज पढ़ते हुए) हिंदी में बीस में से एक, अंग्रेजी में बीस में से जीरो, गणित में बीस में से दो, सामान्य ज्ञान में दस में से दो और सामाजिक विज्ञान में दस में से डेढ़ ।

[रामेश्वरी का प्रवेश ।]

रामेश्वरी : पत्र कहाँ से आया है ? सलिल के मामा का पत्र आए बहुत दिन हो गए । क्यों, सब राजी-खुशी तो हैं न ?

रामकिशोर : यह पत्र सलिल के मामा का नहीं, सलिल के पहले टेस्ट का परिणाम है और साथ ही कक्षाध्यापक का पत्र भी है ।

रामेश्वरी : क्यों, सलिल पास हो गया न ? स्कूल तो रोज जाता है ।

रामकिशोर : तुम्हारा लाड़ला बुरी तरह फेल हुआ है ।

रामेश्वरी : आप निराश मत होइए । सलिल अभी बच्चा है, समझ जाएगा । हाँ, मास्टर जी ने क्या लिखा है ?

रामकिशोर : सुनना चाहती हो ?

रामेश्वरी : हाँ, पढ़िए ।

[रामकिशोर पत्र पढ़ते हैं ।]

रामकिशोर : प्रिय रामकिशोर जी, सलिल के विषय में मैं अपना अध्ययन लिख रहा हूँ । मैंने देखा है कि सलिल हमेशा चुप रहता है-मानो उसके दिल में किसी बात का डर हो, भय हो या संकोच हो । वह तन से तो स्वस्थ है पर मन से नहीं । उसका मन कुछ कहना चाहता है पर सुनने वाला नहीं मिला, ऐसा मैंने देखा है । आप इसके परिणाम को देखकर निराश न हों । इस प्रकार की गिरावट कभी-कभी बच्चों की उन्नति में आ जाया करती है । हमें इसका हल खोजना है ।

धन्यवाद !
भवदीय,
रामनाथ
कक्षाध्यापक - छठी

रामेश्वरी : सलिल आज-कल कुछ घुटा-घुटा-सा तो रहता है ।

रामकिशोर : हाँ, आज से मैंने मास्टर जी को पढ़ाने के लिए बुलाया है। बड़े अच्छे हैं । **(घड़ी देखते हुए)** वे अभी आते ही होंगे । तुम जरा सलिल को बुलाओ ।

[रामेश्वरी का प्रस्थान । अध्यापक महोदय का प्रवेश ।]

अध्यापक : नमस्कार, रामकिशोर जी !

रामकिशोर : नमस्कार । आइए, चंद्रशेखर जी, मैं अभी-अभी आपकी ही बात कर रहा था ।

अध्यापक : कहिए, क्या आज्ञा है ?

राम किशोर : आपसे मैं क्या कहूँ, चंद्रशेखर जी ! आप जानते हैं, वही आदमी सुखी है जिसकी संतान लायक है । यह देखिए, सलिल के पहले टेस्ट का परिणाम और साथ में यह कक्षाध्यापक का पत्र भी है । **[अध्यापक दोनों पढ़ते हैं ।]**

अध्यापक : मैं समझ गया । **[सलिल की माँ का सलिल के साथ प्रवेश ।]**

रामेश्वरी : नमस्कार, मास्टर जी !

सलिल : नमस्ते !

अध्यापक : सलिल तो बड़ा अच्छा लड़का है ।

रामकिशोर : पर मास्टर जी, इसके नंबर देखिए न ! किसी विषय में पास नहीं ।

रामेश्वरी : बोलो सलिल, चुप क्यों खड़े हो ?

अध्यापक : आप इसकी चिंता मत कीजिए । सलिल की जिम्मेदारी मुझपर छोड़िए ।

रामेश्वरी : जी, ठीक है ।

अध्यापक : सलिल अब तुम जाओ । **(सलिल का प्रस्थान)** अब मैं आप लोगों से सलिल के विषय में दो-चार बातें पूछना चाहूँगा । आशा है, आप संकोच नहीं करेंगे ।

रामकिशोर : अवश्य, अवश्य पूछिए ।

अध्यापक : सलिल का पाँचवीं कक्षा में कैसा परिणाम रहा ?

रामेश्वरी : मास्टर जी, पाँचवीं में भी मुश्किल से पास हुआ था ।

अध्यापक : तब आप लोगों ने क्या किया ?

रामकिशोर : हमने उसे खूब धमकाया था ।

अध्यापक : बस यही बुरी बात थी । आपको ऐसा नहीं करना चाहिए था । हम बच्चों के मनोबल को विकसित करके ही उसे एक आदर्श नागरिक बना सकते हैं । क्या आप कभी सलिल के विद्‌यालय जाते हैं ?

रामेश्वरी : मैं तो आज तक नहीं गई ।

रामकिशोर : मैं तो भरती कराने गया था ।

अध्यापक : यह आपकी दूसरी भूल है । आपको कम-से-कम सप्ताह में एक बार विद्‌यालय अवश्य जाना चाहिए और

लेखनीय

मराठी समाचारपत्र के किसी एक परिच्छेद का हिंदी में अनुवाद करो ।

देखना चाहिए कि स्कूल में क्या हो रहा है, अध्यापकों का उद्‌देश्य क्या है और आप उसमें क्या सहायता कर सकते हैं ।

रामेश्वरी : मैं कल ही सलिल के विद्‌यालय जाऊँगी ।

रामकिशोर : आगे से मैं सप्ताह में एक बार सलिल के अध्यापकों से मिला करूँगा ।

अध्यापक : ऐसा करेंगे तो मुझे पूरा विश्वास है कि सलिल में सुधार होगा । अच्छा, अब आज्ञा दीजिए । नमस्कार ! **[दोनों नमस्ते करते हैं ।]**

तीसरा दृश्य

[सलिल बैठक में बैठा हुआ अपने काम में तल्लीन है। राकेश का प्रवेश]

राकेश : नमस्ते भाई सलिल !

सलिल : नमस्ते, राकेश भाई ! कहिए, क्या हाल है ? भाई, मैं तो गृहकार्य में लगा हुआ हूँ और अभी मास्टर जी आने वाले हैं ।

राकेश : तू दो महीने से कमाल कर रहा है । मास्टर जी ने क्या जादू कर दिया है ? अब तो तू सभी विषयों में होशियार होता जा रहा है । कल नाटक देखने चलेगा न ?

सलिल : जरूर चलूँगा।

राकेश : अब तो तुम्हारे पिता जी भी तुम्हें नहीं रोकते। पहले तो न किसी के साथ खेलने की आज्ञा देते थे और न सैर करने की, न पिकनिक की और न सिनेमा जाने की ।

सलिल : अब तो पिता जी रोज मुझको कहानी सुनाते हैं । मुझे पढ़ाते भी हैं । हमारे विद्‌यालय में भी आते हैं और मैं भी उनको सारी बातें बता देता हूँ ।

[राकेश का प्रस्थान। मास्टर जी का प्रवेश]

सलिल : नमस्ते, मास्टर जी !

अध्यापक : नमस्ते! कहो, क्या कर रहे हो ?

सलिल : आपका दिया हुआ काम ।

अध्यापक : कर लिया ?

सलिल : जी हाँ, सभी विषय के काम पूर्ण कर लिए ।

अध्यापक : शाबाश ! अब तुम बहुत अच्छे लड़के हो गए हो । तुम्हारे माता-पिता और विद्‌यालय के अध्यापक सभी तुम्हारे काम से प्रसन्न हैं ।

पठनीय

अंतरजाल की सहायता से वर्ड आर्ट, ग्राफिक्स, पिक्टोग्राफ संबंधी जानकारी पढ़ो और उनका कहाँ-कहाँ प्रयोग किया जा सकता है, सूची बनाओ ।

सलिल : मास्टर जी !

अध्यापक : हाँ-हाँ, कहो, क्या कहना चाहते हो ?

सलिल : कल राकेश के विद्‌यालय में नाटक है। मैं देखना चाहता हूँ।

अध्यापक : जरूर जाना। मैं तुम्हारे पिता जी से अनुमति दिलवा दूँगा। **[रामकिशोर का प्रवेश]**

रामकिशोर : नमस्ते, मास्टर जी !

अध्यापक : नमस्कार, रामकिशोर जी !

रामकिशोर : मैं सलिल के विद्‌यालय से आ रहा हूँ। सभी अध्यापक इसके कार्य से प्रसन्न हैं। यह विद्‌यालय की वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम आया है। यह सब आपके परिश्रम का फल है, मास्टर जी।

अध्यापक : नहीं-नहीं, मेरा इसमें क्या है ! यह तो सलिल की लगन का फल है। **[रामेश्वरी का प्रवेश]**

रामेश्वरी : यह तो ठीक है, मास्टर जी; पर रास्ता तो आपने ही हम सबको दिखाया है।

अध्यापक : आप तो मुझको शर्मिंदा कर रही हैं। अच्छा बेटा सलिल, अब तुम जाओ। तुम्हारे नाटकवाली बात मैं तुम्हारे पिता जी से कह दूँगा। **[सलिल का प्रसन्न मुद्रा में प्रस्थान]**

रामकिशोर : क्या बात है ?

अध्यापक : कल राकेश के विद्‌यालय में नाटक हो रहा है। कृपया आप सलिल को भी नाटक देखने जाने दें।

रामेश्वरी : मैं भी तो जाऊँगी। अपने साथ ले जाऊँगी।

रामकिशोर : चलो, यह और भी ठीक रहेगा।

अध्यापक : रामकिशोर जी, हमें पुरानी परंपराओं को छोड़ना होगा और शिक्षा मनोविज्ञान की बातें अपनानी होंगी। ऐसा करने पर ही देश में हम स्वस्थ नागरिक तैयार कर सकेंगे।

राम किशोर : अब तो मैं उसे छुट्टी में रोज सैर पर भी ले जाता हूँ। मुझसे वह कई प्रकार की बातें पूछता है।

अध्यापक : सही है। हमें बच्चों का विश्वास जीतना चाहिए। विश्वास जीतने के लिए हमें उनका मित्र बनना होगा। हमें उनमें अपने रूखेपन से भय नहीं पैदा करना चाहिए।

रामेश्वरी : यह बात सही है, मास्टर साहब।

रामकिशोर : अब तो सलिल स्कूल का काम अपने आप करता है।

अध्यापक : आपको गृहकार्य के लिए उचित वातावरण बना देना चाहिए। फिर बच्चा स्वयं काम करने लगता है। अच्छा,

अब अनुमति दीजिए । **[दोनों नमस्कार करते हैं ।]**

चौथा दृश्य

[स्थान : वही बैठक का कमरा। शाम का समय है । मास्टर जी सलिल से श्रुतलेखन करवा रहे हैं ।]

रामकिशोर : मास्टर साहब, बधाई हो ! सलिल अब की छमाही परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम आया है । यह देखिए; अंकों की सूची । **[अध्यापक सूची को ध्यान से देखते हैं। रामेश्वरी का प्रवेश]**

रामेश्वरी : क्या बात है? किस बात की खुशी है, मुझे भी मालूम हो ?

राम किशोर : सलिल छमाही परीक्षा में अपनी कक्षा में प्रथम आया है । मिठाई खिलाओ ।

रामेश्वरी : अवश्य खिलाऊँगी, एक दिन उन मास्टर साहब को भी घर बुलाइए न !

रामकिशोर : कौन-से मास्टर जी ?

अध्यापक : इनका मतलब रामनाथ जी से है । वही, जिन्होंने सलिल के विषय में पत्र लिखा था ।

रामकिशोर : ओह, सलिल के कक्षाध्यापक। ठीक है, इसी रविवार को एक छोटी-सी पार्टी रखेंगे । रामनाथ जी से निवेदन करूँगा । और हाँ मास्टर जी, आप आना न भूलना ।

रामेश्वरी : हम आपका उपकार नहीं भूल सकते । आपने मन के रोगी सलिल को स्वस्थ किया है ।

अध्यापक : इसमें उपकार की क्या बात है ? यह तो हम अध्यापकों का कर्तव्य है ।

रामकिशोर : क्या पते की बात कही है मास्टर जी ने । पर सभी अध्यापक आप और रामनाथ जी जैसे नहीं बन सकते ।

अध्यापक : बनना पड़ेगा और यदि नहीं बने तो बच्चों का विकास कैसे होगा ?

रामेश्वरी : अब मैं समझ पाई हूँ कि एक माँ को, पुत्र को अच्छा आदमी बनाने के लिए क्या करना चाहिए ।

रामकिशोर : धीरे-धीरे सब ठीक होगा । जब चंद्रशेखर जी और रामनाथ जी जैसे अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में आएँगे तो अज्ञान और अशिक्षा का अंधकार नष्ट हो जाएगा ।

अध्यापक : अच्छा, अब चलूँ । नमस्कार । **[दोनों नमस्कार करते हैं ।]**

—— ० ——

श्रवणीय

यू-ट्यूब/रेडियो/सी.डी. पर प्रेरणा गीत सुनो और समारोह में सुनाओ ।

शब्द वाटिका

कोस = दूरी नापने का पुराना परिमाण
संकोच = हिचक, लज्जा
मनोबल = आत्मशक्ति, मानसिक बल
गिरावट = कमी, फिसलन

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

पत्र में मास्टर जी ने सलिल के संबंध में लिखी बातें

———— ———— ———— ————

(२) कृति करो :

मास्टर जी द्वारा माता–पिता को दिए गए सुझाव

------

(३) लिखो :

१. सलिल के मास्टर जी के नाम
१. -------
२. -------

२. पिता जी द्वारा सलिल पर लादे गए बंधन
१. -------
२. -------

(४) टिप्पणियाँ लिखो :

१. सलिल के मास्टर जी
२. सलिल के पिता जी
३. सलिल

(५) रिश्ते लिखो :

१. सलिल–रामेश्वरी = ---------
२. रामेश्वरी– रामकिशोर = ---------
३. रामनाथ – सलिल = ---------
४. रामकिशोर–सलिल = ---------

सदैव ध्यान में रखो — जीवन के पथ पर फूलों के साथ काँटे भी होते हैं ।

उपयोजित लेखन — अपने विद्‍यालय के विद्‍यार्थियों द्वारा लगाई गई हस्तकला प्रदर्शनी एवं विक्री का प्रचार करने हेतु विज्ञापन बनाओ ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन — 'प्रकृति एवं प्राणी संबंधी हमारे कर्तव्य' विषय पर अपने विचार लिखो ।

भाषा बिंदु

(१) लिंग परिवर्तन करके वाक्य बनाओ :

मामी जी = ________	आदमी = ________
कक्षाध्यापक= ________	पुत्री = ________
भाई = ________	लेखक = ________
बहन = ________	कवि = ________

१. ________________
२. ________________
३. ________________
४. ________________
५. ________________
६. ________________
७. ________________
८. ________________

HEP75L

(२) संधि पढ़ो और समझो :

दो ध्वनियों का मेल
संधि

१. उपर्युक्त कहानी पढ़ो ।
२. वार्षिक महोत्सव में अतिथि पधारें ।
३. घृतकुमारी वनौषधि है ।
४. स्वच्छ भारत अभियान ।
५. नाविक नाव खेता है ।

→

उपरि + उक्त (इ + उ = यु)
महा + उत्सव (आ + उ = ओ)
वन + औषधि (अ + औ =औ)
सु + अच्छ (उ + अ = व)
नौ + इक (औ + इ = आवि)

इन उदाहरणों में दो स्वरों के मेल से परिवर्तन हुआ है। ये स्वर संधियाँ हैं।

१. यह सब विपत्काल को आमंत्रित करना है ।
२. आपने हिंदी वाङ्मय पढ़ा है ?
३. इस अनुच्छेद से जानकारी प्राप्त करो ।
४. एक-दूसरे के प्रति सदिच्छा रखें ।
५. अहंकार से बचना चाहिए ।

→

विपद् + काल (द् + का = त्का)
वाक् + मय (क् + म = ङ्म
अनु + छेद (उ + छ = च्छ)
सत् + इच्छा (त् + इ = दि)
अहम् + कार (म् + का = ङ्)

इन उदाहणों में व्यंजन ध्वनि के पास स्वर अथवा व्यंजन आने से व्यंजन में परिवर्तन हुआ है, ये व्यंजन संधि के उदाहरण हैं ।

१. मैं पृथ्वी पर निरंतर उपलब्ध हूँ ।
२. मेरा बहिरंग उसी के अनुरूप हो जाता है ।
३. मुझे भी मनस्ताप दे रहा है ।
४. मैं निस्तेज कांति को सतेज बनाती हूँ ।
५. उसके दुष्परिणाम भी भुगतने पड़ते हैं ।

→

निरंतर = निः + अंतर (ः + अं = रं)
बहिरंग = बहिः + अंग (ः + अं = रं)
मनस्ताप = मनः + ताप (ः + ता = स्ता)
निस्तेज = निः+ तेज (ः + ते = स्ते)
दुष्परिणाम = दुः + परिणाम (ः + प = ष्प)

इन शब्दों में विसर्ग के स्वर या व्यंजन से मिलने पर संधि हुई है । अत: ये विसर्ग संधियाँ हैं ।

६. दारागंज के वे दिन

- पुष्पा भारती

उम्र के जिस दौर से गुजर रही हूँ, उसमें या तो नाती-पोतों के साथ खेलना और उलझना अच्छा लगता है या फिर यादों की जुगाली करने में आनंद आता है । आज वसंत पंचमी पर याद आ रहे हैं महाकवि सूर्यकांत 'निराला'। बात १९५१ की है, तब मैं इलाहाबाद विश्वविद्‌यालय में बी.ए. में पढ़ती थी । घर मेरा, दारागंज में था । पिछवाड़े रहते थे महाप्राण निराला । अपने घर के बैठक की बालकनी में खड़े होकर सड़क की ओर देखने पर प्रायः प्रतिदिन ही सुबह-सुबह निराला जी के दर्शन हो जाते थे । दारागंज में हमारे घर के बहुत पास ही गंगा जी का घाट है । तहमद लपेटे नंगे बदन पैदल चलते हुए वह गंगा स्नान के लिए जाते थे । देवतुल्य सुदर्शन व्यक्ति, ऊँची, लंबी, पुष्ट देहयष्टि, उन्नत ललाट, चौड़ी छाती-मदमाती चाल । कोई चाहे न चाहे, हर देखने वाले का माथा झुक जाता और हाथ प्रणाम की मुद्रा में खुद-ब-खुद जुड़ जाते ।

एक दिन तो ऐसा सौभाग्य मिला कि यूँ दूर से प्रणाम न करके मैंने सामने से साक्षात उन्हें आते देखा और प्रणाम किया । मैं गोदी में अपने बहुत सुंदर नन्हे-मुन्ने भतीजे को लिए थी । उन्होंने उसका नाम पूछा तो मैंने बताया कि मेरी माँ ने इसका नाम दिव्यदर्शन रखा है । बड़े प्रसन्न हुए और मेरी गोदी से उसे अपनी गोद में ले लिया । गोद में लेते समय मेरी उँगली में पहना हुए मिजराब उनके हाथ में छू गया तो बोले, ''सितार बजाती हो ?'' मैंने कहा,'जी । बी.ए. के कोर्स में मैंने सितार को एक विषय के रूप में लिया है ।' वह बोले, ''अरे, तब तो खूब सीख लिया होगा । कहाँ रहती हो ?'' मैंने कहा, 'जी हम जहाँ खड़े हैं, वहीं ऊपर की मंजिल पर रहती हूँ ।' वह तुरंत बोले, ''चलो चलते हैं ।'

मेरी तो रूह काँप गई । अरे, सुबह-सुबह एकदम अस्त-व्यस्त पड़ा होगा मेरा कमरा । बैठक में भाईसाहब सोए होंगे । अब क्या करूँ ...? पर भला उन्हें मना भी कैसे किया जा सकता था । रसोई से बाहर आकर मेरी भाभी ने चरण स्पर्श किए । उन्हें स्नेहिल आशीर्वाद मिला । वह बोलीं, ''अहोभाग्य हमारे, पधारिए चाय बनाती हूँ ।'' तो वे बोले, ''चाय नहीं, हमें तो बिटिया का सितार देखना है ।''

मेरे गुरु पं. लालमणि मिश्र जी ने मुझे बहुत अच्छा तरपदार सितार

परिचय

जन्म : १९३५, मुरादाबाद (उ.प्र.)
परिचय : हिंदी साहित्य की महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर पुष्पा भारती जी ने 'मुक्ताराजे' के नाम से लेखन की शुरुआत की । राजस्थान शिक्षा विभाग के आग्रह पर ''एक दुनिया बच्चों की'' का संपादन किया । आपको 'रमा पुरस्कार', 'स्वजन सम्मान', 'भारती गौरव पुरस्कार', 'सारस्वत सम्मान' प्राप्त हुए हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'प्रेम पियाला जिन पिया' (संस्मरण), 'रोचक राजनीति' (कहानी संग्रह), 'सरद संवाद' (साक्षात्कार), 'सफर सुहाने' (यात्रा विवरण), 'अमिताभ आख्यान' (जीवनी) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत संस्मरण में पुष्पा भारती जी ने 'निराला' जी के निश्छल स्वभाव, संगीत प्रेम एवं सहृदयता आदि गुणों को दर्शाया है । पुष्पा भारती जी की स्मृति मंजूषा के ये मोती अनमोल हैं ।

मौलिक सृजन

'बचपन के दिन सुहावने' संबंधी अपने अनुभव लिखो ।

संभाषणीय

'अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत ।' विषय पर वार्तालाप करो ।

श्रवणीय

अपनी माँ से उसके शालेय जीवन का कोई संस्मरण सुनो ।

बनारस से लाकर दिया था । वह बोले, ''तुम्हारे पास तबला है ?'' मैंने तबला निकाला और वहीं जमीन पर बैठकर महाकवि ने मेरे सितार के तारों के सुर मिलवाए । तबला यहाँ-वहाँ ठोककर सुर में किया और बोले, ''लो बजाओ, बताओ क्या सुनाओगी ?'' मैंने लगभग काँपती-थरथराती आवाज में कहा, ''जी, जैजैवंती सुनाऊँ ?'' तबले पर स्वयं थाप मारते हुए बोले, 'वाह-वाह । जरूर सुनाओ ।'' मेरे अंदर भी पता नहीं किन नये प्राणों का संचार हुआ और मैंने मन-ही-मन गुरुदेव को प्रणाम कर बजाना शुरू किया । कितनी देर तक मैं बजाती रही और वह ''अहा-अहा, वाह-वाह'' करते हुए सुनते रहे । मुझे दिन-दुनिया का ख्याल ही नहीं रहा । बस बजाती ही रही । झाला बजाकर जब खत्म हुआ और उनके चरण छुए तो मुझे लगा कि मेरा जन्म सफल हो गया । संगीत सीखना सार्थक हो गया ।

वह तो बस बिना कुछ बोले एकदम फट से खड़े हो गए और बोले, ''चलो मेरे साथ ।'' भाभी चाय-नाश्ता परोस चुकी थी पर वह कहाँ रुकने वाले थे, ''चलो मेरे साथ'', कहकर चल दिए । भाभी ने इशारे से कहा – ''जाओ, साथ में ।'' कहाँ जाना है ? पूछने का प्रश्न ही नहीं था । मंत्रचालित-सी उनके पीछे-पीछे चलने लगी ।

गली के छोर पर रामकृष्ण बजाज की कपड़ों की दुकान थी । वहाँ चबूतरे पर मुझे ले जाकर दुकान मालिक से बोले, ''बिटिया ने बहुत अच्छा सितार सुनाया है । यह जो भी माँगे, इसे दे देना । भले ही सिल्क का थान माँगे, तो भी ना मत करना ।''

और मुझे वहीं छोड़ स्वयं यह जा-वह जा...।

मेरे घर से मिले संस्कार ऐसे थे कि यूँ कुछ भी ले लेने का प्रश्न ही नहीं उठता था । मैंने विनम्रतापूर्वक कहा, ''नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए ।'' वह बोले, ''ऐसा कैसे हो सकता है-निराला जी जब पूछेंगे तो मैं क्या जवाब दूँगा । कुछ-न-कुछ तो आपको लेना ही होगा । बताइए क्या दूँ ?'' मेरे कुछ न लेने की जिद पर सचमुच उन्होंने अपने नौकर को एक थान सिल्क का पकड़ाते हुए कहा, ''जाओ इनके घर तक पहुँचा आओ ।''

अंत में विवश होकर मैंने अपने पसंद की छींट के एक कपड़े की ओर इशारा करके कहा, ''इसमें से एक ब्लाउज का कपड़ा दे दीजिए ।'' वह कपड़ा माथे से लगाया और घर तक ऐसे आई, जैसे जमीन पर नहीं चल रही, बल्कि हवा में उड़ती आ रही हूँ ।

इसी के साथ सुनाती हूँ, इस घटना के बीसियों बरस बाद की एक और बात । तब मैं मुंबई में रहती थी । दोपहर में भारती जी का अपने

कार्यालय से फोन आया कि थोड़ी देर में शिवानी जी घर पहुँच रही हैं । शाम को मुझे आज थोड़ी-सी देर हो जाएगी । तुम उनका खयाल रखना । शिवानी जी आईं, हम दोनों यहाँ-वहाँ की बातें करते रहे । बातों ही बातों में निराला जी की बात चली तो मैंने उन्हें सितारवाला संस्मरण सुनाते हुए कहा, 'कैसी मूर्ख थी मैं उस दिन । सचमुच कम-से कम एक बढ़िया साड़ी तो ला ही सकती थी । मैंने सिर्फ एक ब्लाउज का कपड़ा मात्र लिया और चली आई ।'' तो वह बोलीं, ''तुम्हें पता नहीं पुष्पा कि मैंने क्या मूर्खता की । गुरु रवींद्रनाथ टैगोर ने मुझे अपना पूरा चोगा ही उतारकर दे दिया था । कितनी-कितनी बड़ी मूर्खता की कि उस अमूल्य चोगे को काटकर मैंने पेटीकोट सिला लिए ।'' अब सचमुच मेरे अवाक रह जाने की बात थी -हाय, यह क्या किया दीदी आपने...? आज वह चोगा होता, तो हम जैसे कितने अनगिनत लोग उसे देखकर-छूकर धन्य हो लेते ।

अपनी स्मृति की मंजूषा में ऐसे अनिगनत माणिक-मोती समेटे और भी अनेक 'मूर्ख' और 'महामूर्ख' होंगे जरूर । आपको जब भी जहाँ भी मिलें, मेरा प्रणाम उन्हें दें ।

—— ० ——

लेखनीय

'कला से जीवन समृद्ध बनता है', विषय पर वाक्य लिखो ।

पठनीय

भारतीय लोककथा और लोकगीत का आशय समझते हुए मुखर-मौन वाचन करो ।

शब्द वाटिका

तहमद = लुंगी जैसा वस्त्र
देवतुल्य = ईश्वर समान
मिजराब = सितार बजाने का एक तरह का छल्ला
थान = निश्चित लंबाई का कपड़ा
झाला = एक वाद्‍य
चोगा = घुटनों तक का लंबा ढीला-ढाला पहनावा, लबादा
मंजूषा = पेटी

मुहावरे

रूह काँप जाना = बहुत डरना
मंत्रचालित होना = वश में होना

*** सूचनानुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

निराला जी ऐसे दिखते थे

(२) लिखो :

१. पाठ में आए दो संगीत वाद्‍यों के नाम -

२. पाठ में आए दो शहरों के नाम -

(३) उत्तर लिखिए :

१. लेखिका के गुरु –

२. लेखिका ने सुनाया राग –

३. 'निराला' जी के रहने का स्थान –

४. मुंबई में लेखिका को मिलीं –

सदैव ध्यान में रखो

महान व्यक्तियों की स्मृतियाँ चिरंतन रहती हैं ।

भाषा बिंदु

पाठ से किन्हीं पाँच वाक्यों को चुनकर उनके उद्‌देश्य और विधेय निम्न तालिका में लिखो :

	वाक्य	उद्‌देश्य	विधेय
१.			
२.			
३.			
४.			
५.			

उपयोजित लेखन

मुद्‌दों के आधार पर कहानी लिखो और शीर्षक दो :

गुणग्राहक राजा

कलाकारों को इनाम की घोषणा

इनाम के लिए कलाकारों को आमंत्रित करना

घूसखोर द्वारपाल

एक कवि का आना

द्वारपाल का घूस माँगना

कवि की चतुराई

कवि द्वारा इनाम का आधा हिस्सा देने का आश्वासन

कविताएँ सुनकर राजा का प्रसन्न होना

कवि का सौ कोड़े इनाम माँगना

राजा का आश्चर्य चकित होना

कारण बताना

शीर्षक

HEY379

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

भारतीय शास्त्रीय संगीत की जानकारी लिखो ।

७. धूप की उष्मित छुवन से

– *रामदरश मिश्र*

: एक :

रास्ते में रोशनी मुसकान हो गई,
पहचान थी न तुझसे यों पहचान हो गई ।

कितना मैं चला, चलता रहा, कठिन थी,
देखा जो तुझे राह वो आसान हो गई ।

अब तक तो उदासीन-सी थी मुझसे ये दुनिया,
जाने क्या हुआ आज कदरदान हो गई ।

आई थी खुशी घर मेरे रहने के वास्ते,
दो दिन के लिए हाय वो मेहमान हो गई ।

पल भर को नहीं चैन से सो पाया आदमी,
सपनों से आज नींद परेशान हो गई ।

रोती रही अकेली पड़ी रागिनी उसकी,
लोगों के स्वर मिले तो वो सहगान हो गई ।

: दो :

पेड़ हैं कुछ खुश समझकर आ रहा ऋतुराज है,
भर रही पंखों में चिड़ियों के नई परवाज है ।

हो रही महसूस है खुशबू हवाओं में मधुर,
दिख रहा कुछ आज फूलों में नया अंदाज है ।

धूप की उष्मित छुवन से फूल-सी खिलती त्वचा,
बज रहा जैसे दिशाओं बीच कोई साज है ।

खुल गई सिमटी हुई फसलों के फूलों की हँसी,
उग रही कंठों में गाँवों की नई आवाज है ।

भूल जाओ कल तलक के व्यक्त की नाराजगी,
दोस्त बन खुशियाँ लुटाता देख लो दिन आज है ।

—— ० ——

परिचय

जन्म : १९२४, गोरखपुर (उ.प्र.)
परिचय : प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र जितने समर्थ कवि हैं उतने ही श्रेष्ठ उपन्यासकार और कहानीकार भी हैं । नई कविता, छोटी कविता, लंबी कविता के साथ-साथ गजल में भी आपने अपनी सार्थक उपस्थिति रेखांकित की है । आपके सारे सर्जनात्मक लेखन में गाँव और शहर की जिंदगी के कठोर यथार्थ की गहरी पहचान दिखाई देती है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'पथ के गीत', 'पक गई है धूप', 'कंधे पर सूरज', 'अपने लोग', 'सहचर है समय', 'एक अंतयात्रा', 'हिंदी कविता: आधुनिक आयाम' आदि ।

पद्य संबंधी

यहाँ रामदरश मिश्र की दो गजलें दी गई हैं । प्रथम गजल के शेरों में आपने पहचान के साथी के मिलने से राह के आसान होने, अस्थायी खुशी, जीवन की बेचैनी की बात की है ।

दूसरी गजल में वसंत के आगमन से प्रकृति, प्राणियों में होने वाले परिवर्तन एवं प्रसन्न वातावरण की बात है ।

शब्द वाटिका

कदरदान = गुणग्राहक
रागिनी = गीत-संगीत
सहगान = कई आदमियों का एक साथ मिलकर गाना, समूहगान
परवाज = उड़ान
उष्मित = गर्म
साज = वाद्‌य

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) रिक्त चौखट में सुयोग्य उत्तर लिखो :

१. अब तक कवि से उदासीन रहने वाली - ☐
२. सपनों से परेशान होने वाली - ☐
३. आज कदरदान होने वाली - ☐
४. फूलों में दिखाई देने वाला - ☐

(२) संजाल पूर्ण करो :

वसंत ऋतु के आने से हुए परिवर्तन

(३) कविता की अंतिम दो पंक्तियों का सरल अर्थ लिखो :

कल्पना पल्लवन

'जो बीत गई सो बात गई' इस संदर्भ में अपने विचार लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

प्रकृति में निरंतर अनुशासन दिखाई देता है ।

HF7Y8H

भाषा बिंदु

१. पाठों में आए हुए वाक्य के प्रकार (अर्थ के अनुसार)-पाँच उदाहरण लिखो :
२. निम्न शब्द शुद्ध करके लिखो :
परकृती, शक्ती, मै, नहि

उपयोजित लेखन

छुट्‌टियों में आयोजित संस्कार वर्ग के आयोजक के नाते आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

छह ऋतुओं का वर्णन करते हुए उनकी चित्रसहित जानकारी लिखो ।

८. नरई

– डॉ. श्रीकांत उपाध्याय

न्यू जलपाईगुड़ी । जो ट्रेन अलीपुरद्‌वार और दिल्ली के बीच चलती है, उसका नाम ‘महानंदा एक्सप्रेस’ है । उत्तर बंगाल की प्रमुख नदी है महानंदा ।

हम इलाहाबाद जा रहे हैं । महानंदा एक्सप्रेस का आगमन दोपहर पौने दो बजे है । यह ट्रेन अकसर देर करती जाती है । बड़ी ट्रेनों को रास्ता देना महानंदा का स्वभाव बन गया है और रुकी हुई ट्रेन से उतरकर प्लेटफार्म पर इधर-उधर देखना मेरी फितरत ।

महानंदा प्लेटफॉर्म पर आकर खड़ी हो गई है । कहाँ है ए.सी.टू कोच ? ढूँढ़ते रह जाओगे । टी.टी.ई ए.सी-टू के यात्रियों को ए.सी-थ्री में बर्थ दे रहे हैं । वरिष्ठ नागरिक होने के कारण हमें नीचे की बर्थ मिल गई है । यह मेरे लिए राष्ट्रीय पुरस्कार है । काँच की खिड़की के पार मेरा गाँव-देश है और गाँव-देश के बिंब-प्रतिबिंब । मैं ठहरा बिंब-प्रतिबिंबों का एक अदद द्रष्टा ।

ट्रेन न्यू जलपाइगुड़ी से निकल चुकी है और जो केले और अब केले और अनन्नास की मनोरम दृश्यावली के बीच से गुजर रही है । स्वस्थ-प्रसन्न है अनन्नास की खेती लेकिन मुझे प्लेटफॉर्म पर हॉकर ने अनन्नास के टुकड़े दिए थे, वे लगभग कच्चे थे । छल कहाँ नहीं उपस्थित है ?

किशनगंज आ रहा है । बिहार का सीमांत स्टेशन । बंगाल और बिहार की मिलीजुली भाषा और संस्कृति । अदृश्य सरस्वती के रूप में नेपाली भी विद्‌यमान है । कच्चे-पक्के, घर-झोंपड़े-बाड़ी । बाँस की कोठियाँ । आम-कटहल-केले । कहीं-कहीं सुपारी और नारियल । धान और जूट के खेत । कुछ पोखरों में जूट के बोझ (‘पूरे’ बुंदेलखंडी में) बेहे गए हैं । माटी-पाथर से दाबकर बोझ को पानी में डुबोया गया है जूट को गलाने के लिए । गलने पर ही रेशे उतरते हैं । रेशे ही तो जूट हैं । सूखने के बाद रेशे के लच्छे और गोले जूट की मिलों में पहुँचते हैं और मिलों से टाट-पट्‌टियाँ, बोरे-बोरियाँ तथा न जाने कितने आकार-प्रकार में राष्ट्र की देहरी पर उपस्थित होते हैं । दुर्भिक्ष के वक्ष पर चढ़े अन्न के बोरे कितने गौरवशाली लगते हैं ।

मेरे बचपन में गाँव की गड़ही के पानी में ऐसे ही सनई बेही जाती थी । अब न सनई रही न गड़ही रही । गाँव के दुर्दांत ने गड़ही दबोच ली । सन-सुतली की रस्सियाँ स्मृतिशेष हो गईं ।

परिचय

जन्म : १९३८, प्रतापगढ़ (उ.प्र.)

परिचय : डॉ. श्रीकांत उपाध्याय जी सुपरिचित साहित्यकार हैं । आप राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खड़कवासला, पुणे में ‘रीडर’ के रूप में सेवा दे चुके हैं । आपकी रचनाएँ विविध पत्र-पत्रिकाओं में नियमित छपती रहती हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : ‘ये रहीम दर दर फिरहिं’, ‘बिनु गोपाल बैरिनि भईं कुंजैं’, ‘बागे अनहद तूर’, ‘दस डिग्री चैनल’ आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत यात्रा वर्णन में श्रीकांत जी ने रेल से की गई यात्रा का वर्णन किया है । यात्रा में दिखाई देने वाले सुंदर, प्राकृतिक दृश्यों का मनोहारी वर्णन इस पाठ की विशेषता है ।

मौलिक सृजन

‘सड़क दुर्घटनाओं के कारण एवं रोकने के उपाय’ पर अपने विचार लिखो ।

संभाषणीय

हेल्मेट पहनने के लाभों के बारे में कक्षा में चर्चा करो ।

श्रवणीय

'बालिका दिवस' पर मनाए जाने वाले कार्यक्रम में प्रमुख अतिथि का भाषण सुनते समय भाषा की व्यवस्था, उचित विराम, बलाघात के साथ शुद्‌ध उच्चारण की ओर ध्यान दो ।

जूट के गलने से उसका रंग पानी में उतर आया है । पूरा पोखर कलुआ गया है । ऐसे विषैले पानी में मछलियों को साँस लेने में दिक्कत होती है । वे इच्छामृत्यु माँगती है । साफ-सुथरे पानीवाले पोखरों के किनारे पानी में बंसी डालकर बैठे हैं ध्यानावस्थित लोग । कब मछली कँटिये की डंडी झकझोरे, कब बंसी की डोर मछली को खींचे ।

ये वही लोग हैं, जिन्होंने पिछले तीन महीनों में जी-तोड़ मेहनत की है । जोताई, बोआई, रोपाई, निराई । तब कहीं जाकर धान की हरीतिमा लहराती है । अब उन्हें फुरसत मिली है । बंसी लेकर पोखर के किनारे बैठना उनका शौक है । उनका मछली से गहरा नाता है । इस शौक में तन-मन एकाग्र हो जाता है । महानंदाएँ आती-जाती रहें । न कुछ और दिखाई देता है, न कुछ और सुनाई देता है । दीन-दुनिया से बेखबर ।

और उधर कालियाचक में क्या हो रहा है ? दूर नहीं है मालदा । प्रसिद्‌ध है आम के लिए बंगाल का जिला मालदा । उसी जिले का एक उपनगर है-कालियाचक । कालचक्र का तद्‌भव रूप है-कालियाचक । कितना विद्रूप हो गया है तद्‌भव ।

यह उपनगर बांग्लादेश की सीमारेखा पर अवस्थित है । सीमा रेखा पर बाड़ खड़ी है । बाड़ के दोनों ओर खेत हैं । पुलिस और बी.एस.एफ. है । खेत में मजदूर-किसान काम कर रहे हैं । किंशनगंज के बाद परिदृश्य बदल जाता है । उत्तर बिहार का वह विस्तृत भूभाग आरंभ होता है, जहाँ प्रतिवर्ष बाढ़ का पानी विनाशलीला करता है । जहाँ तक देख पा रहा हूँ-पानी-ही-पानी । पेड़-रूख पानी में । घर-द्‌वार पानी में । कहाँ गए लोग ? कहाँ गए पशु-पक्षी ? बाढ़ तो एक महीने पहले आई थी, लेकिन अभी भी पानी उतरा नहीं है । भौगोलिक दृष्टि से उत्तर बिहार का यह अंचल धँसा हुआ है । प्रतिवर्ष हवाई सर्वेक्षण ।

ऊँची जमीन की विशद पट्‌टी पर रेलवे लाइन बिछी हुई है । महानंदा पानी के आक्षिजित विस्तार के बीच चली जा रही है । कुछ स्टेशनों के करीब राहत शिविर लगे हुए हैं । जनसंख्या विस्फोटक बच्चे खेल-कूद रहे हैं । सर्वहारा परिवार की एक स्त्री शिविर के द्‌वार पर बैठी दर्पण के सामने केश विन्यास कर रही है ।

बिहार का शोक-ओ कोसी ! अगर श्मशान भूमि में भी शिविर लगा दिया जाए तो भी वह विस्थापित परिवार की कुलवधू मसान की पीठ पर बैठकर वेणी संहार करेगी ।

इधर बाढ़ में डूबा बिहार पानी से मुक्ति चाहता है, उधर महाराष्ट्र का मराठवाड़ा और उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड परम वृष्टि पाकर निहाल हो रहे हैं । कटिहार के बाद भू-दृश्य फिर बदलता है । बाढ़ के दृश्य अब

नहीं दिख रहे हैं । शाम का धुँधलका उतर रहा है ।

बिहार रात की बाँहों में और मैं निद्रा के अनंत में ।

सवेरा हो गया है । दक्षिण बिहार की धान मेखला रात में आई और चली गई । मुगलसराय पीछे छूट गया है । महानंदा चुनार-मिरजापुर क्षेत्र में प्रवेश कर चुकी है ।

कहाँ हैं देवकीनंदन खत्री के उपन्यास-चंद्रकांता और चंद्रकांता संतति में वर्णित वे रहस्यमय जंगल और खोह-कंदराएँ ? रेलवे लाइन के आस-पास कुछ जंगली पेड़, कटी-पिटी जमीन और नदी-नाले के पार्श्व में रहने वाले सरपत अवश्य दिख रहे हैं । ये प्रतीक हैं जंगल के, नदी-नाले के । अब हम प्रकृति को प्रतीकों में देखा करेंगे ।

पानी में प्रसन्नचित्त खड़े हैं धान । नीचे रेलवे लाइन के किनारे वर्षा ऋतु ने जगह-जगह जलाशय बना दिए हैं । कुईं से समन्वित हैं ये जलाशय । अचानक एक जलाशय दृष्टि-पथ में आता है और अपनी संपूर्ण दिव्यता के साथ मेरे मानस-फलक पर अंकित हो जाता है । नहीं मिटेगी जन्म-जन्मांतर तक वह छवि ।

जलाशय का पानी उज्ज्वल नीलमणि-सा दमक रहा है । अपने-अपने मृणाल पर प्रार्थनामय मुद्रा में, पानी में खड़ी हैं कुमुदिनियाँ । खिली-अधखिली-अनखिली । पानी पर ठहरे हैं कुमुदिनी-पत्र । पानी के अरण्य में विहार कर रही हैं नन्हीं-नन्हीं मछलियाँ ।

जलाशय के किनारे छिछले पानी में खड़ी है एक घास-नरई । इसमें न कोई गाँठ, न कोई पत्ता । भीतर से पूरी तरह खाली-खोखली । एक नरम शलाका सूर्योन्मुखी ।

कोई देखे, न देखे । कोई चीन्हे, न चीन्हे । कोई जाने, न जाने । सृष्टिकर्ता तो देखता है । सिरजनहार तो चीन्हता है । प्रतिपालक तो जानता है । शायद गंगा पार काशी के मध्यकालीन संत ने नरई के किसी पूर्वज को कहीं देखा था और एक कालजयी साखी रच दी-

सतगंठी कौपीन दै, साधु न मानै संक ।
राम अमलि माता रहै, गिनै इंद्र कौ रंक ।।

भस्मस्नात देह पर सात गाँठों से गठा कौपीन धारण कर साधु जब भागीरथी के तट पर सूर्योदय-सा खड़ा होता है, तो वह जीवन और जगत् का महानायक हो जाता है, जिसका तेज-प्रताप देखकर पंचमहाभूत-पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश रोमांचित हो उठते हैं ।

—— ० ——

लेखनीय

पठित पाठों के कठिन शब्दों का द्विभाषी शब्दकोश तैयार करो ।

पठनीय

प्रसार माध्यमों में प्रकाशित जानकारी की आलंकारिक शब्दावली का प्रभावपूर्ण तथा सहज वाचन करो । जैसे-विज्ञापन आदि ।

शब्द संसार

सनई = छोटा पौधा जिसके रेशों से रस्सी बनाई जाती है
गड़ही = छोटा गड्ढा
दुर्दांत = बेकाबू
द्रष्टा = दूर दृष्टि वाला
दुर्भिक्ष = अकाल, अभाव
सरपत = सरकंडा
अवस्थित = टिका हुआ, ठहरा हुआ
मृणाल = कमल की जड़
कौपीन = लँगोटी

मुहावरा

निहाल होना = आनंदित होना

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) संजाल पूर्ण करो :

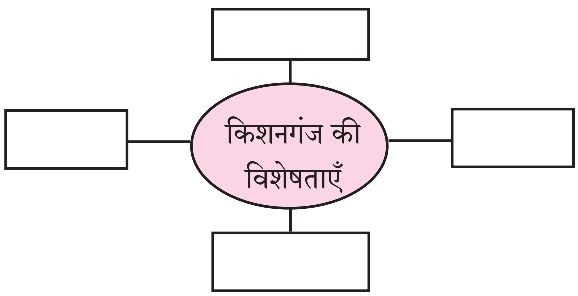

(२) विधानों का सही/गलत वर्गीकरण करो :

१. बंगाल का जिला मालदा आम के लिए प्रसिद्ध है ।
२. शाम का धुँधलका उतर रहा है ।
३. पानी में खड़े हैं प्रसन्नचित्त मछुआरे !
४. जलाशय का पानी उज्ज्वल नीलमणि-सा महक रहा है ।

(३) पाठ में प्रयुक्त खेती से संबंधित शब्द :

१. ____________________
२. ____________________
३. ____________________
४. ____________________

(४) उत्तर लिखो :

१. लेखक ने इस ट्रेन से यात्रा की -------
२. उत्तर बंगाल की प्रमुख नदी -------
३. ऐसे पानी में मछलियों को साँस लेने में दिक्कत होती है -------

सदैव ध्यान में रखो प्राकृतिक सुंदरता बनाए रखना हमारी जिम्मेदारी है ।

भाषा बिंदु पाठों में आए दस वाक्य (रचना के अनुसार) ढूँढ़कर लिखो ।

MFGUAJ

उपयोजित लेखन **सुवचन के आधार पर कहानी लिखो और उसे उचित शीर्षक दो :**
'बहाने नहीं सफलता के रास्ते खोजो !'

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन साइकिल का उपयोग और उसकी आवश्यकता संबंधी अपने विचार लिखो ।

९. रज्जब चाचा

– व्यथित हृदय

गाँव के एक कोने में रज्जब चाचा का एक छोटा-सा मकान है । संध्या, सवेरे, दोपहर, जब जाओ, वे अपने बरामदे में बैठकर कपड़े सीते हुए मिलते हैं । यदि कोई उनसे कहता कि रज्जब चाचा आप थोड़ी देर के लिए विश्राम क्यों नहीं कर लेते तो वे कहते हैं कि जिंदगी विश्राम करने के लिए नहीं, काम करने के लिए मिली है ।

सात-आठ गाँवों के बीच में रज्जब चाचा ही एक ऐसे हैं जो सिलाई का काम करते हैं । विवाह-शादियों और तीज-त्योहारों पर तो उनके पास इतना काम आ जाता है कि उन्हें दम मारने की फुरसत नहीं रहती । वे रात भर अपने पूरे परिवार के साथ जुटे रहते हैं, फिर भी काम निबटा नहीं पाते ।

विवाह-शादियों के दिनों में लोग रज्जब चाचा को बड़े चाव से बुलाते हैं । यदि वे स्वयं जोड़ा-जामा पहनाने के लिए न जाएँ तो उनके प्रेमी बुरा मानते हैं और फिर उन्हें उसके लिए उलाहना देते हैं ।

जोड़ा-जामा पहनाने में रज्जब चाचा को घाटा नहीं होता क्योंकि लोग उन्हें नेग में ऐसी रकम दे देते हैं, जो निश्चित रूप से उनके पारिश्रमिक से अधिक होती है ।

पचहत्तर को पार कर गए हैं । अब भी सुई के छेद में बिना चश्मे के ही धागा डाल लेते हैं । लंबा अँगरखा पहनते हैं । सिर पर सादी टोपी लगाते हैं । घर पर रहते हैं तो पैरों में लकड़ी की चट्टी पहनते हैं और कहीं जाना होता है तो पैरों में मोटे चमड़े की चप्पलें डाल लेते हैं ।

रज्जब चाचा ने जब से होश सँभाला, तब से ही वे बरामदे में बैठकर कपड़े सीते चले आ रहे हैं । युग बदल गया, लोग धरती पर से चंद्रलोक में चले गए पर रज्जब चाचा की मशीन में परिवर्तन नहीं हुआ । वही छोटी मशीन, जो उनके बचपन में थी, आज भी उनके पास है । रज्जब चाचा के समान वह भी बड़ी तेज चलती है । यदि कभी वह बिगड़ जाती है, तो रज्जब चाचा उसे अपने हाथों से ही ठीक कर लेते हैं । वे कहते हैं, ''इस मशीन से उन्हें बड़ा लगाव है, इसके साथ रहते हुए उन्होंने अपनी जिंदगी के उतार-चढ़ाव के बहुत से दिन देखे हैं ।''

रज्जब चाचा का घर अपने गाँव में, अपने मजहब का अकेला घर है । पूरा गाँव हिंदुओं का है पर रज्जब चाचा कभी ऐसा अनुभव नहीं करते कि वे गाँव में अकेले हैं । वे पूरे गाँव को अपना कुनबा और पूरे गाँव के धर्म को अपना मजहब मानते हैं । गाँव के छोटे-बड़े सभी लोग

परिचय

परिचय : व्यथित हृदय जी प्रसिद्ध कथाकार के रूप में जाने जाते हैं । आपकी कहानियाँ ज्ञानवर्धक, शिक्षाप्रद होने के साथ-साथ अत्यंत रोचक भी हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'उपनिषदों की श्रेष्ठ कहानियाँ', 'जीवन रश्मियाँ', 'भारत छोड़ो', 'मनुष्य जो देवता बन गए' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत कहानी में कथाकार ने पारंपरिक हुनर, ग्रामीण सामाजिक ताना-बाना, आपसी प्रेम, सद्भाव, धार्मिक सहिष्णुता, भाईचारा आदि का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया है । उच्च पदस्थ होकर भी अपने से बड़े-बुजुर्गों के प्रति आदर-सम्मान इस कहानी में दर्शनीय एवं अनुकरणीय है ।

मौलिक सृजन

'प्रकृति का नियम है -परिवर्तन' विषय पर अपने विचार लिखो ।

उनका बड़ा आदर करते हैं । गाँव में जब कभी किसी बात पर झगड़ा खड़ा होता है, रज्जब चाचा पहले बुलाए जाते हैं । रज्जब चाचा किसी भी मामले के संबंध में जो कुछ निर्णय कर देते हैं, फिर किसी में साहस नहीं होता कि वह उसे बदले, या न माने ।

अपने गाँव में ही नहीं, दूर-दूर के दूसरे गाँवों में भी रज्जब चाचा की बड़ी प्रतिष्ठा है । वे जहाँ कहीं भी पहुँच जाते हैं, लोग बड़े प्रेम से उनका आदर-सम्मान करते हैं । होली-दीवाली और दशहरे पर दूर-दूर के घरों से उनके पास पकवान पहुँचते हैं । वे स्वयं भी ईद, बकरीद आदि के अवसरों पर बहुत से लोगों के पास सेवइयाँ और मिठाइयाँ भेजा करते हैं ।

रज्जब चाचा के जवानी के दिन थे । गाँव के ठाकुर सूरजभान के लड़के का विवाह था । सूरजभान का लड़का माताप्रसाद गौरवर्ण का हँसमुख, सुशील और पढ़ा-लिखा युवक था । रज्जब चाचा बड़े चाव से विवाह का जोड़ा-जामा लेकर ठाकुर के आँगन में पहनाने के लिए उपस्थित हुए थे ।

रज्जब चाचा ने जब अपने हाथों से दूल्हे को जोड़ा-जामा पहनाकर उसे तैयार किया तो ठाकुर की बाँछें खिल गई । ठाकुर बाग-बाग होकर बोल उठे, ''रज्जब चाचा, तुमने तो कमाल कर दिया । तुम्हारे बनाए हुए जोड़े-जामे में तो मेरा बेटा ऐसा फब रहा है, मानो इंद्र हो ।''

रज्जब चाचा बोल उठे, ''तुम्हारे मुँह में घी-शक्कर ठाकुर, खुदा की मेहर हुई तो तुम्हारा बेटा सचमुच इंद्र ही होगा ।''

युवक माताप्रसाद ने रज्जब चाचा के पैर छुए । रज्जब चाचा ने प्रसन्न होकर उसके सिर पर अपना दाहिना हाथ रखकर कहा, ''खुदा तुम्हें खुश रखे बेटा । तुम सचमुच इंद्र बनकर अपने देश का नाम रोशन करो ।''

ठाकुर ने प्रसन्न होकर रज्जब चाचा को पूरे सौ रुपये का नोट न्योछावर में दिया ।

रज्जब चाचा प्रसन्न होकर आशीर्वाद देते हुए अपने घर चले गए ।

धीरे-धीरे दिन बीतते गए । माताप्रसाद ने वकालत पास की । वह शहर में वकालत करने लगा । कुछ दिनों के पश्चात वह शहर में ही बस गया । ठाकुरसाहब की मृत्यु हो गई ।

पर युग की रफ्तार ने उन पर ही नहीं, उनके काम पर भी प्रभाव अवश्य डाला है । काम तो अब भी उनके पास बहुत आता है, पर अब गाँवों में बहुत से ऐसे लोग पैदा हो गए हैं जो अब अपने कपड़े शहर में सिलवाने लगे हैं ।

रज्जब चाचा बदलते हुए जमाने की निंदा तो कभी नहीं करते पर वे जमाने के प्रभाव में आकर अपनेपन को छोड़ना भी पसंद नहीं करते । वे

संभाषणीय

किसी वृद्ध कलाकार के सम्मानार्थ उसके जीवन के रोचक अनुभवों को साक्षात्कार के रूप में प्रस्तुत करो ।

लेखनीय

अपने आस-पास प्रचलित किसी विशेष लोककला की जानकारी प्राप्त करके लिखो ।

मुसलमान अवश्य हैं, पर वे अपने को किसी से अलग नहीं मानते । उनका कहना है, ‘‘हिंदू, मुसलमान, सिख, ईसाई तो धरती की देन है । खुदा तो केवल इनसान पैदा करता है ।’’

अगहन-पौष के दिन थे । रज्जब चाचा की पोती का विवाह था । वे इस विवाह को बड़ी धूम-धाम से करना चाहते थे । उनका ख्याल था कि अब शायद वे किसी और के विवाह को न देख सकें । अतः वे इस विवाह में अपने मन की हर इच्छा को पूरा कर लेना चाहते थे ।

दोपहर का समय था । रज्जब चाचा अपनी पोती के लिए गहने और कपड़े खरीदने के लिए शहर जा रहे थे । यद्यपि उनके गाँव से होकर शहर तक बस जाती थी पर रज्जब चाचा पैदल ही जा रहे थे । वे पैदल के आदी थे । शहर केवल सात-आठ किमी के फासले पर था ।

रज्जब चाचा जब शहर के पास पहुँचे, तो एक विद्‌यालय के पास भीड़-भाड़ देखकर रुक गए । उन्होंने जब लोगों से पूछा कि यह भीड़-भाड़ क्यों है, तब लोगों ने उन्हें बताया कि शिक्षामंत्री जी आ रहे हैं, यह भीड़ उन्हीं के स्वागत के लिए एकत्र हुई है ।

पर रज्जब चाचा को शिक्षामंत्री से क्या लेना-देना ? वे उस भीड़-भाड़ की ओर देखते हुए शहर की ओर चल पड़े । जैसे ही वे शहर की ओर मुड़े, दनदनाती हुई एक कार आ पहुँची । रज्जब चाचा ने बड़ी कोशिश की कि वे शीघ्र ही कार के लिए रास्ता छोड़ दें पर शरीर बूढ़ा होने के कारण उन्हें कुछ क्षण तो लग ही गए और कार को रुक जाना पड़ा ।

पहरे पर नियुक्त सिपाही ने दौड़कर रज्जब चाचा को डाँट लगाई और उन्हें पकड़कर पटरी पर कर दिया ।

कार चली पर फिर रुक गई । सहसा कार का द्‌वार खुला और एक प्रौढ़ व्यक्ति बाहर निकले । वे कोई और नहीं, स्वयं मंत्री महोदय थे । वे किसी और को अवसर न देकर शीघ्र दौड़कर रज्जब चाचा के पास जा पहुँचे । उन्होंने कुछ कदम के फासले से ही पुकारते हुए कहा, ‘‘रज्जब चाचा, रज्जब चाचा ।’’

रज्जब चाचा जब तक कुछ कहें न कहें, मंत्री महोदय ने दौड़कर उनके चरण स्पर्श कर लिए । रज्जब चाचा ने बिना पहचाने हुए ही दोनों हाथों से उन्हें पकड़कर अपने सीने से लगा लिया । रज्जब चाचा ने जब उन्हें अपने सीने से लगाते हुए उनकी मुखाकृति को गौर से देखा, तो हठात उनके मुख से निकल पड़ा, ‘‘माताप्रसाद ! तुम माताप्रसाद हो ।’’

मंत्री महोदय बोल उठे, ‘‘हाँ, रज्जब चाचा, मैं माताप्रसाद ही हूँ । आपने ही तो मुझे ‘इंद्र’ बनने का आशीर्वाद दिया था ।’’

रज्जब चाचा की आँखें सजल हो गईं । उनकी आँखों से आनंद और

पठनीय

विविध विषयों पर आधारित विभिन्न साहित्यिक रचनाओं की पाठ्‌यसामग्री और साहित्यिक दृष्टि से आए विचारों को ध्यान में रखते हुए द्रुत वाचन करो ।

प्रसन्नता की बूँदें टपककर गिरने लगीं । उनकी आँखों के आँसू के उत्तर में मंत्री जी की आँखें सजल हो उठीं । उन्होंने अपने आँसुओं में बहुत से स्मृति चित्र देखे, फिर कुशल-क्षेम और हाल-चाल ! रज्जब चाचा ने उन्हें बताया कि उनकी पोती का विवाह दस दिसंबर को है ।

मंत्री महोदय ने अपनी डायरी में १० दिसंबर के दिन कुछ लिखकर रज्जब चाचा को बड़ी नम्रता से नमस्कार किया और फिर चले गए ।

रज्जब चाचा ने भी अपनी आँखों से आँसू पोंछते हुए शहर का रास्ता पकड़ा ।

१० दिसंबर का दिन था । सूर्य डूब चुका था । रज्जब चाचा अपनी पोती के विवाह के कामकाज को लेकर बहुत व्यस्त थे । उनके पैरों में जैसे विद्‌युत की-सी गति पैदा हो गई थी ।

सहसा एक कार आकर रज्जब चाचा के दरवाजे पर रुकी । रज्जब चाचा ने आश्चर्यचकित होकर कार की ओर देखा । कार का द्‌वार खोलकर मंत्री माताप्रसाद उतर रहे थे ।

रज्जब चाचा ने दौड़कर माताप्रसाद को पकड़कर अपनी छाती से लगा लिया । उनके मुख से अपने-आप ही निकल पड़ा, ‘‘अरे बेटा, तुमने क्यों कष्ट किया ।’’

रज्जब चाचा की आँखें भर आईं । उन्हें बड़े आदर से अपने बरामदे में ले जाकर कुर्सी पर बिठाया । सारे गाँव में बिजली की तरह खबर फैल गई ।

मंत्री महोदय को उसी दिन, रात में राजधानी जाना था । अतः उन्होंने शीघ्र ही चाय-पानी करके रज्जब चाचा से छुट्‌टी ली । रज्जब चाचा और गाँव के लोग उन्हें कार तक पहुँचाने के लिए आए । मंत्री जी ने रज्जब चाचा के पैरों को छूकर कार में बैठते हुए कहा, ‘‘चाचा, आप क्या करते हैं ?’’

रज्जब चाचा ने उत्तर दिया, ‘‘यहीं बरामदे में पुरानी मशीन से सिलाई करता हूँ ।’’

कुछ दिनों के बाद लोगों ने बड़े आश्चर्य के साथ देखा कि रज्जब चाचा के दो नई मशीने आ गईं । उन्होंने दो बेरोजगार युवकों को अपने पास काम पर रख लिया । बाद में गाँव वालों को पता चला कि वे मशीनें मंत्री महोदय ने भेजी थीं । अब रज्जब चाचा खूब खुश रहने लगें ।

—— ० ——

श्रवणीय

यातायात की समस्याएँ एवं उपायों पर किसी सड़क सुरक्षा अधिकारी का भाषण सुनो ।

शब्द वाटिका

नेग = शुभ अवसर पर दी जाने वाली भेंट

चट्टी = एड़ी की तरफ खुला हुआ जूता

फबना = जँचना

मेहर = दया, कृपा

मुहावरे

बाँछें खिल जाना = बहुत आनंदित होना

बाग-बाग होना = बहुत खुश होना

सीने से लगाना = प्यार से मिलना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

रज्जब चाचा की विशेषताएँ

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
ठाकुर		मंत्री महोदय
रज्जब चाचा		सूरजभान
माताप्रसाद		जोड़ा-जामा
दूल्हा		दर्जी

(३) कारण लिखो :

१. रज्जब चाचा के पैरों में जैसे विद्‌युत की-सी गति पैदा हो गई थी -------

२. रज्जब चाचा का गाँव में अकेला होने का अनुभव न करना -------

(४) उत्तर लिखो

'रज्जब चाचा को केवल अपने गाँव में ही नहीं बल्कि दूसरे गाँवों में भी बड़ी प्रतिष्ठा है ।'

सदैव ध्यान में रखो मनुष्य को अपने कार्य से आदर प्राप्त होता है ।

भाषा बिंदु पाठों में आए काल सूचक दस वाक्य लिखकर उनका अन्य कालों में परिवर्तन करो ।

उपयोजित लेखन 'मेरे पिता जी' विषय पर निबंध लिखो ।

HFQQC7

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन दूरभाष से भ्रमणध्वनि तक के परिवर्तन सूचित करने वाले चित्रों का संकलन करो ।

१०. बातें प्रेमचंद की

– *अवधनारायण मुद्‌गल*

परिचय

जन्म : १९३३, आगरा (उ.प्र.)
मृत्यु : २०१५, (नई दिल्ली)
परिचय : अवधनारायण मुद्‌गल हिंदी साहित्य के वरिष्ठ चिंतक, लेखक, संपादक एवं यात्रा लेखक थे । आपने 'सारिका' पत्रिका का २७ वर्षों तक संपादन किया । छंदबद्‌ध और छंदमुक्त दोनों प्रकार की कविताएँ आपने लिखीं हैं । आपका रचना संसार लघुकथाओं, व्यंग्यों, निबंधों तक फैला हुआ है । आपको साहित्य अकादमी द्‌वारा सम्मानित किया गया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'वामा' एवं 'छाया-मसूर', 'पत्रिकाओं का संपादन', 'मेरी कथा-यात्रा', 'कबंध' (कहानी-संग्रह), 'मुंबई की डायरी', 'एक फलांग का सफरनामा' आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत आलेख में मुद्‌गल जी ने प्रेमचंद के गाँव, उनके बचपन, उनके शौक आदि का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है । प्रेमचंद के बचपन की शरारतें, भोलापन, शौक, माँ की कमी आदि की छाप उनकी रचनाओं में भी देखने को मिलती है ।

मौलिक सृजन

'यदि मैं लेखक/कवि होता तो' विषय पर अपने विचार लिखो ।

बच्चो, तुमने अपनी किताबों में प्रेमचंद की मजेदार कहानियाँ पढ़ी होंगी । हम तुम्हें बताते हैं कि प्रेमचंद कैसे थे ? उनका बचपन कैसा था ? उनके बचपन की घटनाओं का असर उनकी कहानियों और बड़े-बड़े उपन्यासों पर कैसे पड़ा ?

दक्षिण के एक हिंदी प्रेमी थे, नाम था-चंद्रहासन । उनके मन में प्रेमचंद के दर्शनों की बड़ी इच्छा थी । एक बार वे काशी आए । प्रेमचंद उन दिनों काशी में ही रहते थे । शाम को वे प्रेमचंद के घर आए । काफी देर बाहर खड़े रहे लेकिन कोई नजर नहीं आया । बेकार खाँसने-खूँसने का भी कोई नतीजा नहीं निकला । तंग आकर दरवाजे पर आए और कमरे में झाँका । अंदर एक आदमी था । वह फर्श पर बैठकर कुछ लिख रहा था । उसके चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूँछें थीं । चंद्रहासन ने सोचा, शायद प्रेमचंद जी इस आदमी को बोलकर लिखाते होंगे । उन्होंने आगे बढ़कर कहा, ''मैं प्रेमचंद जी से मिलना चाहता हूँ ।''

फर्श पर बैठे आदमी ने नजरें उठाकर ताज्जुब से आगंतुक को देखा, कलम रख दी और ठहाका लगाते हुए कहा, ''खड़े-खड़े मुलाकात करेंगे क्या! बैठिए और मुलाकात कीजिए -मैं ही....''

प्रेमचंद जी से ऐसी ही एक मुलाकात बस्ती निवासी ताराशंकर 'नाशाद' ने की थी । उन दिनों प्रेमचंद जी लखनऊ में अमीनुद्‌दौला पार्क के सामने रहते थे । 'नाशाद' साहब उनसे मिलने लखनऊ आए । अमीनुद्‌दौला पार्क के पास उन्हें एक आदमी मिला । उस आदमी ने कहा, ''चलिए, मैं आपको उनसे मिलवा दूँ ।''

वह आदमी आगे-आगे चला और 'नाशाद' साहब पीछे-पीछे । मकान में पहुँचकर उस आदमी ने 'नाशाद' को बैठने के लिए कहा और अंदर चला गया । जरा देर बाद वह कुरता पहनकर निकला और बोला, ''अब आप प्रेमचंद से बात कर रहे हैं...''

ऐसी और भी बहुत-सी घटनाएँ हैं जो प्रेमचंद की बेबाकी, सादगी और भोलेपन की कहानी सुनाती हैं । प्रेमचंद के चरित्र की यही बेबाकी, सादगी और भोलापन उनके कथापात्रों में भी है । उनके साहित्य पर सबसे ज्यादा असर उनके बचपन की घटनाओं का पड़ा है । तुम्हें पता है कि प्रेमचंद का बचपन ठीक तुम लोगों की ही तरह शैतानियों और शरारतों से भरा था । लो, मैं तुम्हें उनके बचपन के चंद वाकयात सुनाता हूँ...

जब तुम बनारस से आजमगढ़ जाने वाली सड़क पर चलोगे तो शहर से करीब चार मील के फासले पर एक गाँव पड़ता है –लमही । यह छोटा–सा गाँव है । इसमें सभी जातियों के पैंतीस–चालीस घर हैं । यही उस गाँव की आबादी है । इसी गाँव में मुंशी अजायबलाल के घर प्रेमचंद जी का जन्म हुआ ।

मुंशी अजायबलाल नेक तबीयत के आदमी थे । घर–बाहर सब जगह वह अपनी बिसात भर दूसरों की मदद करते थे । वैसे बिसात ही कितनी थी – दस रुपए पर डाकमुंशी हुए थे और चालीस रुपये तक पहुँचते–पहुँचते रिटायर हो गए । संयोग से पत्नी भी उनको अपने अनुकूल ही मिली । देखने में जितनी सुंदर, स्वभाव में उतनी ही कोमल ।

लेकिन उन्हें एक दुःख था–उनके बच्चे नहीं जीते थे । दो लड़कियाँ हुईं और दोनों जाती रहीं । गाँव की औरतों ने शोर मचा दिया, ‘‘आनंदी का अपने मैके जाना ठीक नहीं है, वहाँ भूत लगते हैं ।’’

भूत–प्रेत की बात तो दीगर है लेकिन यह सच है कि उसके बाद तीसरी लड़की जिंदा रही । उसका नाम सुग्गी था । उसके छह–सात साल बाद शनिवार ३१ जुलाई १८८० को प्रेमचंद का जन्म हुआ । पिता ने इनका नाम धनपत और ताऊ ने नवाब रखा । नवाब में माँ के प्राण बसते थे ।

प्रेमचंद माँ के बेहद लाड़ले थे और शरारत कहिए या चुहल, उनकी घुट्टी में पड़ी थी । आए दिन शरारतें करते रहते और घर पर उलाहना पहुँचता रहता ।

फसल के दिनों में किसी के खेत में घुसकर ऊख तोड़ लाना, मटर उखाड़ लाना रोज की बात थी । इसके लिए खेत वालों की गालियाँ भी खानी पड़ती थीं लेकिन लगता है कि उन गालियों से ऊख और मीठी, मटर और मुलायम हो जाती थीं । उलाहने होते, घर में डाँट–फटकार भी पड़ती लेकिन एक–दो रोज में फिर वही रंग–ढंग ।

ढेला चलाने में भी नवाब बड़े तेज और उस्ताद लड़के थे । टिकोरे पेड़ में आते और उनकी चाँदमारी शुरू हो जाती । ऐसा ताककर निशाना मारते कि दो–तीन ढेलों में ही आम जमीन पर । पेड़ का रखवाला चिल्लाता ही रह जाता और नवाब की मंडली आम बीन–बटोरकर नौ–दो ग्यारह हो जाती । वह लड़कों का सरताज थे । आज भी लोग बखान करते हैं । गुल्ली–डंडे में भी माहिर । एक टोल लगा और गुल्ली वह गई, करीब सौ–डेढ़ सौ गज दूर ।

बचपन में मिले कजाकी की याद उन्हें कभी नहीं भूली । उन दिनों उनके पिता आजमगढ़ की एक तहसील में थे । नवाब पिता के पास

संभाषणीय

विभिन्न संवेदनशील मुद्‌दों/विषयों पर समाज में होने वाली चर्चाओं के बारे में अपने अभिभावक/शिक्षकों से प्रश्न पूछो ।

लेखनीय

अपने पसंदीदा लेखक की जानकारी संक्षेप में लिखो ।

थे । डाकिया कजाकी बड़ा ही हँसमुख और जिंदादिल था । वह रोज शाम को डाक का थैला लेकर आता, रात भर रहता और सवेरे डाक लेकर चला जाता । ज्यों ही शाम के चार बजते, नवाब सड़क पर खड़े होकर कजाकी का इंतजार करने लगते । थोड़ी ही देर में कजाकी कंधे पर बल्लम रखे, उसकी झुनझुनी बजाता दिखाई देता । जैसे ही वह उन्हें देखता, दौड़ने लगता । वह भी उसकी ओर दौड़ लगा देते और अगले पल कजाकी का कंधा नवाब का सिंहासन बन जाता । वे अपने आपको हवा के घोड़े पर महसूस करते ।

डाक का थैला रखकर वह बच्चों के साथ किसी मैदान में निकल जाता । उनके साथ खेलता, बिरहे सुनाता और कहानियाँ सुनाता । उसे चोरी, डाके, मारपीट और भूत-प्रेतों की सैकड़ों कहानियाँ याद थीं । उसकी कहानियों में चोर और डाकू सच्चे योद्धा होते थे, जो लूटकर दीन-दुखी प्राणियों का पालन करते थे । नवाब को उसकी कहानियों में ही सबसे ज्यादा मजा आता था । वे किस्से उनके अंदर भविष्य के कहानीकार का बीज रोप रहे थे ।

अब कुछ-कुछ बचपनी शौक देख लिए जाएँ - नवाब को गुड़ खाने का बेहद शौक था । गुड़ चुरा-चुराकर भी खाया करते थे । कहते थे - ''गुड़ मिठाइयों का बादशाह है ।'' गुड़ की चोरी का एक वाकया उन्होंने बयान किया है - ''अम्मा तीन महीने के लिए अपने मैके या मेरे ननिहाल गई थीं और मैंने (अकेले ही) तीन महीने में एक मन गुड़ का सफाया कर दिया था । जाते वक्त अम्मा ने एक मन गुड़ लेकर मटके में रखा और उसके मुँह पर एक सकोरा रखकर मिट्टी से बंद कर दिया । मुझे सख्त ताकीद कर दी कि मटका न खोलना । मेरे लिए थोड़ा-सा गुड़ एक हाँड़ी में रख दिया था । वह हाँड़ी मैंने एक हफ्ते में सफाचट कर दी । मुझे गुड़ का कुछ ऐसा चस्का पड़ गया कि हर वक्त वही नशा सवार रहता । मेरा घर में आना, गुड़ के लिए शामत आना था । एक हफ्ते में हाँड़ी ने जवाब दे दिया । मटका खोलने की सख्त मनाही थी और अम्मा के घर आने में अभी पौने तीन महीने बाकी थे । एक दिन तो मैंने बड़ी मुश्किल से जैसे-तैसे सब्र किया लेकिन दूसरे दिन एक आह के साथ सब्र जाता रहा और मटके की एक मीठी चितवन के साथ होश रुखसत हो गया । अपने को कोसता, धिक्कारता- ''गुड़ तो खा रहे हो, मगर बरसात में सारा शरीर सड़ जाएगा, गंधक का मलहम लगाए घूमोगे, कोई तुम्हारे पास बैठना भी न पसंद करेगा ।'' कसमें खाता-विद्‌या की, माँ की, भाई की,ईश्वर की मगर सब बेसूद और वह मन भर का मटका पेट में समा गया ।''

बालक प्रेमचंद को दूसरा शौक रामलीला देखने का था-इस शौक के बारे में भी उन्होंने खुद ही लिखा है-एक जमाना वह था, जब मुझे भी रामलीला में आनंद आता था । आनंद तो बहुत हल्का शब्द है, उसे उन्माद कहना चाहिए । संयोगवश उन दिनों मेरे घर से बहुत थोड़ी दूरी पर रामलीला का मैदान था और जिस घर में लीलापात्रों का रूप-रंग भरा जाता था, वह तो मेरे घर से बिल्कुल मिला हुआ था ।

दो बजे दिन से पात्रों की सजावट होने लगती थी । उनकी देह में रामरज पीसकर पोती जाती, मुँह में पाउडर लगाया जाता और पाउडर के ऊपर लाल, हरे, नीले रंग की बुँदकियाँ लगाई जाती थीं । एक ही आदमी इस काम में कुशल था । वही बारी-बारी से तीनों पात्रों (राम, लक्ष्मण, सीता) का शृंगार करता था । रंग की प्यालियों में पानी लाना, रामरज पीसना, पंखा झलना मेरा काम था । रामचंद्र पर मेरी कितनी श्रद्‌धा थी ! अपने पाठ की चिंता न कर उन्हें पढ़ा दिया करता था, जिससे वह फेल न हो जाएँ । मुझसे उम्र ज्यादा होने पर भी वह नीची कक्षा में पढ़ते थे । लेकिन वही रामचंद्र (निषाद लीला में) नौका पर बैठे ऐसे मुँह फेरे चले जाते थे, मानो मुझसे जान-पहचान ही नहीं । नकल में भी असल की कुछ न कुछ बू आ ही जाती है । रामलीला समाप्त हो गई थी । राजगद्‌दी होने वाली थी । रामचंद्र की इन दिनों कोई बात भी न पूछता था, न घर ही जाने की छुट्टी मिलती थी । चौधरी साहब के यहाँ से एक सीधा कोई तीन बजे दिन को मिलता था, बाकी सारे दिन कोई पानी को भी नहीं पूछता । मेरी श्रद्‌धा ज्यों की त्यों थी ।

मेरी दृष्टि में वह अब भी रामचंद्र ही थे । घर पर मुझे खाने की कोई चीज मिलती, वह लेकर रामचंद्र को दे आता । कोई मिठाई या फल मिलते ही बेतहाशा चौपाल की ओर दौड़ता । चलते समय भी रामचंद्र जी को कुछ नहीं मिला । मेरे पास दो आने पैसे पड़े हुए थे । मैंने पैसे उठा लिए और जाकर शरमाते-शरमाते रामचंद्र को दे दिए । उन पैसों को देखकर रामचंद्र टूट पड़े, मानो प्यासे को पानी मिल गया । वही दो आने पैसे लेकर तीनों मूर्तियाँ विदा हुईं । केवल मैं ही उनके साथ कस्बे के बाहर तक पहुँचाने आया ।

इस तरह माँ और दादी के प्यार में लिपटे हुए प्रेमचंद के बचपन के दिन बड़ी मस्ती में बीत रहे थे । आसमान से इस बच्चे का सुख न देखा गया और उसी साल माँ ने बिस्तर पकड़ लिया । नवाब अभी पूरे आठ साल के भी नहीं हुए थे कि माँ चल बसी और उसी दिन वह नवाब, जिसे माँ पान के पत्ते की तरह फेरती थीं-कभी सर्दी से, कभी

पठनीय

'मानसरोवर' कहानी संग्रह द्‌वितीय खंड से कोई एक कहानी कक्षा में पढ़कर सुनाओ ।

गर्मी से और कभी सिहानेवालों की डाँट से । देखते-देखते सयाना हो गया । अब उसके सिर पर तपता हुआ नीला आसमान था, नीचे जलती हुई भूरी धरती थी । पैरों में जूते न थे, बदन पर साबुत कपड़े न थे, इसलिए नहीं कि यक-ब-यक पैसे का टोटा पड़ गया था बल्कि इसलिए कि इन सब बातों की फिक्र रखने वाली माँ की आँखें मुँद गई थीं, बाप यों भी कब माँ की जगह ले पाता है ? उसपर वे काम के बोझ से दबे रहते ।

बारह-तेरह वर्ष की उम्र तक पहुँचते-पहुँचते उनमें वे बुराइयाँ आ गईं, जो बिना माँ के बच्चों के अंदर आ जाती हैं । पता नहीं माँ का प्यार किसी अनजाने ढंग से बच्चे को सँवारता रहता है । दोनों में से किसी को पता नहीं चलता, पर वह छाया अपना काम करती रहती है । वह प्यार छिन जाए, सिर पर से वह हाथ हट जाए तो एक ऐसी कमी महसूस होती है जो बच्चे को अंदर से तोड़ देती है और नवाब भी अंदर से टूट गए । यह कमी इतनी गहरी, इतनी तड़पाने वाली थी कि बार-बार उन्होंने अपनी कहानियों और उपन्यासों में ऐसे पात्रों को रचा, जिनकी माँ सात-आठ साल की उम्र में जाती रही और फिर उनकी दुनिया सूनी हो गई । 'कर्मभूमि' का अमरकांत ऐसा ही पात्र है ।

'ईदगाह', 'बड़े भाई साहब', 'कर्मभूमि', 'गबन' और 'गोदान' ऐसी रचनाएँ हैं, जिनमें नवाब (प्रेमचंद) के बचपन की शरारतें, भोलापन, शौक और माँ की कमी समाई हुई है । और भी बहुत-सी कहानियाँ हैं, जिनमें उनका बचपन खेलता हुआ नजर आता है ।

—— ० ——

श्रवणीय

रेडियो, यू-ट्यूब पर प्रेमचंद जी की किसी कहानी का नाट्य रुपांतर, उसमें निहित प्रमुख विचार, विवरण प्रमुख बिंदु सुसंगति से व्यक्त करो ।

शब्द वाटिका

दीगर = अन्य, दूसरा
टिकोरा = आम का छोटा कच्चा फल
चाँदमारी = किसी तल पर बने हुए बिंदुओं पर गोली चलाने या निशाना लगाने का अभ्यास
बल्लम = बरछा, भाला

मुहावरे

नौ-दो ग्यारह होना = भाग जाना
हवा के घोड़े पर सवार होना = कल्पना करना
ठहाका लगाना = जोर से हँसना
शामत आना = विपत्ति आना
सफाचट करना = खत्म करना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

पाठ में उल्लिखित प्रेमचंद जी की रचनाएँ

(२) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

लमही में इनके घर-परिवार थे

(३) उत्तर लिखो :

१. प्रेमचंद जी के शौक

२. इनमें गुड़ रखा था

(४) संक्षेप में लिखो :

१. प्रेमचंद जी का बचपन
२. डाकिया कजाकी
३. रामलीला

(५) कजाकी को इनकी कहानियाँ याद थीं -

(६) नाम लिखो :

प्रेमचंद
- की माता जी
- के पिता जी
- की बहन

सदैव ध्यान में रखो

बचपन के कुछ प्रसंग तथा घटनाएँ संस्मरणीय होती हैं ।

उपयोजित लेखन

विद्यालय में 'वृक्षारोपण अभियान' के उपलक्ष्य में वृक्षारोपण करने हेतु अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य की अनुमति प्राप्त करने हेतु पत्र लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

हिंदी के प्रसिद्ध चार साहित्यकारों की जानकारी वाले चार्ट बनाओ ।

MFZLDU

भाषा बिंदु **समास पढ़ो और समझो :**

द्‌विगु समास

१. देश की शान तिरंगा है ।
२. पंचतंत्र की बाल-कहानियाँ लोकप्रिय हैं ।
३. गर्मी के दिनों में दोपहर को विश्राम आवश्यक है ।
४. बच्चे चौराहे पर खड़े थे ।

१. तीन रंगों का समाहार
२. पंच तत्वों का समाहार
३. दो पहरों का समाहार
४. चार रास्तों का समाहार

समस्त पद के पूर्व पक्ष में संख्यावाचक विशेषण

तत्पुरुष समास

१. सैनिक देशरक्षा के लिए सीमा पर तैनात हैं ।
२. मधुर आवाज ईश्वरप्रदत्त होती है ।
३. गौशाला में बहुत गायें थीं ।
४. हमें पराधीन नहीं होना चाहिए ।

१. देश की रक्षा
२. ईश्वर द्‌वारा प्रदत्त
३. गौ के लिए शाला
४. पर के अधीन

उत्तरपद प्रधान तथा पूर्वपद गौण होता है ।

बहुव्रीहि समास

१. उल्लू निशाचर प्राणी है ।
२. बारहसिंगा जंगली प्राणी है ।
३. पतझड़ में वृक्ष सूने हो जाते हैं ।
४. गणेश जी को गजानन भी कहते हैं ।

१. निशा में विचरण करने वाला
२. बारह सींगोंवाला
३. झड़ जाते हैं पत्ते जिस ऋतु में
४. हाथी जैसा मुख है जिसका

पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे पद की ओर संकेत

द्‌वंद्‌व समास

१. सच्चा दोस्त सुख-दुख में साथ देता है ।
२. स्वस्थ शरीर में स्वस्थ तन-मन होता है ।
३. माँ के लिए उसका बच्चा छोटा-बड़ा नहीं होता ।
४. हमें दाल-रोटी बहुत पसंद है ।

१. सुख और दुख
२. तन और मन
३. छोटा और बड़ा
४. दाल और रोटी

समस्त पद में दोनों पद समान होते हैं

अव्ययीभाव समास

१. गांधीजी आजीवन देशसेवा में जुटे रहे ।
२. बच्चे ने भरपेट भोजन किया ।
३. सभी को यथाशक्ति कार्य करना चाहिए ।
४. प्रतिदिन प्रार्थना करनी चाहिए ।

१. जीवन भर
२. पेट भर
३. शक्ति के अनुसार
४. प्रत्येक दिन

पहला पद अव्यय तथा प्रधान होता

कर्मधारय समास

१. अधपका भोजन नहीं खाना चाहिए ।
२. खिलौना बच्चे को प्राणप्रिय होता है ।
३. महापुरुषों की वाणी प्रेरणादायी होता है ।
४. तालाब में नीलकमल मिला है ।

१. आधा है जो पका
२. प्राणों के समान प्रिय
३. महान है जो पुरुष
४. नीला है जो कमल

पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य

११. मयूर पंख

– *जगन्नाथदास 'रत्नाकर'*

(१)

भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की,
सुधि ब्रज गाँवनि मैं पावन जबै लगी ।

कहै 'रतनाकर' गुवालिनि की झौरि-झौरि,
दौरी-दौरी नंद पौरि आवन तबै लगीं ।

उझकि-उझकि पद कंजनि के पंजनि पै,
पेखि-पेखि पाती छाती छोहनि छबै लगीं ।

हमकौं लिख्यो है कहा, हमकौं लिख्यो है कहा,
हमकौं लिख्यो है कहा, कहन सबै लगीं ।।

(२)

कान्ह दूत कैधौं ब्रह्म दूत ह्वै पधारे आप,
धारे प्रन फेरन को मति ब्रजबारी की ।

कहै 'रतनाकर' पै प्रीति-रीति जानत ना,
ठानत अनीति आनि नीति लै अनारी की ।

मान्यो हम, कान्ह ब्रह्म एक ही कह्यो जो तुम,
तौहूँ हमें भावति ना भावना अन्यारी की ।

जैहै बनि-बिगरि न बारिधिता बारिधि की,
बूँदता बिलैहै बूँद बिबस बिचारी की ।।

(३)

धाई जित-तित तैं बिदाई हेत उधव की,
गोपी भरीं आरति सँम्हारति न साँसुरी ।

कहै 'रतनाकर' मयूर-पच्छ कोउ लिए,
कोउ गुंज अंजली उमाहै प्रेम आँसुरी ।।

भाव-भरी कोउ लिए रुचिर सजाव दही,
कोउ मही मंजु दाबि दलकति पाँसुरी ।

पीत पट नंद जसुमति नवनीत नयौ,
कीरति-कुमारी सुरबारी दई बाँसुरी ।।

—— ० ——

परिचय

जन्म : १८६६, काशी (उ.प्र.)
मृत्यु : १९३२
परिचय : रत्नाकर जी केवल कवि ही नहीं, वरन वे अनेक भाषाओं के ज्ञाता तथा विद्‌वान भी थे । आपकी ब्रज भाषा की रचनाओं में सुंदर प्रयोगों एवं ठेठ शब्दावली का प्रभाव रहा है । आप स्वच्छ कल्पना के कवि हैं। आपके द्‌वारा प्रस्तुत दृश्यावली सदैव अनुभूति से सनी और संवेदना को जागृत करने वाली है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'हिंडोला', 'उद्‌धव शतक', 'शृंगार लहरी', 'गंगावतरण', 'गंगा लहरी' आदि ।

पद्‌य संबंधी

यहाँ प्रसंग उस समय का है, जब श्रीकृष्ण के कहने पर उद्‌धव जी गोकुल में आए हुए हैं । प्रस्तुत पदों में गोपियों की उत्सुकता, उद्‌धव जी का ज्ञानबोध, गोपियों के उत्तर का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया गया है । अंतिम पद में गोकुलवासी श्रीकृष्ण के लिए अलग-अलग भेंट भेजते नजर आते हैं । इन पदों में ब्रज भाषा का सौंदर्य दर्शनीय है ।

शब्द वाटिका

दौरी–दौरी = दौड़–दौड़कर
झौरि–झौरि = झुंड–के–झुंड
पेखि–पेखि = देख–देखकर
ठानत = निश्चय
बारिधि = समुद्र
रुचिर = प्रिय
गुवालिन = ग्वालिन

✻ **सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

गोकुलवासियों द्वारा कृष्ण के लिए भेजे उपहार

(२) कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो :

१. उझकि–उझकि – ---------- लगी ।
२. मान्यो हम, – ---------- अन्यारी की ।

(३) कृष्ण के लिए कविता में प्रयुक्त नाम →

(४) रिश्ते लिखो :

नंद ------ ← कान्हा → जसुमति ------

(५) निम्न काव्य पंक्तियों का अर्थ लिखो :

भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की,
सुधि ब्रज गाँवनि मैं पावन जबै लगी ।

कल्पना पल्लवन मेरी कल्पना की 'दही–हाँड़ी' पर अपने विचार लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो भारतीय संस्कृति की परंपरा प्राचीन है ।

भाषा बिंदु सकर्मक एवं अकर्मक क्रियाओं के पाँच–पाँच वाक्य लिखो ।

उपयोजित लेखन विद्यालय में मनाए गए 'स्वच्छता दिवस समारोह' का वृत्तांत लिखो ।

MG9HFH

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन भक्त सूरदास का कृष्ण की बाल लीलाओं के गुणगान से संबंधित कोई एक पद एवं उसका अर्थ लिखकर चार्ट बनाओ ।

१. इनसान

– रमानाथ अवस्थी

मैंने तोड़ा फूल, किसी ने कहा–
फूल की तरह जियो औ' मरो
सदा इनसान ।

भूलकर वसुधा का शृंगार,
सेज पर सोया जब संसार,
दीप कुछ कहे बिना ही जला
रात भर तम पी–पीकर पला

दीप को देख, भर गए नयन
उसी क्षण
बुझा दिया जब दीप, किसी ने कहा
दीप की तरह जलो, तम तुम हरो
सदा इनसान ।

रात से कहने मन की बात,
चंद्रमा जागा सारी रात,
भूमि की सूनी डगर निहार,
डाल आँसू चुपके दो–चार

डूबने लगे नखत बेहाल
उसी क्षण
छिपा गगन में चाँद, किसी ने कहा–
चाँद की तरह, जलन तुम हरो
सदा इनसान ।

साँस–सी दुर्बल लहरें
पवन ने लिखा जलद को लेख,
पपीहा की प्यारी आवाज,
हिलाने लगी इंद्र का राज,

धरा का कंठ सींचने हेतु
उसी क्षण
बरसे झुक–झुक मेघ, किसी ने कहा–
मेघ की तरह प्यास तुम हरो
सदा इनसान ।

—— ० ——

परिचय

जन्म : १९२६, फतेहपुर (उ.प्र.)
मृत्यु: २००२
परिचय : अवस्थी जी ने आकाशवाणी में प्रोड्यूसर के रूप में कई वर्षों तक काम किया। आप लोकप्रिय मधुर गीतकार थे । आपको उत्तर प्रदेश सरकार ने पुरस्कृत किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'सुमन–सौरभ' 'आग और पराग', 'राख और शहनाई', 'बंद न करना द्‌वार' आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत नवगीत में रमानाथ अवस्थी जी का कहना है कि प्रत्येक इनसान को फूल की तरह अपने अच्छे कर्मों की खुशबू समाज में फैलानी चाहिए । आपने सभी को दीपक की तरह अज्ञान के अंधकार को दूर करने, चंद्रमा की तरह दूसरों के दुख–ताप को हरने, बादलों की तरह प्यासों की प्यास बुझाने के लिए प्रेरित किया है ।

कल्पना पल्लवन

'मानवता मनुष्य का मौलिक अलंकार है,' स्पष्ट करो ।

शब्द वाटिका

नखत = नक्षत्र
डगर = मार्ग, रास्ता
निहारना = गौर से देखना
बेहाल = जिसकी हालत या दशा अच्छी न हो, व्याकुल, बेचैन
जलद = बादल
जलन = ताप

MGIDH5

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) उचित शब्दों से पूर्ण करो :

दीप की तरह -
↓
फूल की तरह -
↓
चाँद की तरह -
↓
मेघ की तरह -

(२) 'मैंने तोड़ा फूल, किसी ने कहा- फूल की तरह जियो औ मरो, सदा इनसान' पंक्तियों का अर्थ लिखो ।

(३) कविता में इस अर्थ में आए शब्द लिखो :

धरती =		आकाश =	
अँधियारा =		हवा =	
पृथ्वी =		बादल =	

सदैव ध्यान में रखो

अच्छे कर्मों से ही मनुष्य की पहचान होती है ।

भाषा बिंदु

पढ़े हुए पाठों से सभी प्रकार के विरामचिह्न ढूँढ़कर उनके नाम लिखो तथा उनका वाक्यों में प्रयोग करो:

______________________ ______________________
______________________ ______________________
______________________ ______________________

उपयोजित लेखन

किसी मराठी निमंत्रण पत्रिका का हिंदी में अनुवाद करो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

विभिन्न ऋतुओं में मानव के खान-पान तथा वेशभूषा में आने वाले परिवर्तनों की सूची बनाओ ।

२. चप्पल

– कमलेश्वर

कहानी बहुत छोटी-सी है । मुझे ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टिट्यूट की सातवीं मंजिल पर जाना था । गाड़ी पार्क करके आई.सी.यू. में चला तो मन बहुत ही दार्शनिक हो उठा था । कितना दुख और कष्ट है इस दुनिया में...लगातार एक लड़ाई मृत्यु से चल रही है...और उसके दुख और कष्ट को सहते हुए लोग सब एक-से हैं । दर्द और यातना तो दर्द और यातना ही है-इसमें इनसान और इनसान के बीच भेद नहीं किया जा सकता । दुनिया में हर माँ के दूध का रंग एक है । खून और आँसुओं का रंग भी एक है । दूध, खून और आँसुओं का रंग नहीं बदला जा सकता...शायद उसी तरह दुख, कष्ट और यातना के रंगों का भी बँटवारा नहीं किया जा सकता।

मुझे अपने उस मित्र की बातें याद आईं, जिसने मुझे संध्या के संगीन ऑपरेशन की बात बताई थी और उसे देख आने की सलाह दी थी । उसी ने मुझे आई.सी.यू. में संध्या के केबिन का पता बताया था । आठवें फ्लोर पर ऑपरेशन थियेटर्स हैं और सातवें पर संध्या का आई.सी.यू.। मेजर ऑपरेशन में संध्या की बड़ी आँत काटकर निकाल दी गई थी और अगले अड़तालीस घंटे क्रिटिकल थे...

रास्ता इमरजेंसी वार्ड से जाता था । एक बेहद दर्दभरी चीख़ इमरजेंसी वार्ड से आ रही थी... वह दर्दभरी चीख तो दर्दभरी चीख ही थी । कोई घायल मरीज असह्य तकलीफ से चीख रहा था । उस चीख से आत्मा दहल रही थी... चीख और दर्द की चीख में क्या अंतर था ! दूध, खून और आँसुओं के रंगों की तरह चीख की तकलीफ भी तो एक-सी थी । उसमें विषमता कहाँ थी ?

मेरा वह मित्र जिसने मुझे संध्या को देख आने की फर्ज अदायगी की तरह बोला था-अपना क्या है ? रिटायर होने के बाद गंगा किनारे एक झोंपड़ी डाल लेंगे । आठ-दस ताड़ के पेड़ लगा लेंगे... मछली मारने की एक बंसी... दो चार मछलियाँ तो दोपहर तक हाथ आएँगी ही... रात भर जो ताड़ी टपकेगी; उसे फ्रिज में रख लेंगे... ?

और क्या.. मॉडर्न साधु की तरह रहेंगे ! और क्या चाहिए.. पेंशन मिलती रहेगी और माया-मोह क्यों पालें ? न कोई दुख, न कोई कष्ट.. लेकिन तुम जाके संध्या को देख जरूर आना.. वह क्रिटिकल है..

मेरा मित्र अपने भविष्य के बारे में कितना निश्चिंत था, यह देखकर मुझे अच्छा लगा था ।

परिचय

जन्म : १९३२, मैनपुरी (उ.प्र.)
मृत्यु : २००७, फरीदाबाद (उ.प्र.)
परिचय : कमलेश्वर जी बीसवीं शती के सबसे सशक्त लेखकों में से एक समझे जाते हैं । कहानी, उपन्यास, पत्रकारिता, स्तंभ लेखन, फिल्म पटकथा जैसी अनेक विधाओं में आपने अपनी लेखन प्रतिभा का परिचय दिया है । अपने ७५ साल के जीवन में १२ उपन्यास, १७ कहानी संग्रह और करीब १०० फिल्मों की पटकथाएँ लिखीं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'जॉर्ज पंचम की नाक', 'माँस का दरिया, 'इतने अच्छे दिन', 'कोहरा, 'कथा-प्रस्थान', 'मेरी प्रिय कहानियाँ' (कहानी संग्रह) 'जो मैंने जिया', 'यादों के चिराग', 'जलती हुई नदी' (संस्मरण) 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ', 'लौटे हुए मुसाफिर', 'डाक बंगला', 'समुद्र में खोया हुआ आदमी', 'काली आँधी', वही बात', 'आगामी अतीत', 'सुबह-दोपहर-शाम', 'रेगिस्तान', 'कितने पाकिस्तान' (उपन्यास) ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत कहानी में कमलेश्वर जी ने अस्पताल के वातावरण, वहाँ के कर्मचारियों के व्यवहार आदि का विस्तृत वर्णन किया है । यहाँ 'एक पिता द्वारा अपने उस पुत्र की चप्पलों को सहेजना, जिसका एक पैर काट दिया गया है', इस घटना का बड़ा ही मार्मिक वर्णन किया गया है ।

मौलिक सृजन

'यदि मैं डॉक्टर होता' तो ...'
अपने विचार लिखो ।

यह बात सोच-सोचकर मुझे अभी तक अच्छा लग रहा था, सिवा उस चीख के जो इमरजेंसी वार्ड से अब तक आ रही थी... और मुझे सता रही थी... इसीलिए लिफ्ट के आने में जो देरी लग रही थी; वह मुझे खल रही थी ।

आखिर लिफ्ट आई ! 'सेवन-सात' मैंने कहा और संध्या के बारे में सोचने लगा । दो-तीन वार्डबॉय तीसरी और चौथी मंजिल पर उतर गए ।

पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट रुकी तो कुछ लोग ऊपर जाने के लिए इंतजार कर रहे थे । इन्हीं लोगों में था वह पाँच साल का बच्चा- अस्पताल की धारीदार बहुत बड़ी-सी कमीज पहने हुए... शायद उसका बाप, वह जरूर ही उसका बाप होगा, उसे गोद में उठाए हुए था... उस बच्चे के पैरों में छोटी-छोटी नीली हवाई चप्पलें थीं जो गोद में होने के कारण उसके छोटे-छोटे पैरों में उलझी हुई थीं ।

अपने पैरों से गिरती हुईं चप्पलों को धीरे से उलझाते हुए बच्चा बोला-'बाबा ! चप्पल...।'

उसके बाप ने चप्पलें उसके पैरों में ठीक कर दीं । वार्ड बॉय व्हील चेयर बढ़ाते हुए बोला-''आओ, इसमें बैठो !'' बच्चा हल्के-से हँसा । वार्ड बॉय ने उसे कुर्सी में बैठा दिया... उसे बैठने में कुछ तकलीफ हुई पर वह कुर्सी के हत्थे पर अपने नन्हे-नन्हे हाथ पटकता हुआ भी हँसता रहा । दर्द का अहसास तो उसे भी था पर दर्द के कारण का अहसास उसे बिलकुल नहीं था । वह कुर्सी में ऐसे बैठा था जैसे सिंहासन पर बैठा हो... कुर्सी बड़ी थी और वह छोटा । वार्ड बॉय ने कुर्सी को पुश किया । वह लिफ्ट में आ गया । उसके साथ ही उसका बाप भी । उसका बाप उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरता रहा ।

लिफ्ट सात पर रुकी, पर मैं नहीं निकला । दो-एक लोग निकल गए । लिफ्ट आठ पर रुकी । यहीं ऑपरेशन थियेटर थे। दरवाजा खुला तो एक नर्स जिसके हाथ में सब पर्चे थे, उसे देखते हुए बोली-''आ गया तू !''

उस बच्चे ने धीरे से मुस्कराते हुए नर्स से जैसे कहा-'हाँ !' उसकी आँखें नर्स से शर्मा रही थीं और उनमें बचपन की बड़ी मासूम दूधिया चमक थी । व्हील चेयर एक झटके के साथ लिफ्ट से बाहर गई । नर्स ने उसका कंधा हल्के से थपका...।

'बाबा ! चप्पल'-वह तभी बोला-'मेरी चप्पल'...

उसकी एक चप्पल लिफ्ट के पास गिर गई थी । उसके बाप ने वह चप्पल भी उसे पहना दी । उसने दोनों पैरों की उँगलियों को सिकोड़ा

और अपनी चप्पलें पैरों में कस लीं ।

लिफ्ट बंद हुई और नीचे उतर गई ।

वार्ड बॉय बच्चे की कुर्सी को पुश करता हुआ ऑपरेशन थियेटर वाले बरामदे में मुड़ गया। नर्स उसके साथ ही चली गई । उसका बाप धीरे-धीरे उन्हीं के पीछे चला गया।

तब मुझे याद आया कि मुझे तो सातवीं मंजिल पर जाना था । संध्या वहीं थी । मैं सीढ़ियों से एक मंजिल उतर आया । संध्या के डॉक्टर पति ने मुझे पहचाना और आगे बढ़कर मुझसे हाथ मिलाया । हाथ की पकड़ में मायूसी और लाचारी थी । कुछ पल खामोशी रही । फिर मैंने कहा-''मैं कल ही वापस आया तभी पता चला। यह एकाएक कैसे हो गया ?''

''नहीं, एकाएक नहीं, ... चार घंटे ऑपरेशन में लगे...एंड यू नो, वी डॉक्टर्स आर वर्स्ट पेशेंट्स !'' वह संध्या के बारे में भी कह रहे थे। संध्या भी डॉक्टर थी ।

''आप तो सब समझ रहे होंगे । संध्या को भी एक-एक बात का अंदाज हो रहा होगा !'' मैंने कहा, ''लेकिन वह बहुत करेजसली बिहेव कर रही है !'' संध्या के डॉक्टर पति ने कहा-''बोल तो सकती नहीं... पल्स भी गर्दन के पास मिली... आर्टिफिशियल रेस्परेशन पर है... एक तरह से देखिए तो उसका सारा शरीर आराम कर रहा है और सब कुछ आर्टिफिशिल मदद से ही चल रहा है । संध्या के डॉक्टर पति ज्यादातर बातें मुझे मेडिकल टर्म्स में ही बताते रहे और मैं उन्हें समझने की कोशिश करता रहा । बीच-बीच मैं इधर-उधर की बातें भी करता रहा ।

''संध्या का भाई भी आज सुबह पहुँच गया...किसी तरह उसे जापान होते हुए टिकट मिल गया !'' उन्होंने बताया ।

''यह बहुत अच्छा हुआ ।'' मैंने कहा ।

''आप देखना चाहेंगे ?''

''हाँ, अगर पॉसिबिल हो तो ...।''

''आइए, देख तो सकते हैं। भीतर जाने की इजाजत नहीं है। वैसे तो सब डॉक्टर फ्रेंड्स ही हैं, पर ...।''

''नहीं-नहीं, वो ठीक भी है...।''

''वह बोल भी नहीं सकती... वैसे आज कांशस है... कुछ कहना होता है तो लिख के बता देती है ।'' उन्होंने कहा और एक केबिन के सामने पहुँचकर इशारा किया ।

मैंने शीशे की दीवार से संध्या को देखा। वह पहचान में ही नहीं आई । डॉक्टर और नर्स उसे अटैंड भी कर रहे थे और फिर इतनी नलियाँ

पठनीय

सड़क यातायात के लिए आवश्यक सावधानियों के बारे में पढ़ो और अपने सहपाठियों से चर्चा करो।

और मशीनें थीं कि उनके बीच संध्या को पहचानना मुश्किल भी था ।

संध्या होश में थी । डॉक्टर को देख रही थी । डॉक्टर उसका एक हाथ सहलाते हुए उसे कुछ बता रहा था । मैंने संध्या को इस हाल में देखा तो मन उदास हो गया । वह कितनी लाचार थी । बीमारी और समय के सामने आदमी लाचार होता है । कुछ कर नहीं पाता । मैंने मन-ही-मन संध्या के लिए प्रार्थना की । किससे की; यह नहीं मालूम। ऐसी जगहों पर आकर भगवान पर ध्यान जाता भी है ।

हम आई.सी.यू. से हटकर फिर बरामदे में आ गए । वहाँ बैठने के लिए कोई जगह नहीं थी । बरामदे बैठने के लिए बनाए भी नहीं गए थे । संध्या या डॉक्टर की बहन नीचे चादर बिछाए बैठी थी । डॉक्टर के कुछ दोस्त एक समूह में खड़े थे ।

''अभी तो बाद में, एक ऑपरेशन और होगा ।'' संध्या के डॉक्टर पति ने बताया-''तब छोटी आँत को सिस्टम से जोड़ा जाएगा । खैर, पहले वह स्टेबलाइज करे, फिर रिकवरी का सवाल है । इसमें ही करीब तीन महीने लग जाएँगे । उसके बाद मैं सोचता हूँ-उसे अमेरिका ले जाऊँगा !''

''यह ठीक रहेगा !''

इसके बाद हम फिर इधर-उधर की बातें करते रहे । मैं संध्या की संगीन हालत से उनका ध्यान भी हटाना चाहता था । इसके सिवा मैं और कर भी क्या सकता था और डॉक्टर के सामने यों खामोश खड़े रहना अच्छा भी नहीं लग रहा था ।

मैं खिड़की के पास जाकर खड़ा हो गया । बाहर लू चल रही थी । नीचे धरातल पर कुछ लोग आ-जा रहे थे । वे ऊपर से बहुत लाचार और बेचारे लग रहे थे । और मेरे मन से सबके शुभ के लिए सद्भावना की नदियाँ फूट रही थीं ।

लू के एक थपेड़े ने मेरा मुँह झुलसा दिया । डॉक्टर अपने चिंताग्रस्त शुभचिंतकों के समूह में खड़े थे और सबके चेहरे कुछ ज्यादा सतर्क थे ।

ब्लड प्रेशर गिर रहा है...

आई.सी.यू. में डॉक्टरों और नर्सों की आमदरफ्त से लग रहा था कि सामने कोई कठिन परिस्थिति है । कुछ देर बाद पता चला कि सूई कुछ ढीली हो गई थी । उसे ठीक कर दिया गया है और ब्लड प्रेशर ठीक से रिकॉर्ड हो रहा है । सबने राहत की साँस ली । मौत से लड़ना कोई मामूली काम नहीं है । ईश्वर ने तो मौत पैदा की ही है, पर मौत तो मनुष्य भी पैदा करता है । एक तरफ जीवन के लिए लड़ता है और दूसरी तरफ मौत भी बाँटता है-यह द्वंद्व ही तो जीवन है । यह द्वंद्व और द्वैत

लेखनीय

किसी एक पाठ के लिखने का उद्‌देश्य और दृष्टिकोण समझो । इस पाठ की संवाद के रूप में संक्षेप में प्रभावी लिखित प्रस्तुति करो ।

ही जीवित रहने की शर्त है और अद्‌वैत या समानता तक पहुँचने का साधन और आदर्श भी । आध्यात्मिक अद्‌वैत जब भौतिकता की सतह पर आता है और मनुष्य के प्रश्न सुलझाता है तभी तो वह समवेत समानता का दर्शन कहलाता है...।

मैंने पलटते हुए लिफ्ट की तरफ देखा । डॉक्टर मेरा आशय समझ गए थे लेकिन तभी राजनीतिज्ञ-से उनके कोई दोस्त आ गए थे । शुरू की पूछताछ के बाद वे लगभग भाषण-सा देने लगे-''अब तो अग्नि मिसाइल के बाद भारत दुनिया का सबसे शक्तिशाली तीसरा देश हो गया है और आने वाले दस वर्षों में हमें अब कोई शक्ति महाशक्ति बनने से नहीं रोक सकती । इंग्लैंड और फ्रांस की पूरी जनसंख्या से ज्यादा बड़ा है आज भारत का मध्यवर्ग । अपनी संपन्न्ता में...भारतीय मध्यवर्ग जैसी शक्ति और संपन्नता उन देशों के मध्यवर्ग के पास भी नहीं है...।''

तभी एक चिंताग्रस्त नर्स तेजी से गुजर गई और सन्नाटा छा गया । चिंता के भारी क्षण जब कुछ हल्के हुए तो मैंने फिर लिफ्ट की तरफ देखा। डॉक्टर साहब समझ गए-आपको ढाई -तीन घंटे हो गए । क्या-क्या काम छोड़ के आए होंगे...। और वे लिफ्ट की ओर बढ़े । लिफ्ट आई पर वह ऊपर जा रही थी । डॉक्टर साहब को मेरी खातिर रुकना न पड़े, इसलिए मैं लिफ्ट में घुस गया ।

लिफ्ट आठ पर पहुँची । वहाँ ज्यादा लोग नहीं थे पर एक स्ट्रेचर था और दो-तीन लोग । स्ट्रेचर भीतर आया उसी के साथ लोग भी । स्ट्रेचर पर चादर में लिपटा बच्चा पड़ा हुआ था । वह बेहोश था । वह ऑपरेशन के बाद लौट रहा था । उसके गालों और गर्दन के रेशमी रोएँ पसीने से भीगे हुए थे । माथे पर बाल भी पसीने के कारण चिपके हुए थे।

उसका बाप एक हाथ में ग्लूकोज की बोतल पकड़े हुए था । ग्लूकोज की नली की सूई उसकी थकी और दूधभरी बाँह की धमनी में लगी हुई थी । उसका बाप लगातार उसे देख रहा था । वह शायद पसीने से माथे पर चिपके उसके बालों को हटाना चाहता था, इसलिए उसने दूसरा हाथ ऊपर किया पर उस हाथ में बच्चे की चप्पलें उसकी उँगलियों में उलझी हुई थीं । वह छोटी-छोटी नीली हवाई चप्पलें....।

मैंने बच्चे को देखा । फिर उसके निरीह बाप को ।

मेरे मुँह से अनायास निकल ही गया-''इसका''

''इसकी टाँग काटी गई है''-वार्ड बॉय ने बाप की मुश्किल हल कर दी ।

''ओह ! कुछ हो गया था ?'' मैंने जैसे उसके बाप से ही पूछा । वह मुझे देखकर चुप रह गया... उसके ओठ कुछ बुदबुदाकर थम गए...

श्रवणीय

कसरत करने से होने वाले लाभ सुनो और उनकी सूची बनाओ ।

लेकिन वह भी चुप नहीं रह सका। एक पल बाद ही बोला-''जाँघ की हड्‌डी टूट गई थी...।''

''चोट लगी थी ?''

''नहीं, सड़क पार कर रहा था...एक गाड़ी ने मार दिया ।'' वह बोला और मेरी तरफ ऐसे देखा, जैसे टक्कर मारने वाली गाड़ी मेरी ही थी।

फिर वह वीतराग होकर अपने बेटे को देखने लगा।

पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट रुकी। बच्चों का वार्ड इसी मंजिल पर था । लिफ्ट में आने वाले कई लोग थे। वे सब स्ट्रेचर निकाले जाने के इंतजार में बेसब्री से रुके हुए थे... वार्ड बॉय ने झटका देकर स्ट्रेचर निकाला तो बच्चा बोरे की तरह हिल उठा, अनायास ही मेरे मुँह से निकल गया-''धीरे-से ...।''

''ये तो बेहोश है; इसे क्या पता?'' स्ट्रेचर को बाहर पुश करते हुए वार्ड बॉय ने कहा ।

उस बच्चे का बाप खुले दरवाजे से टकराता हुआ बाहर निकला तो एक नर्स ने उसके हाथ की ग्लूकोज की बोतल पकड़ ली ।

लिफ्ट के बाहर पहुँचते ही उसके बाप ने उसकी दोनों नीली हवाई चप्पलें वहीं कोने में फेंक दीं...फिर कुछ सोचकर कि शायद उसका बेटा होश में आते ही चप्पलें माँगेगा, उसने पहले एक चप्पल उठाई... फिर दूसरी भी उठा ली और स्ट्रेचर के पीछे-पीछे वार्ड की तरफ जाने लगा ।

मुझे नहीं मालूम कि उसका बेटा जब होश में आएगा तो क्या माँगेगा, चप्पल माँगेगा या चप्पलों को देखकर अपना पैर माँगेगा ...।

बेसब्री से इंतजार करते लोग लिफ्ट में आ गए थे। लिफ्टमैन ने बटन दबाया । दरवाजा बंद हुआ। और वह लोहे का बंद कमरा नीचे उतरने लगा ।

— ० —

संभाषणीय

हेल्मेट पहनकर वाहन चलाने से होने वाले लाभ बताओ ।

सदैव ध्यान में रखो

व्यक्ति को संवेदनशील होना ही चाहिए ।

शब्द वाटिका

दहलना = डर से काँपना, थर्राना
आँत = अँतड़ी
अदायगी = भुगतान, चुकता करना
धरातल = पृथ्वी की सतह, पृथ्वी
आमदरफ्त = आना-जाना
सतह = तल, वस्तु का ऊपरी भाग या विस्तार
निरीह = उदासीन, विरक्त, बेचारा, मासूम

मुहावरा

राहत की साँस लेना = छुटकारा पाना

* सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) प्रवाह तालिका पूर्ण करो :

लेखक के मित्र की भविष्यकालीन योजनाएँ

(२) कृति पूर्ण करो :

स्ट्रेचर पर लेटे बच्चे की स्थिति

(३) कारण लिखो :

१. अंत में बच्चे के पिता द्वारा चप्पलें उठाना –

२. लेखक का ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट जाना–

३. बच्चे का बोरे की तरह हिल उठना –

४. बच्चे के पिता द्वारा दूसरा हाथ ऊपर करना –

(४) ऐसे प्रश्न तैयार करो जिनके उत्तरों में निम्न शब्द हों :

दार्शनिक, पर्चे, तीन महीने, नन्हे–नन्हे हाथ

(५) पाठ में प्रयुक्त अंग्रेजी शब्दों की सूची बनाओ ।

(६) कृति पूर्ण करो :

१. इनका रंग नहीं बदलता

२. इनका बँटवारा नहीं हो सकता

(७) संक्षेप में लिखो :

१. पाँचवीं मंजिल पर लिफ्ट के रुकने पर वहाँ का दृश्य: ----------------------------

२. शीशे की दीवार से देखी हुई संध्या की स्थिति : ----------------------------

HGS9IS

भाषा बिंदु हिंदी–मराठी में प्रयुक्त निम्न समोच्चारित शब्दों के भिन्न अर्थ लिखो :

गज .... / ....

तह .... / ....

ताक .... / ....

साल .... / ....

ताई .... / ....

अवकाश .... / ....

खाली .... / ....

टीका .... / ....

उपयोजित लेखन 'वृक्ष कटाई और सीमेंट का जंगल', विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन होमियोपैथी के जनक की जानकारी अंतरजाल से प्राप्त करके लिखो ।

३. मान न मान; मैं तेरा मेहमान

– संजीव निगम

परिचय

जन्म : १९५९, नई दिल्ली
परिचय : संजीव निगम कविता, कहानी, व्यंग्य, नाटक आदि विधाओं में सक्रिय लेखन कर रहे हैं । आप प्रभावशाली वक्ता और कुशल मंच संचालक हैं । आपने धारावाहिकों तथा 'कॉर्पोरेट' फिल्म का लेखन भी किया है । आप कथाबिंब, अखिल भारतीय कहानी पुरस्कार, साहित्य गौरव सम्मान, साहित्य शिरोमणि सम्मान से पुरस्कृत हैं ।
प्रमुख कृतियाँ : 'नहीं अब और नहीं', 'काव्यांचल', 'अँधेरों के खिलाफ', 'मुंबई के चर्चित कवि' आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य लेख में संजीव निगम जी ने मान न मान; मैं तेरा मेहमान बनने, समय-असमय किसी के घर पहुँचकर मेहमान नवाजी करवाने वालों पर करारा व्यंग्य किया है । अनचाहे मेहमान के असमय घर पहुँचने पर, घरवालों की स्थिति तथा मेहमान की चतुराई का आपने मनोरंजक वर्णन किया है ।

मौलिक सृजन

'पर्यटन से मनुष्य बहुश्रुत बनता है,' इस पर अपने विचार लिखो ।

इतिहास गवाह है कि सिकंदर महान से लेकर मुझ तक, हर महान आदमी के शौक भी महान ही होते हैं । हम महान लोगों को दूध की बोतल पीने के दिनों से ही कुछ ऐसी आदत पड़ जाती है कि कोई भी काम सामान्य ढंग से कर ही नहीं सकते । आखिर पूरी दुनिया की निगाहें जो हमपर लगी होती हैं । कोई शौक भी पालते हैं तो ऐसा कि लोग कहें, ''शौक हो तो ऐसा, वरना न हो ।''

अब महान सिकंदर जैसों को तो खामख्वाह के लड़ाई-झगड़ों से ही फुरसत नहीं थी जो अपने शौकों को भली-भाँति पाल-पोस सकते । उसके उलटे मुझ बंदे के पास अपने शौक को हरा-हरा चारा खिलाकर पालने का टाइम-ही-टाइम है और इसलिए हमने अपने शौक का जी भरकर आनंद लिया है ।

अपना शौक है, मेहमान बनने का । जी हाँ, हमारी हिंदुस्तानी सभ्यता की एक बड़ी प्यारी अदा है 'मेहमान नवाजी' । हमारे यहाँ लोग मेहमान को अलौकिक भगवान का लौकिक रूप समझते हैं । इसलिए खुद चाहे महँगाई के इस दौर में बिना शक्कर की चाय पीएँ पर मेहमान को मधुमेह का मरीज करने की सीमा तक मीठा खिलाते हैं ।

देखा जाए तो हमारे देश में बड़ी फ्री स्टाइल टाइप की मेहमानदारी होती है । कोई बंधन नहीं, कोई रोक-टोक नहीं । आप रात १२ बजे भी जाकर अपने मेजबान का दरवाजा पुलिसिया बेशर्मी से ठोंक सकते हैं । बेचारा शराफत का मारा मेजबान सोते से उठकर भी हाथ जोड़कर आपका स्वागत करेगा । अगर आप किसी दूसरे शहर से आ रहे हैं तो अपना सामान आँखें मलते हुए मेजबान के हाथों में थमाकर बड़ी बेतकल्लुफी से उसके ही सोफे पर पसरते हुए कह सकते हैं, ''भाई सीधा स्टेशन से आ रहा हूँ । बड़े जोर की भूख लग रही थी पर बाहर का खाना खाकर कौन अपना पेट खराब करता । सोचा अपने ही तो घर जा रहे हैं, वहीं चलकर भाभी जी के हाथ का गरमागरम खाना खाएँगे ।'' और बेचारी भाभी जी नींद से झुकी पलकों के साथ आपके लिए पूरियाँ तलने में जुट जाएँगी । जब तक वे बेचारी अपनी नींद उड़ाकर आपके लिए खाना तैयार करें, तब तक आप मौके का फायदा उठाकर एक झपकी मार लें ।

वैसे विदेश की तुलना में भारतीय मेहमानदारी ज्यादा स्थायी प्रकार की होती है । जैसी आपकी श्रद्‌धा और सहूलियत हो उसके मुताबिक आप कुछ घंटों से लेकर कई महीनों तक मेहमान हो सकते हैं । अकेले खुद से लेकर पूरे परिवार समेत मेजबान के ड्राइंग रूम में कबड्‌डी खेल सकते हैं । प्रत्येक वर्ष जब मई, जून और अक्टूबर, नवंबर में विद्‌यालयों की छुट्‌टियाँ होती हैं तो ऐसे सुखद दृश्य घर-घर में देखे जा सकते हैं ।

कई बार तो ऐसा भी होता है कि आप किसी के घर पहुँचे तो देखा कि वे आपको देखते ही अचकचाकर कहेंगे, ''अरे आप लोग ? इस वक्त यहाँ ... कैसे ?'' आप बड़ी गरमजोशी से उनके ठंडे पड़ते हाथ को थामकर कहेंगे, ''भाई, मुन्नी को आपकी बड़ी याद आ रही थी, कहने लगी अबकी छुट्‌टियाँ चच्चा के यहाँ बिताएँगे ... तो बस आना ही पड़ गया, आप लोग कहीं बाहर जा रहे थे क्या ?'' सभ्यता के मारे आपके मेजबान अपनी और बच्चों की लाल-लाल आँखों से बचते हुए, होंठों पर हँसी का हल्का-सा चतुर्भुज बनाते हुए कहेंगे, ''नहीं-नहीं, बाहर नहीं जा रहे थे ।'' और इसके बाद वे अपने दिल का दर्द अपने दिल में समेटे हुए अपने सामान के साथ-साथ आपका सामान खोलने में भी मदद करेंगे ।

चूँकि हीरे की कदर सिर्फ जौहरी ही जानता है इसलिए हमारी संस्कृति के इस कोहिनूर हीरे को हमारी पारखी नजर ने बहुत साल पहले ही ताड़ लिया था और तभी से हमने ये भीष्म प्रतिज्ञा कर ली थी कि साल के ३६५ दिनों में से ज्यादा-से-ज्यादा दिन अपने रिश्तेदारों, दोस्तों व जानकारों के मेहमान बनकर उन्हें कृतार्थ करते रहेंगे ।

हममें एक बात अच्छी है कि हमारे माता-पिता दोनों की तरफ का कुनबा काफी लंबा-चौड़ा है । शादी के बाद उसमें पत्नी के कुनबे का भी समावेश हो गया । इसके अलावा कई चलते-फिरते जानकार भी हैं । आपकी दुआ से बंदे ने उन्हें भी अपनी मेहमानदारी से नवाज रखा है । अपना तो उसूल इतना सीधा है कि कभी कोई सड़क चलता हुआ हमारी ओर देख भर लेता है तो तुरंत उससे पूछ बैठते हैं, ''और भई, घर कब बुला रहे हो ?'' इसी बेतकल्लुफी के चलते कई बार हम बिना जान-पहचान के लोगों की डाइनिंग टेबल की शोभा बढ़ा चुके हैं। हमारे उनके घर से खा-पीकर, फिर आने का वादा करके निकलने के बाद अकसर वह मियाँ-बीवी इस बात को लेकर आपस में लड़-मरते हैं कि आखिर हम उन दोनों में से रिश्तेदार किसके थे ।

संभाषणीय

अपनी व्यस्त जिंदगी में अचानक बिना बताए आए हुए मेहमान और गृहस्वामी के बीच का औपचारिक संवाद प्रस्तुत करो ।

लेखनीय

किसी के घर जाने पर प्राप्त आतिथ्य के बारे में अपने अनुभव लिखो ।

पठनीय

देवेंद्रनाथ शर्मा लिखित 'अतिथि देवो भव' हास्य-व्यंग्य निबंध पढ़ो ।

वैसे सच पूछा जाए तो मेहमान बनना एक ऐसी कला है जिसका विकास अभी पूरी तरह से नहीं हो पाया है । अब यही देखिए जब कभी किसी उच्च कोटि के मेहमान का उदाहरण देना होता है तो मुझे अपना ही नाम लेना पड़ता है । आज के इस कठिन आर्थिक युग में यह काम भी कठिन होता जा रहा है । कितने दाँव-पेंच लड़ाने पड़ते हैं मेहमान बनने के लिए ।

जैसे कभी किसी ऐसे दोस्त के घर जाना पड़ जाए जहाँ खाना मिलने की उम्मीद ना हो तो सीधे घर की मालकिन पर ब्रह्मास्त्र चलाना पड़ता है । यानि कि स्थिति कुछ यूँ होती है कि 'हम दोस्त के घर पहुँचे । उसने तुरंत मातमी सूरत बनाकर पूछा,' फिर कैसे आना हुआ ? जवाब में हमने तुरंत दूसरे कमरे में बैठी मन-ही-मन हमें कोसती हुई उनकी श्रीमती जी को लक्ष्य करके कहा, ''बस क्या बताएँ यार ! उस दिन भाभी जी के हाथ का लाजवाब खाना क्या खाया कि अब किसी और के खाने में स्वाद ही नहीं आता है । ससुरे फाइव स्टार होटल के शेफ भी भाभी जी के हाथ के जादू के आगे पानी भरते हैं ।'' बस हो गया किला फतह । अब हमारा प्यारा दोस्त भले ही हमें घर से धक्के देकर निकालना चाहता हो पर प्यारी भाभी जी अपने इस कद्रदान देवर को भूखा थोड़े ही जाने देंगी ।

शादी होने के बाद से हमने बच्चों के विद्‌यालय की छुट्‌टियों के दिनों वाली थोड़े स्थायी प्रकार की मेहमानदारी विधा के विकास की ओर भी काफी ध्यान दिया है । ऐसी मेहमानदारी की फसल उगाने के लिए ससुराल की धरती काफी उपजाऊ रहती है । ससुराल पर धावा बोलते समय बच्चों का बड़ा सहारा रहता है । जितने ज्यादा बच्चे होंगे, उतनी ही ज्यादा बार हमला करने की सुविधा रहेगी ।

एक साल टुन्नू को अपने नाना की याद आएगी, तो दूसरे साल टिन्नी को । तीसरे साल मुन्नी को और ये क्रम इसी प्रकार चलता रहेगा । पिछली बार तो ऊपरी बच्चों का नंबर खतम होने पर मुझे अपने छह महीने के बच्चे का सहारा लेकर कहना पड़ा, ''इस बार मेरी बुआ जी बुला रही थीं पर क्या बताऊँ इस छुटके को अपने नाना-नानी की इतनी याद आ रही थी कि मजबूरन यहाँ आना पड़ गया ।'' एक शातिर को बेटी देकर फँस गए ससुराल वालों के सामने इस कुतर्क को भी मानने के सिवाय चारा ही क्या था ।

ससुराल संबंधी दूसरी रिश्तेदारियों में हमारे कुशल निर्देशन में श्रीमती जी भी जबरदस्त भूमिका निभाती हैं । अपने शिकार के घर

पहुँचते ही अपनी चाची, मौसी या मामी से लिपट जाएँगी और बड़े भावुक स्वर में कहेंगी, ''जबसे मुई शादी हुई है, आपसे सही ढंग से मिलने तक को तरस गई हूँ । इसलिये इस बार इनसे लड़-झगड़कर सबको लेकर इधर आई हूँ ताकि जी भरकर आपके साथ रह सकूँ ।'' और वे बेचारियाँ जब तक अपनी इस भतीजी या भांजी के प्रेम प्रदर्शन के इस अप्रत्याशित हमले से बाहर आती हैं तब तक हम अपने सूटकेसों को उनके घर में जमाकर अपनी दीर्घकालिक उपस्थिति के स्पष्ट संकेत उन्हें दे देते हैं ।

अपनी मेहमानदारी विशेषज्ञता से हमने अपने नाते-रिश्तेदारों को इतना लाभान्वित किया है कि उनमें से कई के बच्चे बड़े-बड़े कॉर्पोरेट हाउसेस में गेस्ट रिलेशन ऑफिसर बन गए हैं और कुछ लोगों ने बिना कोई कैटरिंग डिप्लोमा पास किए अपने खुद के रेस्टोरेंट खोल लिए हैं।

अपना तो छोटा-सा देशभक्तिपूर्ण प्रयास यही है कि एक दिन गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स में यह छपे कि दुनिया में सबसे अधिक मेहमान बनने का रेकार्ड भारत के इस लाड़ले सपूत ने स्थापित किया है ।

अगर मेरे संबंधी, दोस्त और जानकार थोड़ा-सा धैर्य रखें तो यह काम कोई मुश्किल भी नहीं है । उनका हौसला बढ़ाने के लिए मैं अक्सर उन्हें ये शेर सुनाता रहता हूँ-

शुक्र कर उस खुदा का, और मुझ मेहमान का,
तेरा खाना खा रहा हूँ, तेरे दस्तरखान पर ।

— ० —

श्रवणीय

किसी समारोह में गाया जाने वाला कोई स्वागत गीत सुनो और अपने अभिभावकों को सुनाओ ।

शब्द वाटिका

खामख्वाह = बेकार में, बिना वजह
मेजबान = मेहमानदारी, आतिथ्य करने वाला
बेतकल्लुफी = बेधड़क, निस्संकोच, बिना किसी तकल्लुफ के
शातिर = परम धूर्त, चालाक
कुतर्क = बुरा तर्क, बेढंगी दलील
दस्तरखान = भोजन की थाली के नीचे रखा जाने वाला कपड़ा

✻ **सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) संजाल पूर्ण करो :

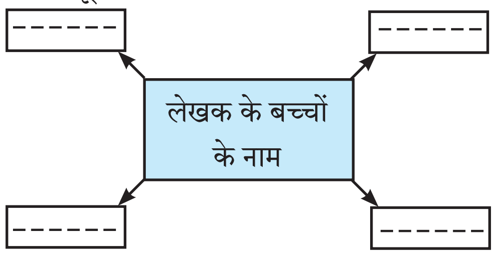

(२) सही विकल्प चुनकर वाक्य पूर्ण करो :-

१. शादी के बाद उसमें पत्नी के कुनबे/कनुबे/कुनुबे का समावेश हो गया ।

२. शोक/शौक/शैक हो तो ऐसा, वरना न हो ।

(३) टिप्पणी लिखो :

१. छुट्टियों में घर-घर दिखाई देने वाला दृश्य-

२. भारतीय मेहमानदारी -

MH25KF

सदैव ध्यान में रखो

अतिथि बनकर जाने से पहले यजमान की सुविधा देखनी चाहिए ।

भाषा बिंदु

चौखट में निर्देशित कालानुसार क्रियारूप में परिवर्तन करके लिखो :

क्रिया	सामान्य वर्तमान काल	अपूर्ण वर्तमान काल	पूर्ण वर्तमान काल	सामान्य भूतकाल	अपूर्ण भूतकाल	पूर्ण भूतकाल	सामान्य भविष्यकाल	अपूर्ण भविष्यकाल	पूर्ण भविष्यकाल
लिखना	लिखती है/ लिखता हूँ	लिख रहा है	लिखा है	लिखा	लिख रहा था/ लिखता था	लिखा था	लिखेगा	लिख रहा होगा	लिखा होगा
करना	-	-	किया है	किया	-	-	-	-	किया होगा
माँगना	माँगता है	-	माँगा है	-	माँग रहा था/ माँगता था	-	-	-	माँगा होगा
देना	-	दे रहा है	-	दिया		दिया था	-	-	-
उठना	उठता है	उठ रहा है	-	-	-	-	-	उठा रहा होगा	-

उपयोजित लेखन

'सबसे सुंदर अपना देश' विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

छुट्टियों के दिनों में अपने पर्यटन का नियोजन तैयार करो ।

४. प्रभात

– भारतभूषण अग्रवाल

फूटा प्रभात, फूटा विहान,
बह चले रश्मि के प्राण, विहग के गान, मधुर निर्झर के स्वर
झर-झर, झर-झर ।

प्राची का यह अरुणाभ क्षितिज,
मानो अंबर की सरसी में
फूला कोई रक्तिम गुलाब, रक्तिम सरसिज ।

धीर-धीरे,
लो, फैल चली आलोक रेख
धुल गया तिमिर, बह गई निशा;
चहुँ ओर देख,
धुल रही विभा, विमलाभ कांति ।
अब दिशा-दिशा
सस्मित, विस्मित,
खुल गए द्‌वार, हँस रही उषा ।

खुल गए द्‌वार, दृग, खुले कंठ,
खुल गए मुकुल ।
शतदल के शीतल कोषों से निकला मधुकर गुंजार लिए
खुल गए बंध, छवि के बंधन ।

जागो जगती के सुप्त बाल !
पलकों की पंखुरियाँ खोलो, मधुकर के अलस बंध
दृग भर
समेट तो लो यह श्री, यह कांति
बही आती दिगंत से,
यह छवि की सरिता अमंद
झर-झर, झर-झर ।

परिचय

जन्म : १९१९, मथुरा (उ.प्र.)
मृत्यु : १९७५
परिचय : भारतभूषण अग्रवाल छायावादोत्तर हिंदी कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं । आप अज्ञेय द्‌वारा संपादित 'तारसप्तक' के महत्त्वपूर्ण कवि हैं । आपने आकाशवाणी तथा अनेक साहित्यिक संस्थाओं में सेवा की है । आप साहित्य अकादमी के उपसचिव थे ।
प्रमुख कृतियाँ : 'छवि के बंधन', 'जागते रहो', 'ओ अप्रस्तुत मन', 'अनुपस्थित लोग', 'फूटा प्रभात', 'समाधि लेख' आदि ।

फूटा प्रभात, फूटा विहान,
छूटे दिनकर के शर ज्यों छवि के बह्नि बाण
केशर फूलों के प्रखर बाण
आलोकित जिनसे धरा
प्रस्फुटित पुष्पों के प्रज्वलित दीप,
लौ भरे सीप ।

फूटीं किरणें ज्यों बह्नि बाण, ज्यों ज्योति-शल्य,
तरुवन में जिनसे लगी आग ।
लहरों के गीले गाल, चमकते ज्यों प्रवाल,
अनुराग लाल ।

— ० —

पद्‍य संबंधी

प्रस्तुत नई कविता में भारतभूषण अग्रवाल ने सूर्योदय एवं प्रातःकाल का बड़ा ही मनोरम दृश्य उपस्थित किया है । दिनकर का आगमन होते ही फूल-पौधे, प्राणी-पक्षी वातावरण में होने वाले परिवर्तनों का कवि ने बहुत ही मनोरम वर्णन किया है । यहाँ रचना की चित्रात्मक शैली दर्शनीय है ।

कल्पना पल्लवन

'प्रत्येक सुबह नई आशाएँ लेकर आती है,' स्पष्ट करो ।

शब्द वाटिका

विहान = भोर, प्रातःकाल
अरुणाभ = लाल आभा से युक्त
क्षितिज = वह स्थान जहाँ पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं
रक्तिम = लाल रंग का
सरसिज = कमल
विमलाभ = निर्मल
मुकुल = कली
अलस = आलसी, सुस्त
दिगंत = दिशा का अंत, क्षितिज
शल्य = वेदना
प्रवाल = नया एवं मुलायम पत्ता, कोंपल

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-**

(१) कृति पूर्ण करो :

प्रभात में ये खुल गए
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]
↓
[ ]

(२) उचित जोड़ियाँ मिलाओ :

अ	उत्तर	आ
१. निर्झर	---------	रक्तिम
२. गुलाब	---------	दीप
३. दिशा	---------	पुष्प
४. प्रस्फुटित	---------	सस्मित
५. प्रज्वलित	---------	मधुर
		पंखुरियाँ

(३) कविता में इस अर्थ में प्रयुक्त शब्द लिखो:

१. पूर्व = -----------

२. कली = -----------

३. बाण = -----------

४. आँखें = -----------

(४) कविता में प्रयुक्त तुकांत शब्द लिखो ।

(५) कविता में आया हुआ प्रभात का वर्णन करो ।

(६) कविता की पंक्तियाँ पूर्ण करो :

शतदल के ---------------

--------------- ।

--------------- !

------------ दृग भर

(७) निम्न शब्दों की विशेषता बताने वाले शब्द रिक्त स्थान में लिखो :

--------- क्षितिज, --------- गुलाब,

--------- कांति, --------- पुष्प,

--------- दीप, --------- गाल

--------- प्रवाल

(८) कविता से अपनी पसंद की किन्हीं चार पंक्तियों का भावार्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

असफलता सफलता की राह पर ले जाती है ।

MHB1M3

भाषा बिंदु

निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग/प्रत्यय लगाकर लिखो :

उपसर्ग युक्त शब्द				प्रत्यय युक्त शब्द			
शाश्वत	=	राग	=	आलोक	=	समझ	=
संदेह	=	स्मरण	=	पत्थर	=	दया	=
जन्म	=	रस	=	समय	=	दूध	=
रिक्त	=	देश	=	गरम	=	प्यास	=

उपयोजित लेखन

रात और दिन के बीच का संवाद लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

प्रस्तुत कविता का आशय स्पष्ट करने वाला चित्र बनाओ तथा उसमें रंग भरो ।

५. हारना भी हिम्मत का काम है ...

– शरबानी बैनर्जी

परिचय

परिचय : आप हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका हैं । आपके लेखन में मनुष्य के जीवन में आने वाली सामान्य समस्याओं की चर्चा एवं मार्गदर्शन होता है ।

गद्य संबंधी

इस आलेख में लेखिका का मानना है कि असफलता को स्वीकार कर लगातार कोशिश करने वाला अवश्य सफल होता है । असफल होने पर बैठकर रोने की जगह उसके कारणों पर विचार कर उसे दूर करना आवश्यक है । ऐसा करने से सफलता व्यक्ति के कदम चूमती है ।

मौलिक सृजन

'मैं यातायात के नियमों का पालन इस प्रकार करूँगा/करूँगी'– इस संदर्भ में अपने विचार लिखो ।

माइकल जॉर्डन कहते हैं, ''मैं असफलता को स्वीकार कर सकता हूँ । हर कोई कभी न कभी असफल जरूर होता है, लेकिन मैं कोशिश करना नहीं छोड़ सकता । बात सही भी है । एक हार की वजह से जो कोशिश करना छोड़ देते हैं, वे कभी सफल हो भी नहीं सकते और जो हार से बिना डरे लगातार कोशिश करते हैं, वे एक न एक दिन जरूर जीतते हैं ।''

मैं फेल होने से बहुत डरती थी । लगता था कि फेल होने के बाद आगे पढ़ने का कोई हक नहीं है । जब १२ वीं कक्षा में थी तो लंबी बीमारी के चलते परीक्षा पास नहीं कर पाई । नतीजा पता होने के बावजूद परीक्षा परिणाम घोषित होते ही दिल टूट गया । चार घंटे तक रोई और फिर थक कर सो गई । उठने के बाद महसूस हुआ कि मैंने ऐसा कुछ नहीं खोया है, जिससे जीना छोड़ दूँ । तुरंत पापा से दो चीजों की माँग की । एक तो मेरा विद्यालय चेंज कराने के लिए कहा और दूसरा विज्ञान की जगह वाणिज्य में प्रवेश लेने की बात कही । हालाँकि पापा ने १२ वीं में आकर विषय न बदलने की सलाह दी लेकिन यह फैसला मेरे अंतर्मन का था । उसी पर टिकी रही । अगले साल प्रथम श्रेणी से १२ वीं पास की । इस घटना से मैंने एक सीख ली कि जिंदगी में कभी हार से घबराना नहीं चाहिए क्योंकि हर असफलता के बाद निश्चित रूप से सफलता मिलती है ।

सिखाती है असफलता

अगर असफलता को अपनी हार से न जोड़कर उससे सीखा जाए तो नाकामयाबी से बड़ा गुरु और कोई नहीं हो सकता क्योंकि जब आप जिंदगी में पीछे मुड़कर देखते हैं तो वही असफलताएँ अनुभव बन आपको अनुभवी की पदवी देती हैं । कक्षा में फेल होने के कुछ दिन बाद जब मैंने अपनी स्थिति का आकलन किया तो पाया कि यदि उस वक्त १२ वीं कक्षा में मैं किसी तरह उत्तीर्ण हो भी जाती तो तृतीय श्रेणी से ज्यादा नहीं ला पाती । उतने खराब अंकों के साथ मुझे किसी अच्छे कॉलेज में प्रवेश नहीं मिलता । पूरा करिअर दाँव पर लग जाता, लेकिन एक असफलता ने मुझे दोबारा १२ वीं की परीक्षा देने का मौका दिया । मुझे सही दिशा मिली तो अंक अच्छे आए और जिंदगी में आगे बढ़ने का हौसला भी मिला ।

असफलता व्यक्ति को सोचने और आत्म अवलोकन करने के लिए प्रेरित करती है । इससे व्यक्ति को गलतियों का अहसास होता है और उन्हें सुधारने का मौका भी मिलता है । इससे उसमें विनम्रता बढ़ती है । बिल गेट्स कहते हैं, ''सफलता का जश्न मनाना बुरी बात नहीं लेकिन जो असफलता याद रखते हैं, वे दूसरों को उन गलतियों को करने से न केवल रोकते हैं, बल्कि वे अधिक विनम्र भी होते हैं ।''

सफलता अंतिम सत्य नहीं

विंस्टन चर्चिल ने एक बात बहुत अच्छी कही थी-''सफलता अंतिम सत्य नहीं होती, असफलता कभी घातक नहीं होती लेकिन असफल होने के बाद भी आगे बढ़ते रहना ज्यादा मायने रखता है । इसी में जिंदगी का फलसफा छिपा हुआ है ।'' देखा जाए तो बात सच भी है । एक ही बार में मिली सफलता का वो स्वाद नहीं होता जो असफलता के बाद की मिली सफलता का होता है । वैसे भी एक सफलता, जिसे मंजिल भी कहा जा सकता है, के बाद दूसरे लक्ष्य के लिए तो फिर से जुटना ही पड़ता है, इसलिए एक बार मिली सफलता पर घमंड नहीं होना चाहिए ।

एक बार में सफल होना बुरी बात नहीं है लेकिन उसके बाद खुद को गुमान से दूर रखना चाहिए । ठीक उसी तरह एक बार मिली असफलता से रुक जाना भी अच्छी बात नहीं । जीवन हमें निरंतर बढ़ना सिखाता है । नदी की राह में भी कई अवरोध आते हैं, लेकिन नदी बहना नहीं छोड़ती । वह किसी न किसी तरह अपनी राह बना ही लेती है । लहरें या तो पत्थर को काट देती हैं या फिर अपनी राह बदल लेती हैं, लेकिन बहना नहीं छोड़तीं । असफल होने के दो ही कारण हो सकते हैं । खुद में कमियाँ होना या सही तरीका न अपनाना, इसलिए असफल होने की स्थिति में दुखी होने की जगह स्थिर होकर सोचना चाहिए कि असफलता के कारण क्या थे ? यदि खुद की कमियाँ इसके लिए जिम्मेदार हों तो उन पर काम करना चाहिए और यदि रास्ता गलत लगे तो मंजिल को हासिल करने के लिए रास्ता बदलने में भी कोई बुराई नहीं है । बस, रुक जाना गलत बात है ।

लोग कुछ नहीं कहेंगे

असफलता के साथ सबसे बड़ा जो डर जुड़ा होता है, वह है कि लोग क्या कहेंगे । दरअसल, हर व्यक्ति को अपनी छवि प्यारी होती है । उसमें हल्का-सा दाग भी उसे बर्दाश्त नहीं होता । असफलता को भी आम व्यक्ति दाग की तरह ही मानते हैं, जबकि वह केवल सफलता की ओर बढ़ने का पायदान मात्र है । बड़े वैज्ञानिक, जिनकी खोज

संभाषणीय

'असफलताएँ मनुष्य को अपनी कमियों का अहसास दिलाती हैं,' इस तथ्य पर कक्षा में चर्चा करो ।

पठनीय

एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने वाले किसी पर्वतारोही के रोचक अनुभव पढ़ो ।

सफल होने से पहले लोगों ने बेहद दुत्कारा था, अगर उसी वक्त लोगों की बातों को अपने ऊपर हावी होने देते तो वे कभी आगे नहीं बढ़ पाते । चर्चिल ने एक और बहुत अच्छी बात कही थी–''एक असफलता से दूसरी असफलता तक पूरे उत्साह से पहुँचने वाला ही सफलता तक पहुँच पाता है ।'' दुनिया की सबसे ताकतवर पत्रिका फोर्ब्स के मालिक माल्कॉम फोर्ब्स ने कहा था, ''असफलता ही सफलता है–यदि हम उससे सीख ले सकें तो । यानी अपनी असफलता से जो व्यक्ति सीख ले लेता है, उसका सफल होना निश्चित है ।'' लब्बोलुआब यह कि असफलता की स्थिति का सही आकलन करें तो सफलता का रास्ता बेहद आसान हो सकता है बशर्ते व्यक्ति पूरे जोश और जुनून से अपनी असफलताओं से सीखते हुए और उनसे प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़े । जो व्यक्ति अपनी असफलता के कारण खोज लेते हैं, उन्हें सफलता का रास्ता खुद ब खुद मिल जाता है । इसलिए असफलता को घृणा से नहीं, बल्कि सम्मान के साथ स्वीकार करना चाहिए ।

— o —

लेखनीय

''निरंतर अभ्यास मनुष्य के कार्यों को परिपूर्ण बनाता है'' इस पर संक्षेप में अपने विचार लिखो ।

श्रवणीय

परिपाठ के कालांश में सर्वधर्मसमभाव संबंधी कोई प्रार्थना सुनो और उसका सामूहिक गायन करो ।

शब्द वाटिका

फैसला = निर्णय
फलसफा = तर्कविद्‌या, दर्शन
हौसला = हिम्मत
गुमान = अभिमान, घमंड
जश्न = उत्सव
अवरोध = बाधा
पायदान = सीढ़ी

मुहावरा

दिल टूटना = निराश होना
दाँव पर लगाना = बाजी लगाना

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ पूर्ण करो :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

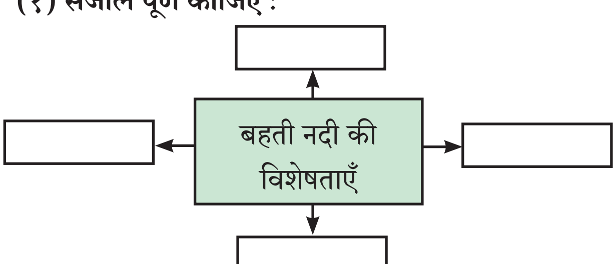

(२) कारण लिखो :

१. नाकामयाबी से बड़ा गुरु कोई नहीं होता -------

२. असफलता के दो कारण -------

(३) कृति पूर्ण करो :

१. विंस्टन चर्चिल द्‌वारा कही हुई अच्छी बातें –

----

२. असफलता से प्राप्त प्रेरणाएँ –

भाषा बिंदु

शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखो :

१. पथ को दर्शाने वाला – ....

२. संकुचित वृत्ति वाला – ....

३. सदैव घूमने वाला – ....

४. सौ वर्षों का काल – ....

उपयोजित लेखन

पत्र लिखो :

छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई/बहन को अध्ययन तथा अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने की सलाह देते हुए दिए गए प्रारूप में पत्र लिखो ।

MHJHNQ

दिनांक : ....

संबोधन : ....

अभिवादन : ....

प्रारंभ :

विषय विवेचन :

तुम्हारा/तुम्हारी,

....

नाम : ....

पता : ....

ई–मेल आईडी : ....

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

सफल महिला उद्‌यमियों की जानकारी प्राप्त कर सचित्र संकलन करो ।

६. बंटी

– मन्नू भंडारी

परिचय

जन्म : १९३१, मंदसौर (म.प्र.)
परिचय : मन्नू भंडारी जी का स्थान स्वातंत्र्योत्तर काल की महिला कथाकारों में अग्रणी है । आपने आधुनिक नारी जीवन की समस्याओं का सूक्ष्म तथा मार्मिक वर्णन किया है । व्यंग्य शैली में सहज-सरल अभिव्यक्ति आपके लेखन की विशेषता है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'मैं हार गई' (कहानी संग्रह), 'आपका बंटी', 'महाभोज' (उपन्यास), 'एक प्लेट सैलाब', 'त्रिशंकु' (नाटक) आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत गद्यांश 'आपका बंटी' उपन्यास से लिया गया है । इसमें बंटी, इस बच्चे के विद्यालय के पहले दिन का उत्साह तथा आनंद व्यक्त किया है । यह पूरा वर्णन प्रत्येक विद्यार्थी के भावविश्व से मिलता-जुलता है ।

मौलिक सृजन

'पुस्तकों में अद्‌भुत दुनिया देखी जाती है' इस पर अपने विचार लिखो ।

बंटी का विद्यालय क्या खुला, उसका बचपन लौट आया । लंबी छुट्टियों के बाद पहले दिन विद्यालय जाना कभी अच्छा नहीं लगता पर आज लग रहा है । अच्छा ही नहीं खूब अच्छा लग रहा है । सवेरे उठा तो केवल हवा में ही ताजगी नहीं थी, उसका अपना मन न जाने कैसी ताजगी से भरा-भरा थिरक रहा था ।

''मम्मी, मेरे मोजे कहाँ हैं ... लो दूध लाकर रख दिया । पहले कपड़े तो पहन लूँ, देर नहीं हो जाएगी ... बैग तो ले जाना ही है, किताबें जो मिलेंगी, के शोर से तीनों कमरे गूँज रहे हैं ।

बहुत दिनों से जो बच्चा घर से गायब था जैसे आज अचानक लौट आया हो । जल्दी-जल्दी तैयार होकर उसने बस्ता उठाया । बस्ता भी क्या, एक कॉपी-पेंसिल डाल ली । कौन आज पढ़ाई होनी है । बस के लिए सड़क पार करके वह कॉलेज के फाटक पर खड़ा हो गया । मम्मी उसे घर के फाटक तक छोड़कर वापस लौट रही हैं । बरामदे की सीढ़ियाँ चढ़कर मम्मी अंदर गुम हो गईं तो सामने केवल घर रह गया । छोटा-सा बंगलानुमा घर जो उसका अपना घर है, जो उसे बहुत अच्छा लगता है ।

एकाएक ही खयाल आया, इसी घर में पता नहीं क्या कुछ घट गया है इन छुट्टियों में । उसने जल्दी से नजरें हटा लीं । तभी दूर से धूल उड़ाती हुई बस आती दिखाई दी । बंटी ने खट् से बस्ता उठाया और बस के रुकते ही लपककर उसमें चढ़ गया । दौड़ता हुआ टीटू चला आ रहा है, लेटलतीफ ।

'बंटी, इधर आ जा, यहाँ जगह है ।' जगह बहुत सारी थी पर कैलाश ने एक ओर सरककर उसके लिए खास जगह बनाई ।
बंटी यार, इधर ! इधर आकर बैठ । विभु उसे अपनी ओर खींच रहा है । बंटी अपने को बड़ा महत्वपूर्ण महसूस करने लगा और बैठते ही उसका अपना चेहरा बच्चों के परिचित, उत्फुल्ल चेहरों के बीच मिल गया ।

बस चली तो सबके बीच हँसते-बतियाते उसे ऐसा लगा जैसे सारे दिन खूब सारी पढ़ाई करके घर की ओर लौट रहा है । तभी खयाल आया- धत वह तो स्कूल जा रहा है ।

बस, जैसे भाजी मार्केट । बातें....बातें । कौन कहाँ-कहाँ गया ? किसने क्या-क्या देखा ? छुट्‌टियों में कैसे-कैसे मौज उड़ाई । अनंत विषय थे और सबके पास कहने के लिए कुछ-न-कुछ था ।

बंटी क्या कहे ? वह खिड़की से बाहर देख रहा है । हुँह ! कुछ नहीं कहना उसे ।

मेरे मामा आए थे एक साइकिल दिला गए थे ।

हम तो दिल्ली में कुतुबमीनार देखकर आए ।

क्यों रे बंटी, तू कहीं नहीं गया इस बार ? पिछली बार तो मसूरी घूमकर आया था ।

''गया था ?''

''नहीं'' बंटी ने धीरे से कहा ।

''सारी छुट्‌टियाँ यहीं रहा ?''

''हाँ । मम्मी ने खस के परदे लगा-लगाकर सारा घर खूब ठंडा कर रखा था, मसूरी से भी ज्यादा ।'' बस बंटी फिर बाहर देखने लगा ।

कितनी बातें हैं उसके पास भी कहने के लिए पर क्या वे सब कही जा सकती हैं ? मान लो, वह किसी को बता भी दे तो कोई समझ सकता है ? एकदम बड़ी बातें । यह तो वह है जो एकाएक समझदार बन गया । ये विभु, कैलाश, दीपक, टॉमी... कोई समझ तो लें पर अपनी इस समझदारी पर उसका अपना ही मन जाने कैसा भारी-भारी हो रहा है ।

बस जब विद्‌यालय के फाटक पर आकर रुकी तो एक-दूसरे को ठेलते - ढकेलते बच्चे नीचे उतरने लगे । नीचे खड़े सर बोले - '' धीरे बच्चो, धीरे ! तुम तो बिलकुल पिंजरे में से छूटे जानवरों की तरह ...'' तो बंटी को लगा जैसे वह सचमुच ही किसी पिंजरे में से निकलकर आया है । बहुत दिनों बाद सामने विद्‌यालय का लंबा-चौड़ा मैदान दिखाई दिया तो हिरन की तरह चौकड़ी भरता हुआ दौड़ गया । गर्मी का सूखा - रेतीला मैदान इस समय हरी-हरी घास के कारण बड़ा नरम और मुलायम हो रहा है, जैसे एकदम नया हो गया हो ।

नई कक्षा, नई किताबें, नई कापियाँ, नये - नये सर... इतने सारे नयों के बीच बंटी जैसे कहीं से नया हो आया है । नया और प्रसन्न । हर किसी के पास दोस्तों को दिखाने के लिए नई - नई चीजें हैं । जैसे ही घंटा बजता और नये सर आते, उनके बीच में खटाखट चीजें निकल आतीं । प्लास्टिक के पजल्स, तस्वीरोंवाली डायरी, तीन रंगों की डॉट पेंसिल ... 'बस, एक मिनट के लिए शोर यहाँ से वहाँ तक तैर जाता ।

संभाषणीय

गरमी की छुट्‌टियों में किए कार्यों के संबंध में अपने सहपाठियों से चर्चा करो ।

लेखनीय

विद्‌यालय से घर लौटने के बाद दरवाजे पर लगा ताला देखकर अपने मन में आए विचार लिखो ।

पठनीय

समाचारपत्र में छपे विभिन्न जयंती समारोह के समाचार पढ़ो ।

''मेरे पास बहुत बड़ावाला मैकेनो है । इतना बड़ा कि विद्‌यालय तो आ ही नहीं सकता । कोलकाता से आया है । कोई भी घर आए तो वह दिखा सकता है ।''

एक क्षण को उँगलियाँ एक - दूसरी पर चढ़ीं और फिर झट से हट भी गईं । हुँह, कुछ नहीं होता । कोई उसके घर आएगा तो वह ज़रूर बताएगा मैकेनो । सब लोग अपनी चीजों को दिखा-दिखाकर कैसा इतरा रहे हैं, शान लगा रहे हैं और वह बात भी नहीं करे ।

विभु, तू शाम को आ जा अपने भैया के साथ । बहुत चीजें बनती हैं उसकी...पुल, सिगनल, पवनचक्की, क्रेन...''

खयाल आया, उसने भी तो अभी तक सब कुछ बनाकर नहीं देखा । विभु आ जाए तो फिर दोनों मिलकर बनाएँगे । विभु नहीं भी आया तो वह खुद बनाएगा । यह भी कोई बात हुई भला !

स्कूल की बातों से भरा-भरा बंटी घर लौटा । खाली बस्ता भी नई-नई किताबों से भर गया था ।

मम्मी अभी कॉलेज में हैं । उसके आने के एक घंटे बाद घर आती हैं । बंटी दौड़कर फूफी को ही पकड़ लाया ।

''अच्छा, एक बार इस बस्ते को तो उठाकर देखो ।''

''क्या है बस्ते में ?'' बंटी के चेहरे पर संतोष और गर्व भरी मुस्कान फैल गई । ''चलो हटो ।'' और फिर खट् से बस्ता उठाकर, सैनिक की मुद्रा में चार-छह कदम चला और फिर बोला, ''रोज ले जाना पड़ेगा । अभी तो ये बाहर और पड़ी हैं । चौथी क्लास की पढ़ाई क्या यों ही हो जाती है ? बहुत किताबें पढ़नी पड़ती हैं ।'' फिर एक-एक किताब निकालकर दिखाने लगा ।

''यह इतिहास की है । कब कौन-सा राजा हुआ, किसने कितनी लड़ाइयाँ लड़ीं सब पढ़ना पड़ेगा । समझी ! यह भूगोल है... यह सामान्य विज्ञान... यह एटलस है । पहचान सकती हैं ? लो, अपने देश को भी नहीं पहचानती ! देखो, यह सारी दुनिया का नक्शा है ।'' कहकर बंटी हँसने लगा ।

बंटी को यों हँसते देख, फूफी एकटक उसका चेहरा देखने लगीं, कुछ इस भाव से जैसे बहुत दिनों बाद बंटी को देख रही हों । फिर गद्‌गद् स्वर में बोलीं, ''हाँ भैया, मेरी तो रसोई ही मेरा देश है । और देश-दूश मैं नहीं जानती । हुए होंगे राजा-महाराजा, मेरा तो बंटी भैया ही राजा है ।''

''अब इस बूढ़े तोते के दिमाग में कुछ नहीं घुसता भैया, तुम काहे

मगज मार रहे हो । चलो हाथ-मुँह धोकर कुछ खा-पी लो । मुँह तो देखो, भूख और गर्मी के मारे चिड़िया जैसा निकल आया है ।''

बंटी खाता जा रहा है और उसका उपदेश भी चालू है । ''तुम कहती थीं न फूफी कि रात-दिन भगवान करते हैं । पानी भगवान बरसाता है । सब झूठ । सामान्य विज्ञान की किताब में सारी सही बात लिखी हुई है । अभी पढ़ी नहीं है । जब पढ़ लूँगा तो सब तुम्हें बताऊँगा ।''

''तो हम कौन इसकूल में पढ़े बंटी भैया ! बस, अब तुमसे पढ़ेंगे । इंगरेजी भी पढ़ाओगे हमें...''

बंटी फिर खीं.. खीं.. करके हँस पड़ा । फूफी और अंग्रेजी और फिर फूफी जितनी भी बातें करती रही, बंटी हँसता रहा.. खिलखिलाकर फूफी उसे देखती रही गदगद होकर ।

जब मम्मी आई तो बंटी ने वे ही सारी बातें दोहराई । उतने ही उत्साह और जोश के साथ । विद्‌यालय में क्या-क्या हुआ ?

विभु ने दिल्ली जाकर क्या-क्या देखा ? मम्मी उसे कब ले जाकर दिखाएगी और फिर उसी झोंक में कह गया, ''मैंने सबको अपने मैकेनो के बारे में बता दिया । यदि शाम को विभु आया तो उसे दिखाऊँगा भी...'' फिर एक क्षण को मम्मी की ओर देखा, मम्मी वैसे ही मंद-मंद मुस्करा रही है । कुछ भी नहीं, वह बेकार डरता रहा इतने दिनों । खेलने से क्या होता है भला !

''मम्मी, अब अपना काम सुन लो ।'' आवाज में आदेश भरा हुआ है । ''आज ही सारी किताबों और कापियों पर कवर चढ़ जाना चाहिए, ब्राउनवाला । नहीं तो कल सजा मिलेगी, हाँ । तुम सब काम छोड़कर पहले मेरे कवर चढ़ा देना । फिर सफेद लेबल काटकर चिपकाने होंगे । उनपर नाम और कक्षा लिखना होगा । खूब सुंदरवाली राइटिंग में जमा-जमाकर लिखना, समझी ।'' फिर उसी उत्साह और जोश में भरा-भरा वह टीटू के यहाँ दौड़ गया ।

— ० —

श्रवणीय

महान विभूतियों के माताओं संबंधी विचार सुनो ।

शब्द वाटिका

उत्फुल्ल = प्रसन्न

बतियाना = बातें करना

पवन चक्की = हवा के जोर से चलने वाली चक्की

मुहावरे

गदगद होना = खुश होना

जोश में आना = उत्साहित होना

मन भारी होना = दुखी होना

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) संजाल पूर्ण करो :

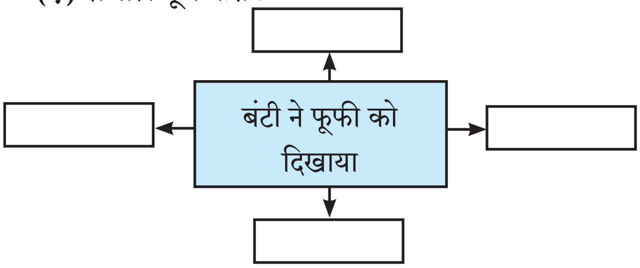

(२) विधान पढ़कर सही/गलत लिखो, गलत विधानों को सही करके लिखो :

१. बंटी की मम्मी विद्‌यालय में पढ़ाती है ।
२. दौड़ता हुआ टीटू लेट लतीफ था ।
३. बंटी की चाची ने बस्ता उठाया ।
४. खाली बस्ता भी नई-नई किताबों से भर गया था ।

(३) तालिका पूर्ण करो :

१.	बंटी के मित्र	----------,----------
२.	पाठ में प्रयुक्त रिश्ते	----------,----------
३.	मैकनो से बनने वाली चीजों के नाम	----------,----------
४.	पाठ में प्रयुक्त शालेय विषयों के नाम	----------,----------

(४) कारण लिखो :

१. लंच टाइम में बच्चे बहुत हँस पड़े ......
२. बंटी छुट्‌टियों में कहीं नहीं गया ......

(५) उत्तर लिखो :

१. सामान्य विज्ञान की पुस्तक से बंटी कौन-कौन सी बातें पढ़ने वाला था ?
२. बंटी ने अपनी मम्मी से क्या-क्या करने के लिए कहा ?

सदैव ध्यान में रखो

शिक्षा सर्वांगीण विकास का मार्ग है ।

भाषा बिंदु

१. पाठ में प्रयुक्त शब्दयुग्म चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।
२. पाठों में आईं प्रेरणार्थक क्रियाएँ लिखो और उनका वाक्यों में प्रयोग करो ।

उपयोजित लेखन

'विद्‌यालय की आत्मकथा' विषय पर निबंध लिखो ।

MHTSQD

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

हिंदी साहित्य में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त किन्हीं दो साहित्यकारों की सचित्र जानकारी प्राप्त करो ।

७. अनमोल वचन

– दादू दयाल

गुरु पहली मन सौं कहै, पीछे नैन की सैन ।
दादू सिख समझै नहीं, कहि समझावै बैन ।।

दादू दीया है भला, दिया करो सब कोय ।
घर में धरा न पाइये, जो कर दिया न होय ।।

ना घरि रह्‌या न बनि गया, ना कुछ किया कलेस ।
दादू मन-ही-मन मिल्या, सतगुर के उपदेस ।।

यहु मसीति यहु देहुरा, सतगुरु दिया दिखाइ ।
भीतरि सेवा बंदिगी, बाहरि काहे जाइ ।।

फल पाका बेली तजी, छिटकाया मुख माँहि ।
साँई अपणा करि लिया, सो फिरि ऊगौ नाँहि ।।

दादू इस संसार मैं, ये द्‌वै रतन अमोल ।
इक साईं इक संतजन, इनका मोल न तोल ।।

मेरा बैरी 'मैं' मुवा मुझे न मारै कोई ।
मैं ही मुझकौं मारता, मैं मरजीवा होई ।।

दादू आपा जब लगै, तब लग दूजा होई ।
जब यहु आपा मरि गया, तब दूजा नहिं कोई ।।

— ० —

परिचय

जन्म : १५४४, अहमदाबाद (गुजरात)

मृत्यु : १६०३

परिचय : गृहस्थी त्यागकर इन्होंने १२ वर्षों तक कठिन तप किया । गुरुकृपा से सिद्‌धि प्राप्त हुई । 'दादू' के नाम से 'दादू पंथ' चल पड़ा । आप अत्यधिक दयालु थे । इस कारण आपका नाम 'दादू दयाल' पड़ गया । आप हिंदी, गुजराती, राजस्थानी आदि कई भाषाओं के ज्ञाता थे । आपने शब्द और साखी लिखीं । आपकी रचनाएँ प्रेमभावपूर्ण हैं । जाति-पाँति के निराकरण, हिंदू-मुसलमानों की एकता आदि विषयों पर आपके पद तर्क प्रेरित न होकर, हृदय प्रेरित हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : 'साखी', 'हरडेवानी', 'अंगवधू' आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत 'साखी' में दादू जी ने परोपरकार, सद्‌गुरु का महत्त्व, सेवाभाव, सत्संग, अहंकार से बचने आदि के संबंध में अनमोल मार्गदर्शन किया है ।

कल्पना पल्लवन

'वर्तमान युग की माँग विश्वशांति' पर अपना मत लिखो ।

शब्द वाटिका

सैन = इशारा
बैन = वाणी, शब्द
दीया = दीपक
घीव = घी
कलेस = कष्ट, दुख
बंदिगी = वंदना, सम्मान, पूजा
पाका = पका
द्‌वै = दोनों
मुवा = मृत, समाप्त
आपा = अहं, घमंड

✲ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) उत्तर लिखो :

१. गुरु अपनी सीख किस प्रकार समझाते हैं ?
२. दान देना क्यों आवश्यक है ?
३. संसार में कौन-से दो रत्न अमूल्य हैं ?
४. दादू जी ने बैरी किसे कहा है ?

(२) पद्‌यांश में इस अर्थ में आए शब्द लिखो :

१. नयन = -------
२. कष्ट = -------
३. शत्रु = -------
४. मरना = -------

(३) दादू जी द्‌वारा दी गई सीख

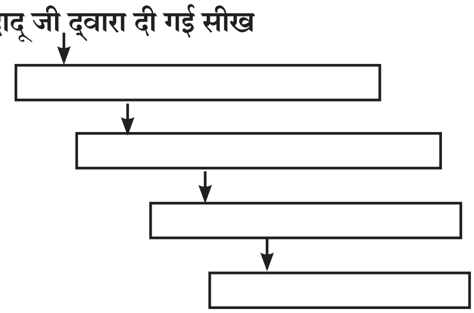

(४) किन्हीं दो पंक्तियों के अर्थ लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो जीवन में सत्संगति आवश्यक है ।

MI3NS1

भाषा बिंदु कृदंत और तद्‌धित शब्दों की सूची बनाकर उनके मूल शब्द अलग करो ।

उपयोजित लेखन अंतरशालेय नाट्‌यस्पर्धा में नाटक का मंचन करने हेतु 'ड्रेपरी हाऊस' के व्यवस्थापक को पात्रों के अनुरूप आवश्यक वेशभूषाओं की माँग करते हुए पत्र लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन कबीरदास के ऊँच-नीच, छोटा-बड़ा इन भावों की व्यर्थता दर्शाने वाले दोहों को अर्थसहित लिखो ।

८. साहित्य की सच्चाई

– *जैनेंद्र कुमार*

भाइयो,

मेरी उमर ज्यादा नहीं है । पढ़ा भी ज्यादा नहीं हूँ । साहित्य शास्त्र तो बिलकुल नहीं पढ़ा हूँ । फिर भी लिखने तो लगा । इसका श्रेय परिस्थितियों को समझिए । यों अधिकार मेरा क्या है ? लिखने लगा तो लेखक भी माना जाने लगा और आज वह दिन है कि आप विद्‌वान लोग भी आज्ञा देते हैं कि मैं आपके सामने खड़े होकर बोल पड़ूँ ।

आप लोगों द्‌वारा जब मैं लेखक मान लिया गया और मेरा लिखा गया कुछ छपने में भी आया, तब मैं अपने साहित्यिक होने से इनकार करने का हक छिना बैठा; लेकिन अपनी अबोधता तो फिर भी जतला ही सकता हूँ। वह मेरी अबोधता निबिड़ है । साहित्य के कोई भी नियम मुझे नहीं लगे हैं । साहित्य को शास्त्र के रूप में मैं देख ही नहीं पाता हूँ; पर, शास्त्र बिना जाने भी मैं साहित्यिक हो गया हूँ, ऐसा आप लोग कहते हैं । अब मुझे कहना है कि साहित्य शास्त्र को बिना जाने भी साहित्यिक बना जा सकता है और शायद अच्छा साहित्यिक भी हुआ जा सकता है । इसमें साहित्य शास्त्र की अवज्ञा नहीं है, साहित्य के तत्त्व की प्रतिष्ठा नहीं है ।

साहित्यिक यदि मैं हूँ तो इसका मतलब मैंने अपने हक में कभी भी यह नहीं पाया है कि मैं आदमी कुछ विशिष्ट हूँ । इनसानियत मेरा, सदा की भाँति, अब भी धर्म है । सच्चा खरा आदमी बनने की जिम्मेदारी से मैं बच नहीं सकता । अगर साहित्य की राह मैंने ली है, तब तो भाव की सच्चाई और बात की मिठास और खरेपन का ध्यान रखना और इसी प्रकार का सर्वसामान्य धर्म मेरा और भी अन्य धर्म हो जाता है । इस दृष्टि से, मैं आज अनुभव करता हूँ कि साहित्य के लिए वही नियम हैं जो जीवन के लिए हैं । मेरी समझ में नहीं आता कि जैसा मुझे दुनिया में रहना चाहिए, वैसा साहित्य में भी क्यों न रहना चाहिए ? जितनी मेरे शब्दों से मेरे मन की लगन है उतना ही तो उनमें जोर होगा ! जिंदगी ही में नहीं तो शब्दों में जोर आएगा कहाँ से ?

अपने जीवन की एक कठिनाई मैं आपके सामने रख दूँ । आँख खोलकर जब दुनिया देखता हूँ तो बड़ी विषमता दिखाई देती है । राजा हैं और रंक हैं, पहाड़ हैं और शिशु हैं, दुख हैं और सुख हैं !... यह

परिचय

जन्म : १९०५, कौडियालगंज, अलीगढ़ (उ.प्र.)
मृत्यु : १९८८, नई दिल्ली
परिचय : प्रेमचंदोत्तर उपन्यासकारों में जैनेंद्र कुमार जी का विशिष्ट स्थान है । आप हिंदी उपन्यास के इतिहास में मनोविश्लेषणात्मक परंपरा के प्रवर्तक के रूप में मान्य हैं । चरित्रों की प्रतिक्रियात्मक संभावनाओं के निर्देशक सूत्र का आश्रय लेकर आपके पात्र विकास को प्राप्त होते हैं । आपको १९७१ में 'पद्‌मभूषण' और १९७७ में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'परख', 'त्यागपत्र' (उपन्यास), 'फाँसी', 'वातायन', 'नीलम देश की राजकन्या', 'जैनेंद्र की कहानियाँ' (कहानी संग्रह), 'जड़ की बात', 'पूर्वोदय' (निबंध संग्रह), 'मंदालिनी', 'प्रेम में भगवान', 'पाप और प्रकाश' (अनूदित ग्रंथ), 'तपोभूमि' (सह लेखन), 'साहित्य चयन' आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत भाषण में जैनेंद्र जी ने साहित्य के संबंध में अपने विचार व्यक्त किए हैं । आपने यहाँ साहित्य और विज्ञान की तुलना करते हुए साहित्य की सच्चाई बताई है ।

विषमता देखकर बुद्धि चकरा जाती है । इस विषमता में क्या संगति है ? क्या अर्थ है ? वैषम्य अपने आप में तो सत्य हो नहीं सकता । विषमता तो ऊपरी ही हो सकती है । दुनिया में जो कुछ हो रहा है उसके भीतर यदि मैं उद्‌देश्य की, अर्थ की झाँकी न ले सकूँ तो क्या वह सब कुछ पागलपन न मालूम हो ? सब अपना-अपना अहंकार लिए दुनिया से अटकते फिर रहे हैं । इसमें क्या मतलब है ? मैं सच कहता हूँ कि इसे देखकर मेरा सिर चकरा जाता है । यह चाँद क्या है ? आसमान में ये तारे क्या हैं ? आदमी क्यों यहाँ से वहाँ भागता फिर रहा है ? वह क्या खोज रहा है ? क्या ये सब निरे जंलाल ही हैं, भ्रमजाल ही हैं ? क्या यह समस्त चक्र निरर्थक है ? इसे जंजाल मानें, निरर्थक मानें तो जीयेंगे किस विश्वास के बल पर ? अविश्वास पर निर्भर रहकर तो जीना दूभर हो जाएगा । जब-जब बहुत आँखें खोलकर और बहुतेरा उन्हें फाड़कर जगत को समझने का प्रयास करता हूँ, तभी-तब बुद्धि त्रस्त हो रहती है । मैं विफलता में डूब जाता हूँ । अरे श्रद्धाहीन बुद्धि तो वंध्या है, उससे कुछ फल नहीं मिलता ! वह तो लँगड़ी है, हमें कुछ भी दूर नहीं ले जाती ।

बुद्धि से विज्ञान खड़े होते हैं । हम वस्तु का विश्लेषण करके उसकी व्याख्या करके अणु तक पहुँचते हैं । फिर, बुद्धि वहाँ अणु के साथ टकराती रहती है । अंत में समझ में क्या आता है ? अणु बस अणु बना रहता है, थियरी बस थियरी बनी रहती है । जान पड़ता है कि न अणु की थियरी सत्य है और न कोई और थियरी अंतिम हो सकेगी । सदा की भाँति विराट अज्ञेय हमें अपनी शून्यता में समाए रहता है और हम भौंचक रहते हैं ।

विज्ञान की दूरबीन में से सत्य को देखते-देखते जब आँखें हार जाती हैं, सिर दुख जाता है, बुद्धि पछाड़ खाकर स्तब्ध हो रहती है, तब हम शांति की पुकार करते हैं । तब हम श्रद्धा की आवश्यकता अनुभव करते हैं, हम चैन के लिए, रस के लिए, विकल होते हैं । निरुपाय हो हम आँख मीचते हैं और अपने भीतर से ही कहीं से रस का स्रोत फूटा देखना चाहते हैं और जो आँख खोलकर नहीं मिला, आँख मीचकर मिल जाता है । बुद्धिमान जो नहीं पाते, बच्चे, बच्चे बनकर क्या उसे ही नहीं पा लेते हैं ? मैं एक बार जंगल में भटक गया । जंगल तो जंगल था, भटक गया तो राह फिर कैसे मिले ? वहाँ तो चारों ओर पेड़-ही-पेड़ थे जिनकी गिनती नहीं, जिन्हें एक को दूसरे से चीन्हने का उपाय नहीं । घंटे-के-घंटे भटकते हो गए और मैं अधिकाधिक मूढ़ होता चला गया । तब मैं हारकर एक जगह जा बैठा और वहाँ बैठा, आँखें मीचकर, अपने भीतर ही से राह खोजने लगा ।

मौलिक सृजन

'मेरी पसंदीदा पुस्तक' विषय पर अपने विचार लिखो ।

संभाषणीय

किसी पढ़ी हुई कहानी के आशय पर चिंतन करो और उसमें व्यक्त विचार, कल्पना का आकलन करते हुए सत्यापन हेतु प्रश्न पूछो ।

आजकल नये विचारों की लहर दौड़ रही है । मैं आपको अपनी असमर्थता बतला दूँ कि मैं उन लहरों पर बहना नहीं जानता । लहरों पर लहराने में सुख होगा; पर वह सुख मेरे नसीब में नहीं है । हमारे मानव समाज की बात कही जाती है । मानव समाज टुकड़ों में बँटा है, उन टुकड़ों को राष्ट्र कहते हैं, वर्ग कहते हैं, संप्रदाय कहते हैं । उन या वैसे अन्य खंडों में खंडित बनाकर हम उस मानव समुदाय को समझते हैं; पर असल में ऐसी कोई फाँकें हैं नहीं । ये फाँकें तो हम अपनी बुद्‌धि के सहारे के लिए कल्पित करते हैं । मानव समाज का यह विभाजन हमारी बुद्‌धि हमें प्रकार-प्रकार से सुझाती है । एक प्रकार का विभाजन अति स्वीकृत हो चला है । वह है-एक मासेज दूसरी 'क्लासेज'; सर्वसाधारण और अधिकार प्राप्त; दरिद्र और विभूति मज्जित । इन दोनों सिरों के बीच में और भी कई मिश्र श्रेणियों की कल्पना है । इस विभाजन को गलत कौन कहेगा ? लेकिन, यह मानना होगा कि विभाजन संपूर्ण सत्य नहीं है । सत्य तो अभेदात्मक है । इस अभेदात्मक सत्य को अपनी बुद्‌धि से ओझल कर रखने से संकट उपस्थित होगा ।

फिर, एक बात और भी है । मानव समाज ही इति नहीं है । पशु समाज, पक्षी समाज, वनस्पति समाज भी है । यही क्यों, सूर्य-नभ-ग्रह-तारा-मंडल भी है । ये सभी कुछ हैं और सभी कुछ की ओर हमें बढ़ना है । मानव समाज को स्वीकार करने के लिए क्या शेष प्रकृति को इनकार करना होगा ? अथवा कि प्रकृति में तन्मयता पाने के लिए मनुष्य संपर्क से भागना पड़ेगा ?

दोनों बातें गलत हैं । धर्म सम्मुखता है । हम उधर मुँह रखें अवश्य जहाँ वह इनसान है, जो परिश्रम में चूर-चूर हो रहा है, देह से दुबला है, और दूसरों के समस्त अनादर का बोझ उठाए हुए झुका हुआ चल रहा है । हम उधर देखें जहाँ पुरुष को इसलिए कुचला जाता है कि दानव मोटा रहे । पीड़ित मानव समाज की ओर हम उन्मुख रहें, अपने सुख का आत्म विसर्जन करें, उनकी वेदना में साझा बँटाएँ । यह सब तो हम करें ही, करेंगे ही । अन्यथा हमारे लिए मुक्ति कहाँ है, पर ध्यान रहे, मानव समाज पर जगत का खात्मा नहीं है, उससे आगे भी सत्य है, वहाँ भी मनुष्य की गति है, वहाँ भी मनुष्य को पहुँचना है ।

इस जगह पर आकर मैं कहूँ कि अरे, जो चाँद-तारों के गीत गाता है, उसे क्या वह गीत गाने न दोगे ? उन गीतों में संसार के गर्भ से ली गई वेदना को अपने मन के साथ घनिष्ट करके वह गायक गीत की राह मुफ्त वार दे रहा है । उसको क्या प्रस्ताव से और कानून से रोकेंगे ? रोको, पर यह शुभ नहीं है ? अरे उस कवि को क्या कहोगे जो आसमान को शून्य

लेखनीय

अब तक पढ़ी पाठ्‌यसामग्री में प्रयुक्त आलंकारिक शब्द, महान विभूतियों के कथन, मुहावरे, कहावतें आदि की अपने लेखन में प्रयोग करने हेतु सूची बनाओ ।

दृष्टि से देखता है, कुछ क्षण उसमें लीन रहता है और उसी लीनता के परिणाम में सब वैभव का बोझ अपने सिर से उतारकर स्वयं निरीह बन जाता है और मस्ती के गीत गाता है ? कहें राजनीतिक उसे पागल, पर वह लोकहितैषी है । उसका प्रयोजन चाहे हिसाब की बही में न आए, पर प्रयोजन उसमें है और वह महान है । सच्चा मनुष्य बनकर कर सकते हैं और अहं शून्य हो जाने से बड़ी सत्यता क्या है ?

कवि स्वयं एकाकी होता है, संपदा से विहीन होता है । वह स्वेच्छापूर्वक सब का दास होता है । स्नेह से वह भीगा है और अपनी नस-नस में गरीब है । जब वह ऐसा है तब उसके आगे साम्राज्य की भी बिसात क्या है ? वह सब उसके लिए तमाशा है । उस कवि से तुम क्या चाहते हो कि जिसके मन में फकीरी समाई है, वह कुनबेदार बना रहकर बस श्रमिक की भलाई चाहने वाला साहित्य लिखे ? श्रमिक और मजदूर वर्ग को प्रेम के द्‌वारा उसे जानना होगा और प्रेम के द्‌वारा पाना होगा और जब हम यह करने बढ़ेंगे तो देखेंगे कि हमें उन्हीं जैसा, बल्कि उनसे भी निरीह, स्वयं बन जाना है । फिर हमें कहाँ फुरसत रहेगी कि हम बहुत बातें करें ? अरे, वैसे फकीर की फकीरी और इकतारा क्यों छीनते हो ? अगर वह नदी के तीर पर साँझ के झुटपटे में अकेला बैठा कोई गीत गा रहा है तो उसे गाने दो, छेड़ो मत । उसके इस गीत से किसी मजदूर का, किसी चरवाहे का, बुरा न होगा । होगा तो कुछ भला ही हो जाएगा । उसको उस निर्जनता से उखाड़कर कोलाहलाकुल भीड़ में बलात बिठाने से मत समझो कि तुम किसी का भला कर रहे हो ।

व्यक्ति को वेदना की दुनिया पाने दो और पाकर उसे व्यक्त करने दो, जिससे कि लोगों के छोटे-छोटे दिल, कैद से मुक्ति पाएँ और प्रेम से भरकर वे अनंत शून्य की ओर उठें ।

अभी चर्चा हुई कि क्या लिखें, क्या न लिखें । कुछ लोग इसको साफ जानते हैं पर मेरी समझ तो कुंठित होकर रह जाती है । मैं अपने से पूछता रहता हूँ कि सत्य कहाँ नहीं है ? क्या है जो परमात्मा से शून्य है ? क्या परमात्मा अखिल व्यापी नहीं है ? फिर जहाँ हूँ, वहाँ ही उसे क्यों न पा लूँ ? भागूँ किसकी ओर ? क्या किसी वस्तु विशेष में वह सत्य इतनी अधिकता से है कि वह दूसरे में रह ही न जाए ? ऐसा नहीं है । अतः निषिद्‌ध कुछ भी नहीं है । निषिद्‌ध हमारा दंभ है, निषिद्‌ध हमारा अहंकार है, निषिद्‌ध हमारी आसक्ति है । पाप कहीं बाहर नहीं है, वह भीतर है । उस पाप को लेकर हम सुंदर को वीभत्स बना सकते हैं और भीतर के प्रकाश के सहारे हम घृण्य में सौंदर्य के दर्शन कर सकते हैं ।

पठनीय

किसी परिचित/अपरिचित घटना पर आधारित गुटचर्चा में सहभागी होकर उसमें प्रयुक्त उद्‌धरण, वाक्यों को लिखकर पढ़ो ।

एक बार दिल्ली की गलियों में आँख के सामने एक अजब दृश्य आ गया । देखता हूँ कि एक लड़की है । बेगाना चली जा रही है । पागल है । अठारह-बीस वर्ष की होगी । सिर के बाल कटे हैं । नाक से द्रव बह रहा है । अपरूप उसका रूप है । हाथ और बदन में कीच लगी है । मुँह से लार टपक रही है । मैंने उसे देखा, और मन मिचला आया । अपने ऊपर से काबू मेरा उठ जाने लगा । मैंने लगभग अपनी आँखें मीच लीं और झटपट रास्ता काटकर मैं निकल गया । मेरा मन ग्लानि से भर आया था । कुछ भीतर बेहद खीझ थी, त्रास था । जी घिन से खिन्न था । काफी देर तक मेरे मन पर वह खीज छाई रही; किंतु स्वस्थ होने के बाद मैंने सोचा, और अब भी सोचता हूँ कि क्या वह मेरी तुच्छता न थी ? इस भाँति सामने आपदा और विपदा और निरीह मानवता को पाकर स्वयं कन्नी काटकर बच निकलना होगा क्या ? मैं कल्पना करता हूँ कि क्राइस्ट होते, गौतम बुद्‌ध होते, महात्मा गांधी होते तो वे भी क्या वैसा ही व्यवहार करते ? वे भी क्या आँख बचाकर भाग जाते ? मुझे लगता है कि नहीं, वे कभी ऐसा नहीं करते । शायद वे उस कन्या के सिर पर हाथ रखकर कहते-आओ बेटा, चलो । मुँह-हाथ धो डालो, और देखो यह कपड़ा है, इसे पहिन लो । मुझे निश्चय है कि वे महात्मा और भी विशेषतापूर्वक उस पीड़ित बाला को अपने अंतस्थ सकरुण प्रेम का दान देते ।

सत्य हमारे लिए भयंकर है, जो गहन है वह निषिद्‌ध है और जो उत्कट है वह वीभस्त । अरे, यह क्या इसीलिए नहीं है कि हम अपूर्ण हैं, अपनी छोटी-मोटी आसक्तियों में बँधे हुए हैं ! हम क्षुद्र हैं, हम अनधिकारी हैं । मैंने कहा-अनधिकारी । यह अधिकार का प्रश्न बड़ा है । हम अपने साथ झूठे न बने । अपने को बहकाने से भला न होगा । सत्य की ओट थामकर हम अपना और पर का हित नहीं साध सकते । हम अपनी जगह और अपने अधिकार को पहचानें । अपनी मर्यादा लाँघें नहीं । हठपूर्वक सूर्य को देखने से हम अंधे ही बनेंगे पर, बिना सूर्य की सहायता के भी हम देख नहीं सकते, यह भी हम सदा याद रखें । हम जान लें कि जहाँ देखने से हमारी आँखें चकाचौंध में पड़ जाती हैं, वहाँ देखने से बचना यद्‌यपि हितकर तो है, फिर भी वहाँ ज्योति उसी सत्य की है और हम शनैः-शनैः अधिकाधिक सत्य के सम्मुख होने का अभ्यास करते चलें ।

— ० —

श्रवणीय

किसी साहित्यकार का साक्षात्कार सुनो ।

शब्द वाटिका

निबिड़ = घना सघन
दूभर = कठिन
अज्ञेय = जो ज्ञात नहीं है
चीन्हना = पहचानना

मुहावरे

सिर चकरा जाना = दुविधा में पड़ना
कन्नी काटना = अनदेखा करते हुए चले जाना

※ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–

(१) कृति पूर्ण करो :

(२) रिक्त स्थानों में कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर लिखो :

१. सत्य तो ------- है ।
(सत्य, अभेदात्मक, भेदात्मक)

२. एक प्रकार का विभाजन अति -------- हो चला है ।
(स्वीकृत, अस्वीकृत, अधिकृत)

(३) कृति पूर्ण करो :

हमारे लिए निषिद्ध हैं
-------- | -------- | --------

(४) लेखक द्‌वारा दिल्ली में देखा हुआ दृश्य और उसका परिणाम लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

हमारा प्राचीन साहित्य संस्कृति की धरोहर है ।

भाषा बिंदु

निम्नलिखित शब्दों का वचन परिवर्तन कर उनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो :

१. नेता = ----------------------------------
२. दीपावली = ----------------------------------
३. चूहे = ----------------------------------
४. कुआँ = ----------------------------------

उपयोजित लेखन

'जल है तो कल है' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

भारतीय शिल्पकला के पाँच उत्तम नमूनों की सूची बनाओ तथा उनकी सचित्र जानकारी लिखो ।

९. शब्दकोश

– डॉ. सरोज प्रकाश

प्रस्तुत पाठ में शब्दकोश के उपयोग की जानकारी दी गई है । इसमें यह भी बताया गया है कि शब्दकोश का उपयोग करने के लिए वर्णमाला और बारहखड़ी के क्रम का ज्ञान होना आवश्यक है ।

(सलिल और नीलिमा दोनों अध्ययन करते हुए बैठे हैं । सलिल परेशान हो जाता है , बार–बार पुस्तक को उलटता–पलटता है ।)

नीलिमा : क्या बात है सलिल ? परेशान क्यों हो ?

सलिल : परेशानी की ही बात है । देखो, मैं इस किताब को ग्रंथालय से लाया । बड़ी ज्ञानवर्धक और मनोरंजक पुस्तक है परंतु दो शब्द ऐसे आए हैं, जिनका अर्थ ही मुझे नहीं मालूम ।

नीलिमा : कौन–से दो शब्द ?

सलिल : एक शब्द है 'अभियान' और एक है 'सुरसरि ।'

नीलिमा : **(सोचते हुए)** सच बताऊँ, मैं भी इनका अर्थ नहीं जानती ।

सलिल : पर इनके अर्थ तो जानना जरूरी है ।

नीलिमा : ऐसा करते हैं कि पड़ोस में जो पत्रकार रामदास जी रहते हैं न, उनके यहाँ चलते हैं । वे जरूर हमारी सहायता करेंगे ।

(सलिल और नीलिमा रामदास के घर पहुँचते हैं ।)

सलिल–नीलिमा : नमस्ते चाचाजी ।

रामदास : अरे, सलिल, नीलिमा, आओ बेटे, आओ । कहो क्या बात है ?

सलिल : **(भीतर आते हुए)** चाचा जी, हम आपको थोड़ी–सी तकलीफ देने आए हैं । बात यह है कि आज मैं एक बड़ी अच्छी पुस्तक पढ़ रहा था, उसमें कुछ शब्दों के अर्थ समझ में नहीं आ रहे हैं, इसलिए सोचा, आपसे पूछ लें ।

रामदास : अरे बेटे, यह तो अच्छी बात है । शब्दों के अर्थ जान लेने से भाषा संपन्न बनती है । वैसे भी कहते हैं न कि बूँद–बूँद से सागर बनता है ।

नीलिमा : **(सलिल से)** इन्हें वे शब्द बताओ न ।

परिचय

जन्म : १९४७, एटा (उ.प्र.)

परिचय : लेखिका डॉ. सरोज प्रकाश जी ने कॉलेज में अध्यापन कार्य किया है साथ ही साथ आप एक स्थापित लेखिका हैं । आपके अनेक लेख पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं ।

प्रमुख कृति : 'स्त्री–पुरुष के बदलते संबंध और मोहन राकेश का कृतित्व ।'

गद्य संबंधी

इस संवाद में लेखिका ने शब्दकोश को किस तरह देखा जाए, उसमें शब्दों के अर्थ कैसे ढूँढ़ें इस बारे में विस्तृत जानकारी दी है ।

मौलिक सृजन

'बच्चे देश के भविष्य हैं' विषय पर अपने विचार लिखो ।

श्रवणीय

दूरदर्शन, सी.डी. या यू ट्यूब पर किसी शहीद जवान की शौर्य गाथा सुनो और अपने घर के सदस्यों को सुनाओ ।

रामदास : तुम्हारे उन शब्दों का अर्थ मैं बता पाऊँ या नहीं, यह दूसरी बात है, पर ऐसा करता हूँ कि मैं तुम्हें शब्दकोश दे देता हूँ । उसमें अर्थ देख लो ।

सलिल-नीलिमा : **(आश्चर्य से)** शब्दकोश !

रामदास : हाँ, क्यों, तुम्हें शब्दकोश नहीं मालूम !

सलिल : नहीं ।

रामदास : **(शब्दकोश उन्हें देते हुए)** यह देखो । यह 'शब्दकोश' है ।

(सलिल पन्ने पलट रहा है, नीलिमा झाँककर देख रही है ।)

रामदास : इसमें करीब डेढ़ लाख शब्द हैं । कुछ शब्दकोश कम या अधिक शब्दों के भी होते हैं ।

सलिल : पर चाचा जी, इन डेढ़ लाख शब्दों में से अपने शब्द कैसे ढूँढ़ूँ? क्या उन दो शब्दों के लिए मुझे यह पूरी मोटी किताब पढ़नी होगी ?

रामदास : **(हँसते हुए)** नहीं बेटे, नहीं । शब्द ढूँढ़ना बहुत आसान है । अब मुझे बताओ, तुम्हें पूरी बारहखड़ी आती है न ?

नीलिमा : चाचा जी....? आप क्या हमारा मजाक उड़ा रहे हैं.... । बारहखड़ी तो हमने पहली कक्षा में सीखी थी ।

रामदास : नहीं नीलिमा, मेरी बात तो समझो । शब्दकोश देखने के लिए वर्णमाला का क्रम और बारहखड़ी अच्छी तरह याद होनी चाहिए, क्योंकि इसमें इसी क्रम से शब्द दिए जाते हैं । उदाहरण के लिए 'अ' से शुरू होने वाले शब्द 'आ' से शुरु होने वाले शब्दों से पहले आते हैं । इसलिए मैंने कहा है कि वर्णमाला का क्रम तथा बारहखड़ी का ज्ञान पक्का होना चाहिए । अब यदि मैं कहूँ कि 'आविष्कार' शब्द का अर्थ ढूँढ़ो, तो तुम कैसे ढूँढ़ोगे ?

सलिल : **(खुशी से)** मैं बताऊँ चाचा जी । कोश में पहले 'आ' से आरंभ होने वाले शब्दों का पन्ना निकालूँगा । फिर 'आ' के आगे जो व्यंजन हैं उन्हें देखूँगा । क, च, ट, त, प वर्गों के व्यंजन से बने शब्दों के पन्ने पलटता जाऊँगा । फिर य, र, ल छोड़कर 'व' पर रुकूँगा । इसमें भी व, वा के

बाद 'वि' वाले शब्दों में मैं देखूँगा ।

रामदास : बहुत अच्छे, इसी पद्धति से शब्दों को ढूँढ़कर उनके अर्थ देखने होंगे ।

सलिल : **(शब्दकोश देखते हुए)** पर चाचा जी, यहाँ प्रत्येक शब्द के बाद कोष्ठक में कभी 'पुं.', कभी 'स्त्री.', कभी 'वि.', कभी 'क्रि.', कभी 'सं.' आदि लिखा गया है, उनका क्या अर्थ है ?

रामदास : इसके लिए कोश के आरंभ के पन्नों को पढ़ना पड़ेगा । तुम भाषा का व्याकरण तो जानते हो ।

सलिल : हाँ, क्यों नहीं । व्याकरण तो हमें पढ़ाया गया है ।

रामदास : व्याकरण जानना तो जरूरी है । कोश में दिए प्रत्येक भाषा का भेद क्या है, उसका लिंग क्या है, वह किस भाषा का शब्द है, इनको सांकेतिक शब्द के संक्षिप्त रूप में दिया जाता है । कोश के आरंभ में इनका विस्तार दिया जाता है । जैसे 'पुं.' पुंल्लिंग के लिए, 'स्त्री.' स्त्रीलिंग के लिए, 'वि.' विशेषण के लिए, 'सं.' संस्कृत के लिए, 'अं.' अंग्रेजी के लिए, 'फा.' फारसी के लिए आदि ।

नीलिमा : हाँ, हाँ, अब बात स्पष्ट हो गई । शब्दकोश के कारण केवल अर्थ ही नहीं, शब्द के स्वरूप का भी पता चल जाता है । यह तो गागर में सागर है ।

सलिल : पर चाचाजी, यहाँ तो एक शब्द के अनेक अर्थ दिए गए हैं । हम कौन-सा अर्थ लें ?

रामदास : बड़ा अच्छा सवाल किया है तुमने । देखो, प्रायः शब्दों का एक ही निश्चित अर्थ होता है, पर कुछ शब्दों के अनेक अर्थ होते हैं । ऐसे समय मूल वाक्य में अपेक्षित अर्थ को ग्रहण करना चाहिए ।

नीलिमा : क्या ऐसे कोश सभी भाषा में होते हैं ?

रामदास : हाँ, दुनिया की सभी भाषाओं के कोश मिलते हैं । इतना ही नहीं, दो भाषाओं के भी शब्दकोश मिलते हैं, जैसे-मराठी-हिंदी, कन्नड़-हिंदी, अंग्रेजी-हिंदी आदि । इन कोशों के कारण भाषा का ज्ञान बहुत बढ़ जाता है । सलिल, क्या तुम्हें अपने दोनों शब्दों के अर्थ मिल गए ?

सलिल : हाँ, मैंने उन्हें ढूँढ़ लिया है । बाजी मार ली मैंने

संभाषणीय

ओलंपिक में खेले जाने वाले पारंपरिक खेलों तथा नये खेलों की जानकारी एकत्रित कर के संवाद प्रस्तुत करो ।

लेखनीय

किसी परिचित/अपरिचित व्यक्ति के साक्षात्कार हेतु प्रश्नावली तैयार करो ।

अब तो मैं, एक छोटा-सा कोश खरीद लूँगा ।

रामदास : शब्दकोश देखते समय एक और बात का ध्यान रखना आवश्यक है । अनुस्वार और चंद्रबिंदु वाले शब्द बारहखड़ी में सबसे पहले रखे जाते हैं । इसके बाद विसर्गवाले शब्दों का क्रम होता है । मध्य में संयुक्ताक्षर के शब्द भी होते हैं ।

सलिल : मैं भी पिता जी से कहूँगा कि वे मेरे लिए एक शब्दोकाश ले आएँ । **(रामदास की ओर देखकर)** आज आपके कारण हमें शब्दकोश के बारे में जानकारी मिली । धन्यवाद !

रामदास : बच्चो ! एक और बात जान लो कि पुस्तक स्वरूपी शब्दकोश के अलावा आजकल 'ई' बुक में भी शब्दकोश उपलब्ध होता है । तुम अंतरजाल द्वारा भी शब्दकोश में शब्दों के अर्थ जान सकते हो ।

सलिल-नीलिमा : अच्छा चाचा जी, अब हम चलते हैं । बहुत-बहुत धन्यवाद !

—— ० ——

पठनीय

सुभाषचंद्र बोस की जीवनी से कोई प्रेरक प्रसंग पढ़ो ।

शब्द वाटिका

ज्ञानवर्धक = ज्ञान बढ़ाने वाला
शब्दकोश = शब्दों के अर्थ बताने वाला संग्रह
अभियान = मुहिम
सुरसरि = गंगा नदी, देवनदी

मुहावरे

गागर में सागर = थोड़े में बहुत जानकारी
बाजी मारना = विजयी होना
बूँद-बूँद से सागर बनना = थोड़ा-थोड़ा संग्रह करके ही बड़ा संचय होना

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) संजाल पूर्ण करो :

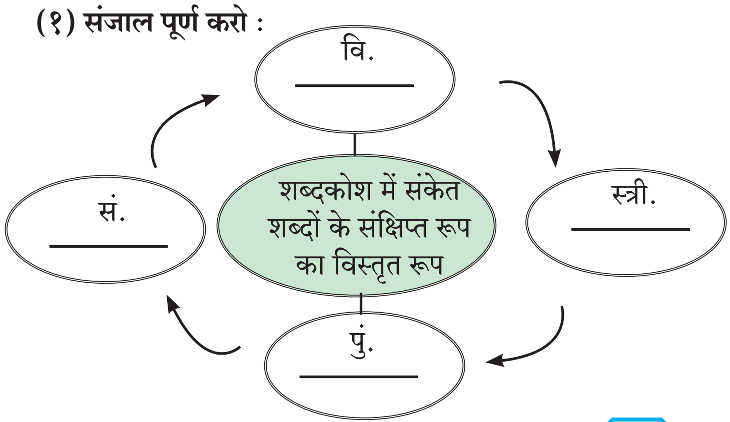

(२) टिप्पणी लिखो :

१. पड़ोसी
२. रामदास
३. नीलिमा और सलिल

(३) शब्दकोश की उपयोगिता के बारे में अपने विचार लिखो ।

(४) आकृति पूर्ण करो :

	सलिल और नीलिमा इन शब्दों के अर्थ ढूँढ़ रहे हैं	
	दो भाषाओं के शब्दकोश	

(५) कारण लिखो :

१. सलिल और नीलिमा रामदास के पास गए -------

२. वर्णमाला का क्रम और बारहखड़ी का ज्ञान होना आवश्यक है -------

(६) नीचे लिखे शब्दों को शब्दकोश के क्रम से लिखो :

नंदन, अर्थ, ज्ञान, क्षमा, जुगनू, भौतिक

भाषा बिंदु

निम्नलिखित अव्ययों के भेद पहचानकर स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग करो :

	अव्यय शब्द	भेद	वाक्य
१	अरेरे !		
२	परंतु		
३	के कारण		
४	आहिस्ता-आहिस्ता		
५	की तरफ		
६	क्योंकि		
७	हाय !		
८	तेज		

सदैव ध्यान में रखो

शब्दकोश के प्रयोग से शब्दसंपदा में वृद्धि होती है ।

उपयोजित लेखन

'यदि वर्षा ऋतु नहीं होती' विषय पर निबंध लिखो ।

HILFVB

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

'राष्ट्रीय विज्ञान दिवस' पर बनाए गए वैज्ञानिक उपकरणों की जानकारी देने वाले चार्ट बनाओ और उनपर टिप्पणी लिखो ।

१०. मेरे जेबकतरे के नाम

– *हरिशंकर परसाई*

परिचय

जन्म : १९२१, होशंगाबाद (म.प्र.)
मृत्यु: १९९५, जबलपुर (म.प्र.)
परिचय : हिंदी के मूर्धन्य आधुनिक व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का हिंदी साहित्य में व्यंग्य रचना को प्रतिष्ठित कराने में मौलिक योगदान रहा है । आपने भारतीय समाज के अंतर्विरोधों, विसंगतियों, भ्रष्टाचार, पाखंड तथा शोषण को व्यंग्य द्वारा बड़ी कुशलता से उद्घाटित किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'हँसते हैं-रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'दो नाकवाले लोग', 'सदाचार का ताबीज', 'विकलांग श्रद्धा का दौर' आदि ।

गद्य संबंधी

प्रस्तुत हास्य-व्यंग्य पत्र में हरिशंकर जी ने जेबकतरे द्वारा उनके जेब काटने के प्रसंग को बड़े ही मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया है ।

मौलिक सृजन

'यातायात की इलेक्ट्रॉनिक सिग्नल सिस्टिम बंद हो जाए तो' विषय पर अपने विचार लिखो ।

प्यारे भाई,

तूने भोपाल स्टेशन पर रेल के डिब्बे के भीतर दस आदमियों के बीच मेरा जेब काट लिया था । आशा है, तू मुझे भूला नहीं होगा । जेब में १७५ रुपये थे । गिन लेना । अगर पाँच-दस कम हों तो अगली बार मैं पूरे कर दूँगा । मैं यह नहीं चाहता कि मेरे मन में तो यह रहे कि १७५ रुपये गए और तेरे हाथ सिर्फ १७० रुपये पड़े । यह पैसे की बात नहीं है । दस-पाँच इधर-उधर हुए तो क्या फर्क पड़ता है । बात भावना की है । भावनात्मक बेईमानी मैंने कभी नहीं की ।

दोस्त, तूने मेरा बड़ा उपकार किया । चौरासी लाख योनियों में भटकने के बाद तो मानव देह मिलती है । मनुष्य का जीवन सिर्फ एक बार मिलता है और जेब काटने का गौरव सिर्फ मनुष्य को विधाता ने दिया है । कोई कुत्ते का जेब नहीं काटता मगर वह आदमी भी कितना अभागा है, जिसका एक बार भी जेब न कटे । ऐसी बेमानी जिंदगी जी जाए कि उसपर जेबकट का भी ध्यान न जाए । मैं आत्मग्लानि से पीड़ित था । उम्र बढ़ रही है, न जाने कब कूच का डंका बज जाए । बिना जेब कटे उस लोक में किस मुँह से जाऊँगा ? प्यारे, मैं तो खुद जेबकट की तलाश में था । तूने उतनी परेशानी फालतू उठाई । तू मुझसे कह देता कि मैं जेबकट हूँ, तो मैं खुद ही कहता-मैं तेरा कब से इंतजार कर रहा हूँ । ले, मेहरबानी करके मेरा जेब काट ले । मेरा जीवन सार्थक कर ।

दोस्त, वर्तमान सभ्यता जेबकटी की सभ्यता है । हर आदमी दूसरे की जेब काट रहा है । इस सभ्यता में अपना जेब बचाने का तरीका यह है कि दूसरे की जेब काटो । सिर्फ उसकी जेब सुरक्षित है, जो दूसरे के जेब पर नजर रखता है । मेरा जेब इसलिए कटा कि मैं अपने जेब पर ही ध्यान दे रहा था । अगर मैं पास की बर्थ के सेठ के जेब पर ध्यान देता तो मेरा जेब कभी नहीं कटता ।

दोस्त, तेरा-मेरा धंधा एक है । मैं भी जेबकट हूँ । मैं लोगों के जेब में रखे अनुभव निकालकर लिखता हूँ । अनुभवों से भरे कई जेब मैंने काटे हैं । तूने मुझ जेबकतरे का जेब काट लिया । विचार की बात यह है कि नाई, नाई से बाल कटाई के पैसे नहीं लेता, तो क्या एक जेबकट को दूसरे जेबकतरे का जेब काटना चाहिए ? एक धंधेवालों में जो नैतिकता होती है, उसका पालन तुझसे हुआ या नहीं, यह सोचना तेरा काम है ।

मैं तो कृतार्थ हूँ कि तूने मेरा जीवन सार्थक कर दिया । मैंने कभी लिखा था कि आदमी कचहरी जानेवाला जानवर है । आज कहता हूँ : आदमी वह जानवर है जिसका जेब कटता है ।

मगर यार, इतने लोगों में तूने मुझे कैसे छाँट लिया ? मैं बार-बार अपनी जैकेट के उस जेब को टटोलता था, जिसमें नोट रखे थे । बात यह है कि मैं टुच्चा आदमी हूँ । लोग तो हजारों रुपये जेब में रखे रहते हैं और ध्यान नहीं देते पर मैं सौ-पचास रुपये लेकर चलता हूँ, तो भी टटोलता रहता हूँ । तूने ताड़ लिया होगा कि मैं ओछा आदमी हूँ, जिसे रुपये लेकर चलने का अभ्यास नहीं है । या तूने मुझे कोई मालदार आदमी समझ लिया होगा । इधर कुछ मोटा हो गया हूँ । जैकेट पहन लेता हूँ, तो किराने का व्यापारी लगता हूँ । शरीर ने धोखा दे दिया । पिछले साल मेरे पास दो तगड़े कसरती जवान आए । बोले, 'हमारी व्यायामशाला का वार्षिकोत्सव है । उसमें आप प्रमुख अतिथि हों, ऐसी हमारी प्रार्थना है ।' मैं बड़े पशोपेश में पड़ा । इन लोगों ने मुझे क्या समझ लिया है ? लेखक और व्यायामशाला ? मैं अगर मरियल लेखक होता तो क्या ये मुझे मुख्य अतिथि बनाते ? मैं कुरते की आस्तीन चढ़ाकर जब निकला हूँ, तब लगता है, उस्ताद शागिर्दों को रियाज कराके नहा-धो कर बादाम खरीदने निकले हैं । मैंने उनसे कहा, ''वीरों, यह गौरव दारासिंह या चंदगीराम को दो । मैं बहुत तुच्छ हूँ ।'' वे नहीं माने और मुझे जाना पड़ा । इस शरीर ने मेरी क्या-क्या गत नहीं कराई । व्यायामशाला में भिजवाया और जेब कटवाया ।

दोस्त, मैं तेरी बुद्धि की दाद देता हूँ । तूने मुझे समझ लिया । तू सेठ पर नहीं रीझा । तू जानता था कि सेठ के पास जाएगा तो वह तेरी ही जेब काट लेगा । हम लेखक लोग मनुष्य के मन और चरित्र का अध्ययन करते हैं, पर तूने जैसा अध्ययन मेरा कर लिया वैसा मैं किसी पात्र का नहीं कर सका । असल में लेखक तुझे होना चाहिए और मुझे जेबकतरा । न जाने कब से तू मेरे पीछे पड़ा था । तुझे याद होगा, मैं कंडक्टर और एक यात्री के बीच का झगड़ा निपटा रहा था । तभी तूने समझ लिया होगा कि मेरी प्रकृति ऐसी है कि दूसरों के मामले में कूद पड़ता हूँ । तूने इसी दाँव से मुझे मारा । मुझे अब विश्वास हो गया कि दूसरे की मदद करना बड़ी आदत है । जिसे इसकी लत पड़ जाती है, उसका जेब कटता है । तुझे तो याद होगा कि तूने डिब्बे के उस कोने में खड़े होकर मुझे बुलाया था । मैंने देखा, तेरी आँखें लाल थीं । तू पागल जैसा लग रहा था । तूने कहा था, ''इदर आओ, इदर आओ, बर्थ नहीं मिलता, सीट नहीं मिलता-हम परदेशी आदमी हैं ।'' तेरा यह दाँव चला नहीं । तू मुझे

संभाषणीय

किसी अन्य विषय पर कही गई बातें, संवाद, वक्तव्य, भाषण के मुद्दों को पुनः प्रस्तुत करो ।

पठनीय

यात्रा करते समय बस स्थानक, रेल स्थानक पर लगाई गई सावधान रहने संबंधी सूचनाएँ पढ़ो ।

श्रवणीय

‘ग्राहक संरक्षण दिवस’ की जानकारी सुनो और सुनाओ ।

अलग ले जा कर लूटना चाहता था । पर पगले, उसमें छीना-झपटी होती । हो सकता था, तू गिरफ्तार हो जाता । मैंने यह खतरा देख लिया था । इसीलिए मैं सीट से उठा नहीं और कहा, ‘‘कंडक्टर से बात करो ।’’ तब तू मेरे पास आ गया और अपने हाथ मेरे कंधों पर रख दिए । तूने मेरी आँखों में भरपूर देखा । मैंने तेरी आँखों में देखा । मुझे लगा ही नहीं कि तू जेबकतरा है । अगर मैं समझ जाता कि तू जेबकट है तो तुझे गले लगा लेता । मैं समझा, तू तो पागल है । लिहाजा मैं आत्मरक्षा के लिए तैयार हो गया । तय किया कि तूने गड़बड़ की तो मैं तुझे मारूँगा- एक घूँसा नाक पर, एक जबड़े पर और लात पेट पर । तू बड़ा ऊँचा कलाकार है । तूने मेरा ध्यान जेब से किस चतुराई से हटा दिया । वाह !

इसी क्षण तेरा साथी मेरी बायीं तरफ से आया । उसने मेरे कान के पास मुँह लगाकर कहा, ‘‘ये अपनी भाषा नहीं समझता ।’’ और उसने मेरी जेब से वह लिफाफा निकाल लिया जिसमें नोट रखे थे । प्यारे, मैं न घड़ी बाँधता, न बटुआ रखता; कार्य अनंत हैं । बार-बार घड़ी क्या देखना । मैं लेखक हूँ । जिस प्रकाशन प्रतिष्ठान के रुपये होते हैं, उसी के लिफाफे में मैं रख लेता हूँ । कभी भी इस प्रतिष्ठान का पैसा उस प्रतिष्ठान के लिफाफे में नहीं रखता । आदमी को लिफाफे के बारे में बहुत सावधान होना चाहिए । लिफाफा दुरुस्त है तो सब ठीक है । फिर पूँजीवाद के अंतर्विरोध को मैं जानता हूँ । एक प्रकाशक का पैसा दूसरे के लिफाफे में रख दूँ तो हो सकता है, लिफाफा रुपयों को लील जाए ।

दोस्त, यह सब घटना मैंने इटारसी के बाद जोड़ी । इटारसी तक मुझे पता नहीं था कि मेरा पैसा निकल गया । इटारसी में मैंने टटोला तो पाया, लिफाफा गायब है । तब मुझे समझ आया कि तू जेबकट था । दो स्टेशन मैंने दुख मनाया । फिर सोचा, ‘पैसे भी खोए और दुख भी भोगूँ । मैं कैसा बेवकूफ हूँ । मैं चैन से सो गया ।’

तू यह सब पढ़कर शायद दुखी होगा । नहीं, दुखी होने की जरूरत नहीं, भाई । मैं भी जेब काटने में उस्ताद हूँ । हाँ, तरीका दूसरा है । तूने मेरा जेब काटा तो मैंने एक स्वामी का जेब काट लिया । एक जयंती पर भाषण देकर मैंने कुछ ज्यादा ही रुपये कमा लिया । तू अपने मन से ग्लानि को निकाल दे । तूने मेरा उपकार ही किया है । मेरा जेब कट गया है, यह जानकर मेरे दोस्तों ने मेरे लिए रुपये का इंतजाम कर दिए । तू १७५ रुपये ले गया था न । मैंने ५०० रुपये कमा लिए । २०० रुपये तो उन स्वामी का जेब काटने से मिले । ३०० रुपये दो दोस्तों ने मिलकर दे दिए । अब तू हिसाब कर । तेरे हाथ मेरे १७५ रुपये लगे मेरे १७५ रुपये गए, पर ५०० मिले । यानी इस पूरे मामले में मैं ३२५ रुपये के फायदे में

रहा । अब बता-तू बड़ा जेबकट है या मैं हूँ ?

दोस्त, क्या-क्या योजनाएँ बनाई थीं ! मित्रों ने कहा, ''अखबार में विज्ञप्ति दे देते हैं कि परसाई जी का जेब कट गया है, इसलिए उनका हर मित्र उन्हें एक रुपया दे ।'' मैंने इसे नामंजूर कर दिया ।

कहा, 'यारों, मुझे जिंदा रहने दो । अगर रुपये नहीं आए तो लगेगा मैं इस भ्रम पर जिंदा था कि मेरे दोस्त हैं । भरम टूटने से आदमी मर जाता है ।'

तब मित्रों ने कहा, ''अच्छा, तो फिर तुम्हारी फोटो छापकर उसके नीचे लिख दें-इस आदमी का जेब कट गया है । यह जिस किसी को मिले, इसे एक रुपया दे दे ।''

यह योजना भी मुझे पसंद नहीं आई । तब मित्रों ने कहा, ''अच्छा, गुमशुदा की तलाश शीर्षक के नीचे छपवाते हैं-प्रिय परसाई, तुम सिर्फ पौने दो सौ रुपयों के कारण कहीं छिप गए । लोग तो करोड़ों रुपयों की कालिख से पुता चेहरा नहीं छिपाते । तुम जहाँ कहीं भी हो, चले आओ । पौने दो सौ रुपयों का प्रबंध तुम्हारे दोस्त कर देंगे ।''

मेरे प्यारे जेबकट दोस्त, जेब काटने के मामले में मैं तेरा चाचा होता हूँ । इसी जेबकट का उपयोग करता तो हजारों कमा सकता था ।

भोपाल में मेरे अजीज दोस्त रहते हैं । वहीं जेब कटने से उनका भी इम्तहान लगे हाथ हो गया ।

प्यारे, आगे जब तू मेरा जेब काटे तो बताकर काटना । हम मिलकर ऐसी योजना बनाएँगे कि दोनों मालदार हो जाएँ ।

आशा है, तू मेरी दम पर अभी तो सुखी होगा ही ।

शुभकामनाओं सहित,
तेरा प्रिय मित्र

—— ० ——

लेखनीय

हिंदी भाषा में लिखी विभिन्न प्रकार की सामग्री अंतरजाल से पढ़ो । उससे प्राप्त सूचनाएँ, सर्वेक्षण, टिप्पणी को संकलित करके संपादित लेख बनाओ ।

शब्द वाटिका

आत्मग्लानि = पश्चाताप
सार्थक = अर्थवाला, उद्देश्यवाला
टुच्चा = ओछा
मरियल = बेदम, कमजोर
लिहाजा = इसलिए, अतः

मुहावरे

पशोपेश में पड़ना = असमंजस में पड़ना
लील जाना = निगल जाना
चैन से सोना = निश्चिंत रहना

* **सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) कारण लिखो :

१. जेबकतरे को लेखक की जेब नहीं काटनी चाहिए ।

२. जेबकतरे ने लेखक को मालदार समझ लिया ।

(२) संक्षेप में उत्तर लिखो :

१. जेब कटने पर भी लेखक फायदे में कैसे रहा ?

२. जेब कटने पर लेखक के मित्रों ने कौन-सी योजनाएँ बनाईं ?

(३) लिखो :

१. लेखक इनका अध्ययन करते हैं – --------

२. पाठ में आए शहरों के नाम – --------

३. अपनी आत्मरक्षा के लिए लेखक द्वारा की गई तैयारी – --------

(४) ऐसे प्रश्न तैयार करो जिनके उत्तरों में निम्न शब्द हों :

लिफाफा, जयंती, दोस्त, अंतर्विरोध

(५) शब्दकोश से निम्न शब्दों के अर्थ खोजकर लिखो एवं मूल शब्दों का अपने वाक्य में प्रयोग करो :

उपकार, विधाता, आत्मग्लानि, कसरती, प्रतिष्ठान, गुमशुदा

(६) पाठ में प्रयुक्त व्यायामशाला से संबंधित शब्द लिखो ।

सदैव ध्यान में रखो

पर्यटन/यात्रा करते समय आवश्यक सावधानियाँ बरतनी चाहिए ।

भाषा बिंदु

पाठ्‌यपुस्तक में आए हुए दस-दस संधि एवं सामासिक शब्द ढूँढ़कर उनकी सूची बनाओ । उनके सामने उनके प्रकार लिखो ।

उपयोजित लेखन

'अनुशासित यातायात सुरक्षित यात्रा' इस विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन

'सड़क सुरक्षा सप्ताह' के लिए आवश्यक घोषवाक्यों के बैनर बनाओ और विद्‌यालय की दीवारों पर लगाओ ।

MRL7PG

११. परिवर्तन

– दुष्यंत कुमार

ये कौन ?
कौन, कैलास शिखर पर अनाहूत आया ?
ये किसका स्वर है जो मेरे निश्चय से टकराया ?
स्तुति करता सामने नहीं आता है
बचता है ।
यह कौन मुझे
सम्मोहित करने को छल रचता है ।
ये सारे संबोधन हैं कितने क्रूर व्यंग्य !
जो करते आए हैं मेरे संग छल सदैव !
तुम दास समझते हो मैं मित्र समझता हूँ
संबोधन और सर्वनामों की सृष्टि रोक,
उत्तर दो मेरे एक प्रश्न का मित्रमान
दक्ष के यज्ञ में आमंत्रित थे सभी देव
था किंतु उपेक्षित मैं
पर तुमने दिया ध्यान ?
देवत्व और आदर्शों का परिधान ओढ़
मैंने क्या पाया ?
(गहरी पीड़ा से)
हर परंपरा के मरने का विष
मुझे मिला,
हर सूत्रपात का
श्रेय ले गए लोग ।

परिचय

जन्म : १९३३, बिजनौर, (उ.प्र.)
मृत्यु : १९७५, भोपाल (म.प्र.)
परिचय : दुष्यंत कुमार एक प्रसिद्ध हिंदी कवि और गजलकार थे। आपने ४२ वर्ष के जीवन में अपार ख्याति अर्जित की । आपने कविता, गीत, गजल के क्षेत्र में भरपूर लेखन किया ।
प्रमुख कृतियाँ : 'एक कंठ विषपायी', 'मसीहा मर गया' (गीतिनाटक) 'आँगन में एक वृक्ष' (उपन्यास) 'मन के कोण' (लघुकथाएँ) आदि ।

पद्‌य संबंधी

प्रस्तुत पद्‌यांश 'एक कंठ विषपायी' गीतिनाट्‌य से लिया गया है। यह प्रसंग उस समय का है जब 'सती' ने आत्मदाह कर लिया था । शिव सती के शव को लेकर मंदाकिनी नदी की ओर प्रस्थान करने वाले ही थे कि कुबेर की आवाज सुनकर रुक गए और उन्हें फटकारने लगे । दुष्यंत कुमार जी ने इस प्रतीकात्मक कथा के माध्यम से समाज में व्याप्त छल, स्वार्थ, असमानता, श्रेय लूटने की कुपरंपरा, महिमा मंडन, धनपतियों के स्वार्थ, सत्ताधारियों की हृदयहीनता पर करारा प्रहार किया है ।

(क्षणभर रुककर)

मैं ऊब चुका हूँ
इस महिमा मंडित छल से,
अब मुझे स्वयं का
वास्तव सत्य पकड़ना है,
जिन आदर्शों ने
मुझे छला है कई बार
मेरा सुख लूटा है
अब उनसे लड़ना है ।

(फटकारते हुए)

बोलो क्यों आए हो ?
क्या और अपेक्षित है ?
कर्तव्य तुम्हारा धन संचय से इतर
और भी है कोई ?
यदि है तो, हे धनपति कुबेर !
यह है कुयोग;
मैं तो समझा था
धन को दृष्टि नहीं होती
भावना शून्य हो जाते हैं धनवान लोग ।
आत्मस्थ बना देती है सत्ता मित्रों को
आचरण बदलते जाते हैं, उनके क्षण-क्षण,
अपनत्व खत्म हो जाता है,
बच रहता है थोड़ा-सा शिष्टाचार
और औपचारिकता
प्रभुता का ऐसा ही होता आकर्षण ।

— ० —

कल्पना पल्लवन

'केवल संपत्ति से नहीं सद्‌गुणों से समृद्‌ध बनना महत्त्वपूर्ण होता है,' इस पर अपने विचार लिखो ।

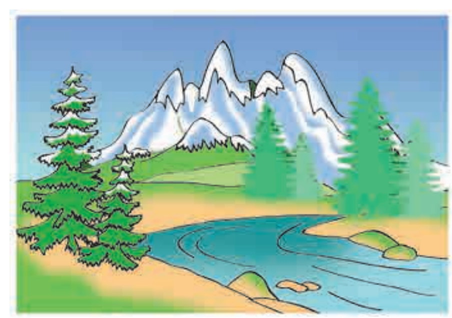

सदैव ध्यान में रखो

विश्वास काँच की तरह होता है, इसे टूटने नहीं देना चाहिए ।

शब्द वाटिका

अनाहूत = बिना बुलाए आए हुए
प्रभुता = प्रभुत्व, श्रेष्ठता
परिधान = वस्त्र
सूत्रपात = प्रारंभ
कुयोग = बुरा अवसर
आत्मस्थ = स्वयं में स्थित

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :–**

(१) संजाल पूर्ण करो :

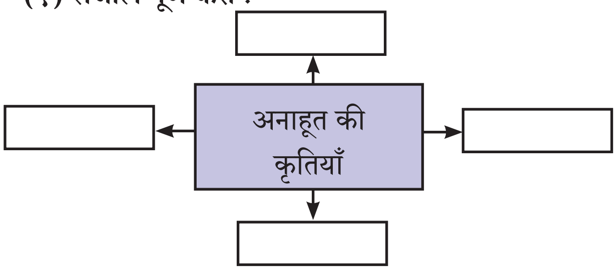

(२) जोड़ियाँ मिलाओ :

'अ'	उत्तर	'आ'
दक्ष	-------	व्यंग्य
भावना शून्य	-------	यज्ञ
धनपति	-------	धनवान
क्रूर	-------	कुबेर

(३) कृति पूर्ण करो :

१. इनके परिधान — .... / ....

२. इनकी सृष्टि रोकनी है — .... / ....

(४) सही शब्द चुनकर वाक्य फिर से लिखो :

१. भावना शून्य हो जाते हैं ------- लोग ।
(अमीर/धनवान/मित्र)

२. हर ------- का श्रेय ले गए लोग ।
(कार्य/सूत्रपात/निर्माण)

३. जिन आदर्शों ने मुझे ------- है कई बार ।
(छला/दुख दिया/तोड़ा)

(५) लिखो :

१. निश्चय से टकराने वाला = -------
२. सूत्रपात का श्रेय लेने वाला = -------
३. आत्मस्थ बना देने वाली = -------
४. भावनाशून्य होने वाले = -------

(६) निम्न काव्य पंक्तियों का अर्थ लिखो :

'भावना शून्य हो जाते ------- ।

---------- खत्म हो जाता है',

उपयोजित लेखन ऐसे प्रसंग का लेखन करो जिससे स्पष्ट हो कि कुसंग का फल बुरा होता है ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन किसी कहानी के मुद्दों का चित्रसहित फोल्डर बनाओ ।

HRV3R4

भाषा बिंदु

१. ने, को, से, में, पर, का/की/के, अरे, के लिए, से/द्‌वारा कारकों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

२. पढ़ो और समझो :

शब्दालंकार

निम्नलिखित शब्दालंकारों को पढ़ो तथा समझो :

१. 'मधुर-मधुर मुस्कान मनोहर, मनुज वेश का उजियाला'

इस पंक्ति में 'म' वर्ण की आवृत्ति है । यहाँ एक वर्ण की आवृत्ति हुई है । यह **अनुप्रास अलंकार** है ।

२. 'जेते तुम **तारे** तेते नभ में न **तारे** हैं ।'

इस पंक्ति में '**तारे**' का अर्थ उद्‌धार किया हैं और दूसरे '**तारे**' का अर्थ सितारे है । तारे शब्द भिन्न-भिन्न अर्थ में प्रयुक्त हुआ है । यह **यमक अलंकार** है ।

३. मधुबन की छाती को देखो ।
सूखी कितनी इसकी कलियाँ ।

इस पंक्ति में '**कलियाँ**' शब्द से एक से अधिक अर्थ प्राप्त हुए हैं । कलियाँ=फूल का अविकसित रूप,यौवन से पूर्व की अवस्था । यह **श्लेष अलंकार** है ।

अर्थालंकार

निम्नलिखित अर्थालंकारों को पढ़ो और समझो :

१. धूप की उष्मित छुवन से फूल-सी खिलती त्वचा ।

इस पंक्ति में एक वस्तु को दूसरे के समान बताया गया है । त्वचा को फूल के समान खिलती हुई बताया गया है । यह **उपमा अलंकार** है ।

२. राम-नाम मणि-दीप धरि जीह-देहरी द्‌वार ।

इस पंक्ति में राम-नाम, मणि-दीप के समान है, ऐसा बताया गया है । यहाँ एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आरोप किया गया है । यह **रूपक अलंकार** है ।

३. ''लटकनि मनु मत्त मधुपगन मादक मधुहिं पिए ।''

उपमेय= लट, उपमान = लट पर मधुप की संभावना व्यक्त की गई है । यहाँ एक वस्तु में दूसरी वस्तु की संभावना की गई है । यहाँ 'मनु' वाचक शब्द है । यह **उत्प्रेक्षा अलंकार** है ।

व्याकरण विभाग (भाषा बिंदु)

शब्द भेद

- विकारी शब्द
- अविकारी शब्द

(१)

विकारी शब्द के प्रकार

संज्ञा

१. जातिवाचक
२. व्यक्तिवाचक
३. भाववाचक
४. द्रव्यवाचक
५. समूहवाचक

सर्वनाम

१. पुरुषवाचक
२. अ. निश्चयवाचक
   आ. अनिश्चयवाचक
३. निजवाचक
४. प्रश्नवाचक
५. संबंधवाचक

विशेषण

१. जातिवाचक
२. गुणवाचक
३. परिमाणवाचक
   - निश्चित
   - अनिश्चित

४. संख्या वाचक
   - निश्चित
   - अनिश्चित

क्रिया

१. सकर्मक
२. अकर्मक
३. संयुक्त
४. प्रेरणार्थक
५. सहायक

(२)

अविकारी शब्द (अव्यय) के प्रकार

- क्रिया विशेषण अव्यय
- संबंधसूचक अव्यय
- समुच्चयबोधक अव्यय
- विस्मयादिबोधक अव्यय

(३)

संधि के भेद

- स्वर संधि
- व्यंजन संधि
- विसर्ग संधि

(४)

अलंकार के भेद

- **शब्दालंकार**
  - शब्दालंकार के भेद
    - अनुप्रास
    - श्लेष
    - यमक
- **अर्थालंकार**
  - अर्थालंकार के भेद
    - उपमा
    - रूपक
    - उत्प्रेक्षा

(५) समास और उसके भेद

- द्‌विगु समास
- द्‌वंद्‌व समास
- बहुब्रीहि समास
- अव्ययीभाव समास
- कर्मधारय समास
- तत्पुरुष समास

(६) कारक एवं विभक्तियाँ

	कारक	विभक्तियाँ
१.	कर्ता कारक	ने
२.	कर्म कारक	को
३.	करण कारक	से, के द्‌वारा
४.	संप्रदान कारक	को, के लिए
५.	अपादान कारक	से
६.	संबंध कारक	का–की–के
७.	अधिकरण कारक	में, पर
८.	संबोधन कारक	हे !, अजी !, अहो !, अरे !

कारक : संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ व्यक्त होता है, वे कारक हैं ।

विभक्तियाँ : कारक सूचित करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के आगे जो प्रत्यय लगाए जाते हैं, वे विभक्तियाँ हैं ।

(७) काल और उनके प्रकार–उपप्रकार

- वर्तमानकाल: सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण
- भूतकाल: सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण
- भविष्यकाल: सामान्य, अपूर्ण, पूर्ण

(८) वाक्य के प्रकार

- रचना की दृष्टि से: साधारण, मिश्र, संयुक्त
- अर्थ की दृष्टि से: विधानार्थक, निषेधार्थक, प्रश्नार्थक, आज्ञार्थक, विस्मयाधिबोधक, संदेशसूचक

९. विरामचिह्‌न और उनके प्रकार

१०. शब्द शुद्‌धीकरण/वाक्य शुद्‌धीकरण

११. मुहावरे, कहावतें (प्रयोग)

१२. वाक्य के उद्‌देश्य और विधेय

शब्दसंपदा :– लिंग, वचन, विरुद्‌धार्थी, समानार्थी, शब्दयुग्म, अनेक शब्दों के लिए एक शब्द, भिन्नार्थक शब्द, मराठी–हिंदी समोच्चारित भिन्नार्थक, कठिन शब्दों के अर्थ, उपसर्ग–प्रत्यययुक्त शब्द, कृदंत, तद्‌धित ।

वर्ण, वर्ण मेल और वर्ण विच्छेद पढ़ो, समझो और करो :

- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ
- इनका उच्चारण स्वतंत्र रूप से किया जाता है ।
- ये व्यंजनों के उच्चारण में सहायता करते हैं ।

स्वर

- क्, च्, त्, ट्, प्, ...मूल व्यंजन हैं ।
- ये स्वरों की सहायता के बिना नहीं बोले जाते ।
- व्यंजनों में स्वरों को मिलाकर लिखा और बोला जाता है । क्+अ=क, न्+इ=नि, प्+ओ=पो

व्यंजन

वर्ण

वह मूल ध्वनि जिसके खंड नहीं होते ।

वर्ण विच्छेद		वर्ण विच्छेद	
मानवीय	म्+आ+न्+अ+व्+ई+य्+अ	वाक्य	----------------
सहायता	स्+अ+ह्+आ+य्+अ+त्+आ	शब्द	----------------
मृदुल	म्+ऋ+द्+उ+ल्+अ	व्यवहार	----------------

वर्ण मेल		वर्ण मेल	
अ+त्+इ+र्+इ+क्+त्+अ	अतिरिक्त	ज्+उ+ई	---------
स्+आ+म्+ऊ+ह्+इ+क्+अ	सामूहिक	प्+ऐ+द्+अ+ल्+अ	---------
ब्+आ+ल्+अ+भ्+आ+र्+अ+त्+ई	बालभारती	श्+औ+न्+अ+क्+अ	---------

ध्यान में रखिए :– क्ष, त्र, श्र और ज्ञ संयुक्त वर्ण हैं :–

क्ष =क्+ष्+अ, त्र=त्+र्+अ, श्र =श्+र्+अ, ज्ञ=ज्+ञ्+अ

उपयोजित लेखन (रचना विभाग)

पत्र लेखन

अपने विचारों, भावों को शब्दों के द्‌वारा लिखित रूप में अपेक्षित व्यक्ति तक पहुँचा देने वाला साधन है पत्र ! हम सभी 'पत्रलेखन' से परिचित हैं ही । आजकल हम नई-नई तकनीक को अपना रहे हैं । संगणक, भ्रमणध्वनि, अंतरजाल, ई-मेल, वीडियो कॉलिंग जैसी तकनीक को अपने दैनिक जीवन से जोड़ने का प्रयास कर रहे हैं । दूरध्वनि, भ्रमणध्वनि के आविष्कार के बाद पत्र लिखने की आवश्यकता कम महसूस होने लगी है फिर भी अपने रिश्तेदार, आत्मीय व्यक्ति, मित्र/सहेली तक अपनी भावनाएँ प्रभावी ढंग से पहुँचाने के लिए पत्र एक सशक्त माध्यम है । पत्रलेखन की कला को आत्मसात करने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है । अपना कहना (माँग/शिकायत/अनुमति/विनती/आवेदन) उचित तथा कम-से-कम शब्दों में संबंधित व्यक्ति तक पहुँचाना, अनुरूप भाषा का प्रयोग करना एक कौशल है । अब तक हम जिस पद्‌धति से पत्रलेखन करते आए हैं, उसमें नई तकनीक के अनुसार अपेक्षित परिवर्तन करना आवश्यक हो गया है।

पत्रलेखन में भी आधुनिक तंत्रज्ञान/तकनीक का उपयोग करना समय की माँग है । आने वाले समय में आपको ई-मेल भेजने के तरीके से भी अवगत होना है । अतः इस वर्ष से पत्र के नये प्रारूप के अनुरूप ई-मेल की पद्‌धति अपनाना अपेक्षित है ।

⁕ पत्र लेखन के मुख्य दो प्रकार हैं, औपचारिक और अनौपचारिक । (पृष्ठ क्र.९, ६९)

औपचारिक पत्र

● प्रति लिखने के बाद पत्र प्राप्तकर्ता का पद और पता लिखना आवश्यक है । ● पत्र के विषय तथा संदर्भ का उल्लेख करना आवश्यक है । ● इसमें महोदय/महोदया शब्द द्‌वारा आदर प्रकट किया जाता है । ● निश्चित तथा सही शब्दों में आशय की प्रस्तुति करना अपेक्षित है । ● पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले का नाम, पता लिखना चाहिए। ● ई-मेल आईडी देना आवश्यक है ।

अनौपचारिक पत्र

● संबोधन तथा अभिवादन रिश्तों के अनुसार, आदर के साथ करना चाहिए । ● प्रारंभ में जिसको पत्र लिखा है उसका कुशलक्षेम पूछना चाहिए । ● लेखन स्नेह, सम्मान सहित, प्रभावी शब्दों और विषय विवेचन के साथ होना चाहिए। ● रिश्ते के अनुसार विषय विवेचन में परिवर्तन अपेक्षित है। ● इस पत्र में विषय उल्लेख आवश्यक नहीं है । ● पत्र का समापन करते समय बायीं ओर पत्र भेजने वाले के हस्ताक्षर, नाम तथा पता लिखना आवश्यक है ।

टिप्पणी : पत्र लेखन में अब तक लिफाफे पर पत्र भेजने वाले (प्रेषक) का पता लिखने की प्रथा है । ई-मेल में लिफाफा नहीं होता है । अब पत्र में ही पता लिखना अपेक्षित है ।

गद्‌य आकलन (प्रश्न निर्मिति)

● भाषा सीखकर प्रश्नों की निर्मिति करना एक महत्त्वपूर्ण भाषाई कौशल है । पाठ्‌यक्रम में भाषा कौशल को प्राप्त करने के लिए प्रश्न निर्मिति घटक का समावेश किया गया है । ● दिए गए परिच्छेद (गद्‌यांश) को पढ़कर उसी के आधार पर पाँच प्रश्नों की निर्मिति करनी है । प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में हों, ऐसे ही प्रश्न बनाए जाएँ ।

⁕ प्रश्न ऐसे हों : ● तैयार प्रश्न सार्थक एवं प्रश्न के प्रारूप में हों । ● प्रश्नों के उत्तर दिए गए गद्‌यांश में हों । ● निर्मित प्रश्न के अंत में प्रश्नचिह्न लगाना आवश्यक है । ● प्रश्न रचना का कौशल प्राप्त करने के लिए अधिकाधिक अभ्यास की आवश्यकता है । ● प्रश्न का उत्तर नहीं लिखना है । ● प्रश्न रचना पूरे गद्‌यांश पर होनी आवश्यक है ।

वृत्तांत लेखन

वृत्तांत का अर्थ है– घटी हुई घटना का विवरण/रपट/अहवाल लेखन । यह रचना की एक विधा है । इसे विषय के अनुसार लिखना पड़ता है। वृत्तांत लेखन एक कला है, जिसमें भाषा का कुशलतापूर्वक प्रयोग करना होता है । यह किसी घटना, समारोह का विस्तृत वर्णन है जो किसी को जानकारी देने हेतु लिखा होता है । इसे रिपोर्ताज, इतिवृत्त, अहवाल आदि नामों से भी जाना जाता है ।

वृत्तांत लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य बातें : • वृत्तांत में घटित घटना का ही वर्णन करना है । • घटना, काल, स्थल का वर्णन अपेक्षित होता है । साथ–ही–साथ घटना जैसी घटित हुई उसी क्रम से प्रभावी और प्रवाही भाषा में वर्णित हो । • वृत्तांत लेखन लगभग अस्सी शब्दों में हो । समारोह में अध्यक्ष/उद्‌घाटक/व्याख्याता/वक्ता आदि के जो मौलिक विचार/संदेश व्यक्त हुए हैं, उनका संक्षेप में उल्लेख हो • भाषण में कहे गए वाक्यों को दुहरा '' .... '' अवतरण चिह्‌न लगाकर लिखना चाहिए। • आशयपूर्ण, उचित तथा आवश्यक बातों को ही वृत्तांत में शामिल करें । • वृत्तांत का समापन उचित पद्‌धति से हो ।

वृत्तांत लेखन के विषय : शिक्षक दिवस, हिंदी दिवस, वाचन प्रेरणा दिवस, शहीद दिवस, राष्ट्रीय विज्ञान दिवस, बालिका दिवस, बाल दिवस, दिव्यांग दिवस, वार्षिक पुरस्कार वितरण आदि ।

कहानी लेखन

कहानी सुनना–सुनाना आबाल वृद्‌धों के लिए रुचि और आनंद का विषय होता है । कहानी लेखन विद्‌यार्थियों की कल्पनाशक्ति, नवनिर्मिति व सृजनशीलता को प्रेरणा देता है । इसके पूर्व की कक्षाओं में आपने कहानी लेखन का अभ्यास किया है । कहानी अपनी कल्पना और सृजनशीलता से रची जाती है । कहानी का मूलकथ्य (कथाबीज) उसके प्राण होते हैं । मूल कथ्य के विस्तार के लिए विषय को पात्र, घटना, तर्कसंगत विचारों से परिपोषित करना लेखन कौशल है । इसी लेखन कौशल का विकास करना कहानी लेखन का उद्‌देश्य है । कहानी लेखन का उद्‌देश्य मनोरंजन तथा आनंदप्राप्ति भी है ।

कहानी लेखन में निम्न बातों की ओर विशेष ध्यान दें : • शीर्षक, कहानी के मुद्‌दों का विस्तार और कहानी से प्राप्त सीख, प्रेरणा, संदेश ये कहानी लेखन के अंग हैं । • कहानी भूतकाल में लिखी जाए । कहानी के संवाद प्रसंगानुकूल, वर्तमान या भविष्यकाल में हो सकते हैं । संवाद दोहरे अवतरण चिह्‌न में लिखना अपेक्षित है । • कहानी लेखन की शब्द सीमा सौ शब्दों तक हो । • कहानी के आरंभ में शीर्षक लिखना आवश्यक होता है । शीर्षक छोटा, आकर्षक, अर्थपूर्ण और सारगर्भित होना चाहिए । • कहानी में कालानुक्रम, घटनाक्रम और प्रवाह होना आवश्यक है । प्रत्येक मुद्‌दे या शब्द का अपेक्षित विस्तार आवश्यक है । • घटनाएँ धाराप्रवाह अर्थात एक दूसरे से शृंखलाबद्‌ध होनी चाहिए । • कहानी के प्रसंगानुसार वातावरण निर्मिति होनी चाहिए । उदा. जंगल में कहानी घटती है तो जंगल का रोचक, आकर्षक तथा सही वर्णन अपेक्षित है । • कहानी के मूलकथ्य/विषय (कथाबीज) के अनुसार पात्र व उनके संवाद और भाषा पात्रानुसार, प्रसंगानुकूल होने चाहिए । • प्रत्येक परिसर/क्षेत्र की भाषा एवं भाषा शैली में भिन्नता/विविधता होती है । इसकी जानकारी होनी चाहिए । • अन्य भाषाओं के उद्‌धरण, सुवचनों आदि के प्रयोग से यथासंभव बचें । • कहानी लेखन में आवश्यक विरामचिह्‌नों का प्रयोग करना न भूलें । • कहानी लेखन करते समय अनुच्छेद बनाएँ । जहाँ एक विचार, एक घटना समाप्त हो वहाँ परिच्छेद समाप्त करें । • कहानी का विस्तार करने के लिए उचित मुहावरे, कहावतें, सुवचन, पर्यायवाची शब्द आदि का प्रयोग करें ।

कहानी लेखन–[शब्द सीमा अस्सी से सौ तक]

कहानी लेखन के प्रकार

(१) शब्दों के आधार पर
(२) मुद्‌दों के आधार पर
(३) सुवचन/कहावतों के आधार पर

विज्ञापन

वर्तमान युग स्पर्धा का है और विज्ञापन इस युग का महत्त्वपूर्ण अंग है । उत्कृष्ट विज्ञापन पर उत्पाद की बिक्री का आँकड़ा निर्भर करता है । आज संगणक तथा सूचना प्रौद्योगिकी के युग में, अंतरजाल (इंटरनेट) एवं भ्रमणध्वनि (मोबाइल) की क्रांति के काल में विज्ञापन का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है । विज्ञापनों के कारण किसी वस्तु, समारोह, शिविर आदि के बारे में पूरी जानकारी आसानी से समाज तक पहुँच जाती है । लोगों के मन में रुचि निर्माण करना, ध्यान आकर्षित करना विज्ञापन का मुख्य उद्देश्य होता है ।

विज्ञापन लेखन करते समय निम्न मुद्दों की ओर ध्यान दें : • कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक आशय व्यक्त हों । • विज्ञापन की ओर सभी का ध्यान आकर्षित हो, अतः शब्दरचना, भाषा शुद्ध हो । • जिसका विज्ञापन करना है उसका नाम स्पष्ट और आकर्षक ढंग से अंकित हो । • विषय के अनुरूप रोचक शैली हो । आलंकारिक, काव्यमय, प्रभावी शब्दों का उपयोग करते हुए विज्ञापन अधिक आकर्षक बनाएँ । • ग्राहकों की बदलती रुचि, पसंद, आदत, फैशन एवं आवश्यकताओं का प्रतिबिंब विज्ञापन में परिलक्षित होना चाहिए । • विज्ञापन में उत्पाद की गुणवत्ता महत्वपूर्ण होती है, अतः छूट का उल्लेख करना हर समय आवश्यक नहीं है । • विज्ञापन में संपर्क स्थल का पता, संपर्क (फोन, मोबाइल नंबर, ई-मेल आईडी) का स्पष्ट उल्लेख करना आवश्यक है । • पेन्सिल, स्केच पेन का उपयोग न करें । • चित्र, डिजाइन बनाने की आवश्यकता नहीं है । • विज्ञापन की शब्द मर्यादा पचास से साठ शब्दों तक अपेक्षित है । विज्ञापन में आवश्यक सभी मुद्दों का समावेश हो ।

निबंध लेखन

निबंध लेखन एक कला है । निबंध का शाब्दिक अर्थ होता है 'सुगठित अथवा सुव्यवस्थित रूप में बँधा हुआ' । साधारण गद्य रचना की अपेक्षा निबंध में रोचकता और सजीवता पाई जाती है । निबंध गद्य में लिखी हुई रचना होती है, जिसका आकार सीमित होता है । उसमें किसी विषय का प्रतिपादन अधिक स्वतंत्रतापूर्वक और विशेष अपनेपन और सजीवता के साथ किया जाता है । एकसूत्रता, वस्तु/व्यक्तित्व का प्रतिबिंब, आत्मीयता, कलात्मकता निबंध के तत्त्व माने जाते हैं । इन तत्त्वों के आधार पर निबंध की रचना की जाती है ।

निबंध लिखते समय निम्नलिखित बातों की ओर ध्यान दें :

• प्रारंभ, विषय विस्तार, समापन इस क्रम से निबंध लेखन करें । • विषयानुरूप भाषा का प्रयोग करें । • भाषा प्रवाही, रोचक और मुहावरेदार हो । • कहावतों, सुवचनों का यथास्थान प्रयोग करें । • शुद्ध, सुवाच्य और मानक वर्तनी के अनुसार निबंध लेखन आवश्यक है । • सहज, स्वाभाविक और स्वतंत्र शैली में निबंध की रचना हो । • विचार स्पष्ट तथा क्रमबद्ध होने आवश्यक हैं । • निबंध की रचना करते समय शब्द चयन, वाक्य विन्यास की ओर ध्यान देना आवश्यक है । • निबंध लेखन में विषय को प्रतिपादित करने की पद्धति के साथ ही कम-से-कम चार अनुच्छेदों की रचना हो । • निबंध का प्रारंभ आकर्षक और जिज्ञासावर्धक हो । • निबंध के मध्यभाग में विषय का प्रतिपादन हो । निबंध का मध्यभाग महत्त्वपूर्ण होता है इसलिए उसमें नीरसता न हो । • निबंध का समापन विषय से संबंधित, सुसंगत, उचित, सार्थक विचार तक ले जाने वाला हो ।

आत्मकथनात्मक निबंध लिखते समय आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण बातें :

• आत्मकथन अर्थात एक तरह का परकाया प्रवेश है । • किसी वस्तु, प्राणी, पक्षी, व्यक्ति की जगह पर स्वयं को स्थापित/आरोपित करना होता है । • आत्मकथनात्मक लेखन की भाषा प्रथम पुरुष, एकवचन में हो । जैसे - मैं .... बोल रहा/रही हूँ । • प्रारंभ में विषय से संबंधित उचित प्रस्तावना, सुवचन, घटना, प्रसंग संक्षेप में लिख सकते हैं । सीधे 'मैं... हूँ' से भी प्रारंभ किया जा सकता है ।

प्रस्तुत पद में उद्‌धव जी के ब्रज में पहुँचने के समय का वर्णन किया गया है ।

श्रीकृष्ण के द्‌वारा भेजे गए उद्‌धव जी के ब्रज में पहुँचने का समाचार जैसे ही ब्रजवासियों को मालूम हुआ, रत्नाकर जी कहते हैं कि उसी समय गोपियों के झुंड नंद जी के दरवाजे पर एकत्रित होने लगे । उद्‌धव जी को श्रीकृष्ण का संदेशवाहक जानकर गोपियाँ आतुर हो जाती हैं । गोपियाँ उद्‌धव जी को चारों ओर घेरकर खड़ी हैं और उचक-उचककर श्रीकृष्ण के पत्र को देख वे उत्कंठित हो रही हैं । उनका हृदय उमंग से भर गया है । वे सभी जिज्ञासापूर्वक उनसे पूछती हैं कि कृष्ण ने हमको क्या लिखा है ? हमको क्या लिखा है ? इस भाँति सभी गोपियाँ श्रीकृष्ण द्‌वारा भेजे गए संदेश जानने को लिए उत्सुक हैं ।

प्रस्तुत पद में उद्‌धव जी द्‌वारा दिए गए प्रत्युत्तर में गोपियों के कथन का वर्णन किया गया है ।

गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्‌धव ! तुम ब्रजबालाओं की मति को फेरने की प्रतिज्ञा करके श्रीकृष्ण का दूत बनकर आए हो या योग का ज्ञान देने ब्रह्मदूत बनकर आए हो ।

रत्नाकर जी कहते हैं कि गोपियाँ उद्‌धव जी से कहती हैं कि तुम प्रीति की रीति नहीं जानते इसलिए अनाड़ियों की नीति अपनाकर हम सबके साथ अन्याय कर रहे हो । गोपियाँ कहती हैं कि तुम नारी हृदय के अनुकूल प्रेम की बातें न करके योग की बातें बताकर अन्याय कर रहे हो । वे कहती हैं कि माना कि कृष्ण और ब्रह्म एक ही हैं, किंतु सच यह है कि हमें आपकी यह भावना रुचिकर नहीं लगती । हम सब अपनी हृदय भावनाओं का हनन कैसे कर सकती हैं? सागर और जल की बूँद में कोई भेद न होता किंतु समुद्र में मिलकर बूँद का अस्तित्व तो समाप्त हो जाता है । यदि हम अपनी सत्ता को ब्रह्म में विलीन कर दें तो जल की बूँद की भाँति हमारा अस्तित्व ही नष्ट हो जाएगा । इसलिए हे उद्‌धव ! आपके ज्ञान और योग द्‌वारा मुक्ति प्राप्त करने की अपेक्षा कृष्ण का सानिध्य ही हम श्रेयस्कर समझती हैं ।

प्रस्तुत पद में उद्‌धव जी के ब्रज से विदा होने का वर्णन किया गया है ।

उद्‌धव जी को विदा करने के लिए गोपियाँ दुख से भरी हुई और अपनी साँसों को सँभाल पाने में असमर्थ इधर-उधर से दौड़ पड़ीं । उनका हृदय वेदना से भरा हुआ है । रत्नाकर जी कहते हैं कि कृष्ण के लिए कोई मोरपंख लिए खड़ी हुई थीं, कोई उमड़ते प्रेम आँसुओं के साथ अँजुरी में घुँघचियाँ (गुंज) लिए खड़ी थीं, कोई भाव विह्वल होकर मीठा और रुचिकर सजावटयुक्त दही लिए हुई थी तथा कोई अपनी धड़कती पसलियों को दबाए, सुंदर छाछ (मट्‌ठा) लाई थीं । नंद जी ने अपने लाड़ले पुत्र के लिए पीतांबर, माँ यशोदा ने ताजा मक्खन तथा राधा ने उपहार में कृष्ण के लिए सुरीली बाँसुरी दी हैं ।

— ० —

भावार्थः पाठ्यपुस्तक पृष्ठ क्र. पृ. ७५ पाठ ७, दूसरी इकाई अनमोल वचन, दादू दयाल

कवि दादू दयाल कहते हैं कि गुरु अपनी सीख पहले मन ही मन कहते हैं फिर आँखों के संकेतों से उसे समझाने का प्रयास करते हैं । शिष्य फिर भी न समझ पाएँ तो फिर वे अपनी सीख वाणी द्‌वारा समझाते हैं ।

दादू दयाल जी कहते हैं कि दान में ही भलाई निहित है, अतः सभी के द्‌वारा दान दिया जाना चाहिए । जो हाथ उठाकर दान नहीं देते उनके घर कुछ बच ही नहीं पाता ।

दादू दयाल कहते हैं कि न घर में रहकर कुछ पाया न वन में जाकर कुछ पाया । ना ही मैंने क्लेष करके कुछ पाया । मैंने तो उपदेशों पर चलकर मन ही मन अपने सतगुरु को पा लिया है ।

अपना शरीर ही अपना प्रार्थना स्थल है । कहीं बाहर जाने की आवश्यकता नहीं । शरीर के भीतर ही अंतर आत्मा से बंदगी और सेवा करें तो सतगुरु भीतर ही दिखाई दे जाता है ।

पक जाने पर फल बेल को तजकर स्वामी के मुँह में समा जाता है । उसी तरह मानव जीवन है जिसे एक बार स्वामी अपना लेता है वह पुनः लौटकर नहीं आता ।

संसार में दो ही रत्न अनमोल हैं । एक तो स्वामी स्वयं और दूजे संत महात्मा । इनका कोई मूल्य नहीं आँका जा सकता ।

मेरा शत्रु और कोई नहीं मेरा अहंकार ही है जिसे अन्य कोई नहीं मार सकता । मेरे अहंकार को यदि कोई मार सकता है तो वो मैं ही हूँ । परंतु यह मरकर पुनः जीवित हो जाता है ।

जब तक आपमें अपनत्व की भावना है तब तक लोग आपके निकट हैं । जब अपनत्व शेष नहीं बचता तब और लोग भी आपके निकट नहीं बचते वे आपसे दूर चले जाते हैं ।

—— ० ——

महाराष्ट्र राज्य पाठ्यपुस्तक निर्मिती व अभ्यासक्रम संशोधन मंडळ, पुणे.

बालभारती इयत्ता आठवी (हिंदी)

₹ 49.00